

₹15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# क्रान्ति

नवम्बर 2012

- हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : तपश्चर्या का जीवन
  –पं० सुन्दर लाल
- फ़ातिमा को भी सज़ा दी जाती
  –ख़ुर्रम मुराद
- इस्लाम की मौलिक धारणाएं
  –हमूदा अब्दलती
- 'गो-प्रेम' : कुछ विचारणीय बातें
  –डॉ० मुहम्मद अहमद
- शैक्षिक स्तर में सुधार की आवश्यकता
  –विद्या प्रकाश

# we not only make engineers... we make personalities

## Special Features

- Located in the Heart of the City
- Highly Qualified & Experienced Staff
- LAN Connected Computer Labs.
- 10 Mbps Internet Leased Line (1:1 Compression Ratio)
- Well Equipped Labs with Latest Equipments
- Computer Labs with Internet Facility
- Special Industrial Training in Vacation
- Frequently Organizes Industrial Tours
- Excellent University Results
- Excellent Placement Record

BRANCHES OFFERED & INTAKE

Electrical Engg./Electronics & Power Engg.) : 60
Electronics & Telecommunications Engg. : 120
Mechanical Engg. : 120
Computer Science & Engg. : 60
Civil Engg. : 60

For Details / Admissions Call
0712-6604529, 07304456073
09822937086

Managed by Anjuman Hami-E-Islam

# ANJUMAN COLLEGE OF ENGINEERING & TECHNOLOGY

Mangalwari Bazar Road, Sadar Nagpur - 01. E-mail: eng_acet@rediffmail.com Website www.anjumanengg.edu.in

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

# कान्ति

वर्ष 22 अंक 5 नवम्बर 2012

**ऐ नबी, हमने तो तुमको दुनिया वालों के लिए सर्वथा दयालुता और रहमत बनाकर भेजा है ।**

**–क़ुरआन**

**संपादक**

**डॉ० मुहम्मद अहमद**

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फ़ोन–09818799223 (011) 26949430, 26949539

**सहयोग राशि**

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-, दो वर्ष 300/-, पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

# पतनशील सबके चरित्र हैं

देश में अपने हर स्तर पर
लागू उलझे पैमाने हैं

योग्य छूट जाता है पीछे
'अनुशंसित' कुर्सी पर बैठा
जोड़-तोड़, तिकड़मबाज़ी से
नाकारा 'पूजित' बन ऐंठा

पढ़े-लिखे व शील वंत के
सारे गुण बेमाने हैं

भ्रष्ट आचरण, पक्षपात ने
हर कोने डेरा डाला है
छोटे-बड़े सभी की इच्छा
कैसे मिले जी 'धन काला' है

पतनशील सबके चरित्र हैं
झूठ के ताने-बाने हैं

जाति, वर्ग, क्षेत्र भाषा के
नाम विभाजित लोग यहां
देशहितों के अभिलाषी अब
लोग हमारे बीच कहां

अमर्यादित सभी, सभी को
ग़लत तरीक़े अपनाने हैं

'लोकतंत्र' से 'लोक' लुप्त है
'तंत्र' की भारी भीड़ लगी
निष्ठा, सेवा व समानता
दूर खड़ी है ठगी-ठगी

जन आशा के 'प्रखर' सूर्य पर
लगे मेघ अब छाने हैं
देश में अपने हर स्तर पर
लागू उलझे पैमाने हैं ।

**अभिराम सत्यज्ञ जयशील**

हथुआ डाकघर-841436



# कहां क्या है ?


| | | |
|---|---|---|
| पतनशील सबके चरित्र हैं | –अभिराम सत्यज्ञ जयशील | 3 |
| कुरआन ज्योति | | 5 |
| हदीस मंजरी | | 6 |
| धार्मिकता से ही मिलेगी 'नयी ज़िन्दगी' (संपादकीय) | | 7 |
| मुक्त जीवन-मोक्ष जीवन (आपके पत्र) | | 9 |
| इस्लाम और सभ्यता | –मुहम्मद कुत्ब | 15 |
| इस्लाम की मौलिक धारणाएं | –हमूदा अब्दलती | 19 |
| नुमाइश (कविता) | –ओमप्रकाश बजाज | 20 |
| इस्लाम में उदारता की शिक्षा | –मतीन तारिक़ बाग़पती | 21 |
| पुलिसिया यातना : जांच का प्रश्न | –बासिल फर्नान्डो | 23 |
| बाल अपराधी (कविता) | –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा | 25 |
| हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) तपश्चर्या का जीवन | –पं॰ सुन्दर लाल | 26 |
| मां तुझे सलाम (कविता) | –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा | 31 |
| फ़ातिमा को भी सज़ा दी जाती | –खुर्रम मुराद | 33 |
| मानवता के संरक्षक मुहम्मद (सल्ल॰) | –विष्णु प्रभाकर | 34 |
| इस्लामी साहित्य संगम की गोष्ठी | –संपादन प्रभाग | 35 |
| एक-एक पंखुड़ी समेट कर हर अंक को... | –अमित कुमार लाडी | 37 |
| बाल अपराधी, मां तुझे सलाम (कविताएं) | –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा | 37 |
| गैंडे का सींग (कहानी) | –इक़बाल अंसारी | 39 |
| शैक्षिक स्तर में सुधार की आवश्यकता | –विद्या प्रकाश | 43 |
| अंतरिक्ष युद्ध (कविता) | –रामेश्वरी 'नादान' | 44 |
| कैसे लिपिबद्ध हुए शब्द ? | –अल्पना हंस | 45 |
| बुढ़ापा : एक कड़वा सच | –डॉ॰ प्रीत अरोड़ा | 47 |
| गो-प्रेम : कुछ विचारणीय बातें | –डॉ॰ मुहम्मद अहमद | 49 |

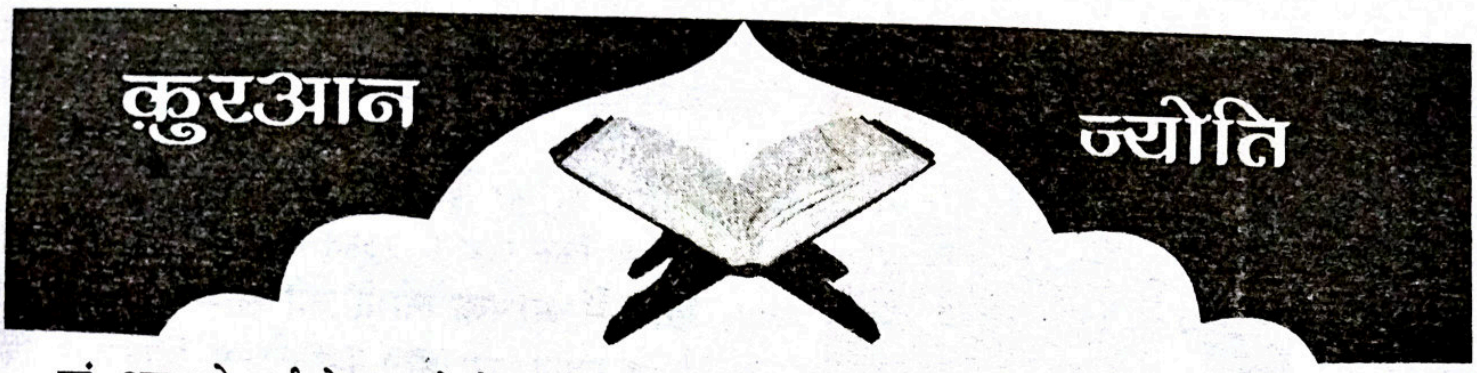


**हां, अगर वे धर्म के मामले में तुमसे मदद मांगें तो उनकी मदद करना तुम पर अनिवार्य है, लेकिन किसी ऐसी क़ौम के विरुद्ध नहीं जिससे तुम्हारा समझौता हो ।[51] जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है । (73) जो लोग सत्य के इन्कारी हैं, वे एक-दूसरे का समर्थन करते हैं । अगर तुम यह न करोगे तो धरती में फ़ितना (उपद्रव) और बड़ा बिगाड़ पैदा होगा ।[51अ]**

**(74,75) जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह की राह में घर-बार छोड़े और संघर्ष किया और जिन्होंने पनाह दी और सहायता की, वही सच्चे ईमान वाले हैं । उनके लिए ग़लतियों की माफ़ी है और उत्तम रोज़ी है और जो लोग बाद में ईमान लाए और घर-बार छोड़कर आ गये और तुम्हारे साथ मिलकर संघर्ष एवं प्रयास करने लगे, वे भी तुम ही में शामिल हैं, मगर अल्लाह की किताब में ख़ून के रिश्तेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं ।[52] निश्चय ही अल्लाह हर चीज़ को जानता है । –क़ुरआन, 8 : 72-75**

51. ऊपर की आयत में दारुल इस्लाम से बाहर रहने वाले मुसलमानों को 'राजनीतिक और विलायत' के नाते से अलग कर दिया गया था । अब यह आयत इस बात को स्पष्ट करती है कि इस नाते से अलग होने के बावजूद वे 'धार्मिक भाईचारा' के नाते से अलग नहीं हैं । अगर कहीं उन पर जुल्म हो रहा हो और वे इस्लामी बिरादरी के ताल्लुक़ की बुनियाद पर दारुल इस्लाम की सरकार और उसके निवासियों से सहायता मांगे तो उनका कर्तव्य है कि अपने उन पीड़ित भाइयों की सहायता करें । लेकिन इसके बाद और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा गया कि उन धार्मिक भाइयों की सहायता का कर्तव्य अंधाधुंध नहीं निभाया जाएगा, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वों और नैतिक मर्यादाओं को ध्यान में रखकर ही निभाया जा सकेगा । अगर जुल्म करने वाली क़ौम से दारुल इस्लाम के संधिपूर्ण संबंध हों तो इस स्थिति में मज़लूम मुसलमानों की कोई ऐसी सहायता नहीं की जा सकेगी जो उन संबंधों के नैतिक दायित्वों के विरुद्ध पड़ती हो ।

'ऐसी क़ौम के विरुद्ध नहीं जिससे तुम्हारा समझौता हो' शब्दों में स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि दारुल इस्लाम की सरकार ने जो मैत्रीपूर्ण संबंध किसी ग़ैर-मुस्लिम राज्य से स्थापित किये हों वे सिर्फ़ दो राज्यों के संबंध ही नहीं हैं, बल्कि दो क़ौमों के संबंध भी हैं और उनके नैतिक दायित्वों में मुसलमान सरकार के साथ मुसलमान क़ौम और उसके लोग भी सम्मिलित हैं ।

51अ. अर्थात अगर दारुल इस्लाम के मुसलमान एक-दूसरे के वली न बनें और अगर घर-बार छोड़कर इस्लाम में न आने वाले और दारुल कुफ़्र में निवास करने वाले मुसलमानों को दारुल इस्लाम के मुसलमान अपनी राजनीतिक विलायत से अलग न समझें और बाहर के पीड़ित मुसलमानों की सहायता मांगने पर उनकी सहायता न की जाए और अगर इसके साथ-साथ उस नियम की पाबंदी भी न की जाए कि जिस क़ौम से इस्लामी राज्य का समझौता हो उसके विरुद्ध मुसलमानों की सहायता नहीं की जाएगी और अगर मुसलमान काफ़िरों से विलायत का संबंध समाप्त न करें तो धरती में उपद्रव और बड़ा बिगाड़ पैदा होगा ।

52. तात्पर्य यह है कि इस्लामी बिरादरी के आधार पर विरासत न बंटेगी और न वे हक़ जो वंश और ससुराली रिश्ते के आधार पर क़ायम होते हैं, धार्मिक भाइयों को एक-दूसरे के मामले में प्राप्त होंगे । इन मामलों में इस्लामी संबंध के बजाय नातेदारी का संबंध ही क़ानूनी अधिकारों की बुनियाद रहेगा । यह बात इसलिए कही गयी है कि हिजरत के बाद नबी (सल्ल०) ने मुहाजिरों और अंसार के बीच जो भाईचारा कराया था उसकी वजह से कुछ लोग ऐसा सोच रहे थे कि ये धार्मिक भाई एक-दूसरे के वारिस भी होंगे । नबी (सल्ल०) (की व्याख्या के अनुसार) सिर्फ़ मुसलमान नातेदार ही एक-दूसरे के वारिस होंगे । मुसलमान किसी ग़ैर-मुस्लिम का या ग़ैर-मुस्लिम किसी मुस्लिम का वारिस न होगा ।

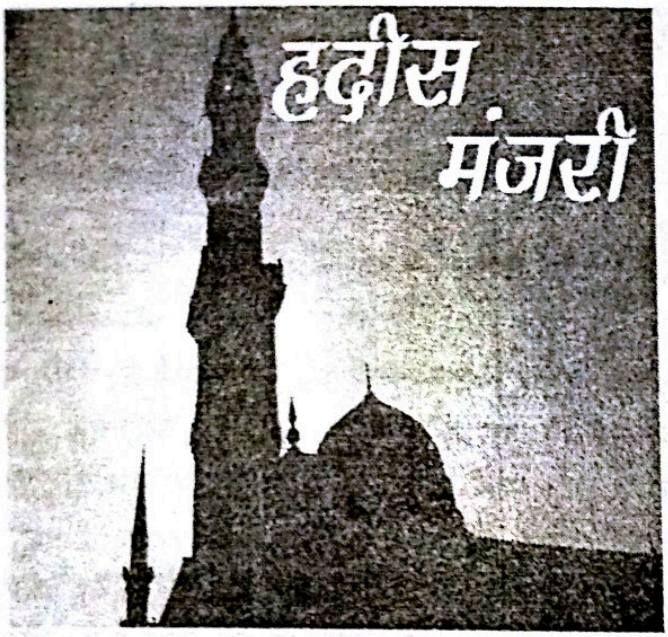


## तीन उंगलियों से खाना, उंगलियों और बर्तन को चाटना और गिरे हुए लुक़्मे को उठा लेना आदि

● हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब तुममें से कोई व्यक्ति भोजन करे, तो वह अपनी उंगलियों को न पोछे जब तक कि उन्हें चाट न ले या वे चाट न ली जाएं ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत काअब बिन मालिक (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को देखा । आप तीन उंगलियों से खाना खाते और जब खा चुकते, तो उन्हें चाट लेते । –मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जब तुममें से किसी व्यक्ति का लुक़्मा (कौर) गिर जाए तो उसको चाहिए कि वह उसको उठा ले और जो नागवार चीज़ उस पर लग गयी हो उसे दूर करके उसे खा ले । शैतान के लिए उसे छोड़े नहीं और जब तक उंगलियों को चाट न ले अपने हाथ को रूमाल से न पोछे क्योंकि वह नहीं जानता कि खाने के किस अंश में बरकत है ।" –मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "शैतान तुममें से हर व्यक्ति के पास हर मामले के अवसर पर उपस्थित होता है यहां तक कि वह उसके पास उसके खाने के मौक़े पर भी हाज़िर होता है । अत: जब तुममें से किसी का लुक़्मा गिर जाए तो चाहिए कि उसे उठा ले और जो नागवार चीज़ उस पर लगी हो उसे दूर कर दे और उसे खा ले और उसे शैतान के लिए न छोड़े । जब वह खाना खा चुके तो अपनी उंगलियों को चाट ले क्योंकि वह नहीं जानता कि उसके खाने के किस अंश में बरकत है ।" –मुस्लिम

## खाने में अधिक लोगों को सम्मिलित करना

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दो आदमियों का भोजन तीन व्यक्तियों के लिए पर्याप्त है और तीन आदमियों का भोजन चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "एक आदमी का भोजन दो के लिए पर्याप्त है और दो आदमियों का भोजन चार के लिए पर्याप्त है और चार आदमियों का भोजन आठ के लिए पर्याप्त है ।"

–मुस्लिम

## पानी पीने के आचार

**बर्तन से मुंह हटाकर तीन बार सांस लेना, बर्तन में सांस लेना ठीक नहीं, प्रथम व्यक्ति के पीने के बाद बर्तन दायीं ओर वालों को देना**

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) पानी पीने के बीच तीन बार सांस लेते थे । –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू क़तादह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने बर्तन में सांस लेने से रोका है ।

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास दूध लाया गया जिसमें कुछ पानी मिलाया गया था । आपकी दाहिनी ओर एक ग्रामीण बैठा हुआ था और बायीं ओर हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) थे। आपने कुछ दूध पिया और फिर उस ग्रामीण को दे दिया और कहा : "दायां तो दायां है ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

('रियाजुस्सालिहीन' से)

**इस्लाम-परिचय**
**हिन्दी वेबसाइटें**
www.quranhindi.com
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

संपादकीय

# धार्मिकता से ही मिलेगी 'नयी ज़िन्दगी'

समाचारपत्र-पत्रिकाओं एवं मीडिया के अन्य साधनों-उपक्रमों में आये दिन आत्महत्या की ख़बरें प्रकाशित-प्रसारित होती रहती हैं । कभी छात्र-छात्राओं की आत्महत्या की ख़बरें होती हैं, तो कभी किसान और परेशानहाल सर्वहारा वर्ग के लोगों की । यदा-कदा अन्यों के भी इस प्रकार परलोक सिधारने की घटनाएं सामने आती हैं । कहने का तात्पर्य यह कि सभी जीवन से हारे और उकताये हुए हैं । और इस असंतोष की मात्रा इतनी घनीभूत है कि आत्महत्या जैसा कायराना क़दम उठकर अपना अमूल्य जीवन तक खो दे रहे है । फिर भी आश्चर्य और चिंता की बात यह है कि यह हमारे समाज में राजनीतिक क्षितिज पर चर्चा का विषय कभी नहीं बनता । फिर इसके कारणों की पड़ताल की बात बहुत दूर हो जाती है । कोई चिंतन नहीं हो पाता । फिर आख़िर कैसे होगा इस समस्या का समाधान ? हमारा मानना है कि धार्मिक मूल्यों-शिक्षाओं से दूरी आत्महत्या का सबसे बड़ा कारण है । दुर्भाग्य से आज समाज में ऐसे तथाकथित जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठा प्राप्त है जिन्हें प्राप्त करने में असफलता का डर ही विद्यार्थियों को जीवन से निराश और कुंठित कर देता है । उनके माता-पिता भले ही उनसे बहुत अपेक्षा न रखते हों, लेकिन समाज की नज़रों में ऊंचा बनने, ख़ासतौर से पूंजीवादी मूल्यों के अन्तर्गत उच्च जीवन स्तर प्राप्त करने की ललक या एक ऐसी सफलता प्राप्त करने की ललक जिसके लिए कठोर और अनवरत परिश्रम की आवश्यकता होती है न कर पाने की विफलता युवाओं को आत्महत्या की ओर ले जाती है । ईश्वर के प्रति समर्पण एवं आलम्बन न होने से उनकी वास्तविक जीवन-शक्ति और आत्मबल क्षीण हो जाता है और वे जीवन-अंत का फ़ैसला कर लेते हैं । इसमें मां-बाप को निर्दोष नहीं माना जा सकता । वे उनका उचित ध्यान नहीं रखते, उचित प्रशिक्षण नहीं करते या कर नहीं पाते । यह भी देखा गया है कि आज के युवा अपने मां-बाप से डरते हों या न डरते हों, किन्तु हक़ीक़त यह है कि उनके मां-बाप उनसे बहुत डरते हैं । वे डरते हैं–उनके गुस्से से, वे डरते हैं उनकी चुप्पी से, वे डरते हैं उनकी हंसी से । हां, वे अब उनकी हंसी से भी डरते हैं । पता नहीं उनके चेहरे की हंसी कितनी सच्ची है, कितनी अच्छी है । क्या पता उनके हंसते-खिलखिलाते चेहरे के पीछे कोई भयानक चेहरा छुपा हो। क्या पता उनके दिल की गहराइयों में कौन-सा राज़ नाग बनकर ज़िन्दगी को डसने के लिए तैयार बैठा हो । कितने युवा बच्चे हंसते-खेलते मौत को गले लगा रहे हैं । क्या वे किसी से कुछ कहकर आत्महत्या कर रहे हैं । उनके माता-पिता तो क्या उनके निकट-मित्र भी नहीं जान पाते कि वे कब अपनी जीवन लीला समाप्त करेंगे ।

यही हाल किसानों और परेशानहाल सर्वहारा लोगों का है । कहा जाता है, अपितु यह सत्य है कि अक्सर वे बैंकों से ऋण लेते हैं और उसकी अदायगी नहीं कर पाते । उनके लिए सरकार की भी 'कल्याणकारी राज्य' की परिकल्पना क्रियान्वित नहीं हो पाती । सरकार का अनुदारवादी चेहरा ही उन्हें देखना पड़ता है । वे इस विषम परिस्थिति का मुक़ाबला नहीं कर पाते और कायरतापूर्ण क़दम उठा लेते हैं । निस्संदेह आज विकट स्थिति है । इतनी विकट कि कहा जाता है कि आज के दौर में शायद दुनिया में कोई ऐसा आदमी न होगा जिसने अपने जीवन में कभी आत्महत्या करने के बारे में न सोचा हो । ऐसा भी होता है कि अनायास या सप्रयास

वह बुरा वक़्त गुज़र जाता है और ज़िन्दगी फिर अपनी रफ़्तार से चल पड़ती है । सच यही है कि यदि वह समय गुज़र जाए जिस समय व्यक्ति आत्मघात की ओर प्रवृत्त होता है तो फिर वह आत्महत्या नहीं करेगा । कुछ लोग कहते हैं कि आत्महती लम्बे समय से तनाव में था । कितने लम्बे समय से तनाव में था ? महीने ? दो महीने ? छह महीने ? मगर यह मुद्दत तो गुज़ारी जा सकती है । क्या बरसात के बाद सर्दी और सर्दी के बाद गर्मी की ऋतु नहीं आती ? क्या पतझड़ के बाद वसंत नहीं आता ? फिर ज़िन्दगी में हंसी-खुशी के दिन क्यों नहीं आ सकते हैं ? ज़िन्दगी हज़ार नेमत है । वास्तव में ज़िन्दगी को जीना चाहिए, उसे जीतना इन शब्दों में चाहिए कि उसे स्वाभाविक ज़िन्दगी मिले । ज़िन्दगी को निराशा से परे रखना चाहिए । ठहरा हुआ तो पानी भी सड़ जाता है । अतः ज़िन्दगी में ठहराव अर्थात स्वांत नहीं आना चाहिए । ज़िन्दगी तो है ही चलने का नाम । ये जो ग़मों की स्याह रात है कितनी भी लम्बी हो कट ही जाएगी । फिर सुबह होगी, सूरज निकलेगा, फूल खिलेंगे, भौंरे गुनगुनाएंगे, पंछी चहचहाएंगे । फिर ज़िन्दगी में ही अंधकार कैसे क़ायम रह सकता है ? हमेशा सुबह की आशा रखनी चाहिए । लेकिन फिर सवाल यह आएगा कि यह संभव कैसे होगा, तो हम जैसा कि ऊपर उल्लेख कर चुके हैं कि इसके लिए धार्मिकता को अपनाना ज़रूरी है, वह भी सच्ची धार्मिकता । जब कार्य ईश्वर के इच्छानुसार किये जाएंगे और उसे ही कार्यसाधक भी माना जाएगा, तो ज़िन्दगी में निराशा, चिंता, कुंठा और हतोत्साह का आना असंभव है । दिल में सरलता और निर्मलता आ जाएगी । चिंतन सकारात्मक होगा । वह हमेशा यह सोचेगा कि जो ईश्वर-इच्छा है, उसे होने दो । (Let the will of God be done.) ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है । उसे संतोष, संबल मिल जाएगा, जो उसे 'नवजीवन' प्रदान करेगा ।





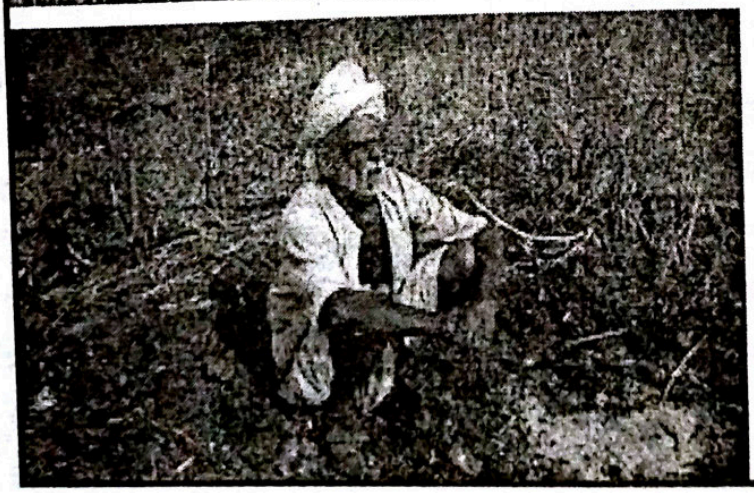



# मुक्त जीवन-मोक्ष जीवन

मानव जीवन का उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति है न कि नरक वास । पवित्र कुरआन सउद्देश्य नाज़िल किया गया है । एक ओर दुनिया की ज़िन्दगी रखी गयी है तो दूसरी ओर बहिश्त । दुनिया की ज़िन्दगी छलावा है, भूल-भुलैया है । ऐसी भूल-भुलैया में भटके हुए मुसाफ़िर को ठिकाने का अता-पता नहीं रहता है । भटकते रहना और विदा होकर बुरे अंजाम तक पहुंचना उसकी नियति होती है । चुनाव सही होने पर सिद्धियों की प्राप्ति होती है । ज़िन्दगी भक्ति, करुणा और त्याग से सुसज्जित होकर इष्ट की प्राप्ति करवाती है । वहीं अगर चुनाव ग़लत है तो भटकना और अज़ाब सहना नियति बन जाता है । सन्मार्ग और कुमार्ग का चुनाव इन्सान पर छोड़ा गया है । अंजाम या फल दोनों के बतलाये गये हैं । विवेकशील इन्सान ग़लत भ्रमपूर्ण चुनाव से परे रहते हैं । इसी को कुरआन बुद्धिमति मानता है । खुदा से मायावी संसार है, संसार से खुदा नहीं है । अतः चुनाव दुनिया की ज़िन्दगी का नहीं खुदा रब्बुल आलमीन का किया जाना आवश्यकता है ।

पवित्र कुरआन में संदेश है कि खुदा की चाहत वाले अमलों पर क़दम बढ़ाता हुआ खुदा का अपना बनता है और दुनिया की ज़िन्दगी चाहने वाला दुनिया का ही होकर विदा हो जाता है । इस विदाई पश्चात कितनी यातनाएं और वेदनाएं झेलनी होती हैं इसका हवाला पवित्र कुरआन में है । नासमझ, ग़लत चुनाव करता है, विवेकी हमेशा सही चुनाव की ओर आकर्षित होता है । विवेक ही प्रज्ञा है । नासमझी अविवेक है । पवित्र कुरआन में बार-बार इस ओर संकेत किये गये हैं फिर भी हमारा विवेक जागने में असमर्थ बना रहता है । कुरआन बन्दों को संदेश देता है कि जो प्रकृति, माया अर्थात दुनिया की ज़िन्दगी के फांस से छूट पाता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है । मोक्ष से आशय है हमेशा रहने वाली खुशनुमा ज़िन्दगी ।

संयम अर्थात परहेज़गारी पवित्र कुरआन में मोक्षप्रद मानी गयी है । आज मनुष्य का उद्देश्य भोग प्रधान है, जिसका परिणाम अत्यंत दुखद बताया गया है । संयम या परहेज़गारी योग है, खुदा से जुड़ना है । खुदा से जुड़ा इन्सान ही खुदा का प्रिय पात्र बन सकता है, दुनिया की ज़िन्दगी जीने वाला नहीं ।

दुनिया की ज़िन्दगी की फांस चित्त में समायी रहती है । इससे तात्पर्य इतना भर है कि कर्मों के समस्त संस्कार चित्त में सच्चित पड़े रहते हैं यहीं से बाहर आकर उपासना, इबादत काल में विक्षेप उत्पन्न करते हैं । इन कर्म संस्कारों से चित्त से वृतिया उपजती हैं और वृतिया हमें दुनिया की ज़िन्दगी की ओर ढकेल कर उसमें डुबो देती हैं । इनसें घूटना ही जीवन में मुक्त होना है । मुक्तता के आगमन से लिप्तता का अभाव हो जाता है और लिप्तता न रहने पर बंधनहीनता उपजती है । बंधनों का अभाव ही मुक्त जीवन होता है । यानी समस्त विषयों से रहित अंतस ही पाकीज़ा कहलाता है । पाकीज़ा अंतस दुनिया की ज़िन्दगी का अंग नहीं बनता है । फलस्वरूप व्यक्ति दुनिया की ज़िन्दगी से कट जाता है । अज़ाब से महफ़ूज़ रहने की इच्छा करने वाला व्यक्ति या बन्दा इस प्रकार अपने आपको महफ़ूज़ रख सकता है । नेक कार्य करने का हौसला इसी प्रकार प्राप्त किया जा सकता है । सूरा-2 की आयत 85 में बयान आया है कि, "ज़िन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीदी उनसे न अज़ाब ही हल्का किया जाएगा और न उन्हें किसी प्रकार की मदद ही हासिल हो सकेगी । दुनिया की ज़िन्दगी की चाहत का परिणाम अज़ाब है । इससे छूटने का परिणाम खुदा रब्बुल आलमीन की समीपता है, जन्नत और बहिश्त है ।

दुनिया की ज़िन्दगी की ख़्वाहिश करना पवित्र किताब और उसके आदेशों से कुफ़्र करना है । कुफ़्र का परिणाम ज़लालत और अज़ाब है । खुदा का इक़रार नेक लोगों के लिए है ज़ालिमों के लिए नहीं । ज़ालिम वे हैं जो परवरदीगार के संदेशों की अवहेलना करते हैं, आमाल से मुंह फेरे रहते हैं । ऐसे लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी ही मनभावन लगती है । मुक्ति और मोक्ष उनकी निगाह में बलवास होती है । खुदा ने जो दीन पसन्द फ़रमाया है उसके अनुसार मरना तो मुसलमान ही होकर मरना चाहिए । मुसलमान वो है जो खुदा

और उसके पैग़म्बरों तथा क़ुरआन के निर्देशों की पैरवी करता है तथा नेक अमल पर चलते हुए दुनिया की ज़िन्दगी से दूरी बनाये रखता है । इसी को पैग़म्बर ने ख़ुदा का रंग इख़्तियार करना स्वीकार किया है । जितने भी रंग इस जगत में हैं उन सभी से बेहतर रंग ख़ुदा का रंग है । ख़ुदा के रंग में रंगने वाला ही ख़ुदा का प्रिय पात्र हो सकता है । बंधनों को काट कर ख़ुदा में लीन रह सकता है । प्रकृति की माया का रंग उसको हानि पहुंचाने में विफल बना रह जाता है । माया की विफलता जीवन की मूक्ति है, मुक्त जीवनचर्या का परिणाम मोक्ष है ।

क़ुरआन मजीद परा वाणी से सुसज्जित समग्र ग्रंथ है । क़ुरआन की पवित्र आयतों के ज़रिये ख़ुदा रब्बुल आलमीन ने अपने समस्त नेक बन्दों को बहिश्त में आने का.आह्वान किया है । जो इस आह्वान से मुख फेरे हुए है उसे उसके हाल पर छोड़ दिया गया है । परिणाम भी बतलाया गया है । मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र रखा गया है । परंतु उसे आगाह भी किया गया है कि स्वतंत्रता का दुरुपयोग क्या परिणाम प्राप्त करा सकता है । मुक्त जीवन क़ुरआन की मांग है । मुक्ता से यह आशय कदापि नहीं किया जाना चाहिए कि कर्मों से विमुखता रखी जाए । विमुखता के लिए दोष युक्त कर्म रखे गये हैं । मानव जीवन की मांग क़ुरआन मजीद के आदेशों के अनुरूप रहने से मुक्त जीवन मोक्ष की प्राप्ति करा देता है ।

**स्वामी आनन्द शिवानन्द**

कानपुर (उ०प्र०)

## अच्छे व्यक्ति का निर्माण

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का सितम्बर 2012 का अंक प्राप्त हुआ । आपकी पत्रिका का अध्ययन कर मैं बहुत प्रभावित हो रहा हूं । क्योंकि इस पत्रिका में विशेष रूप से पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का घोर विरोध किया गया है । चरित्र व व्यक्तित्व का समुचित ढंग से निर्माण करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है ।

सितम्बर 2012 के अंक में संपादकीय शीर्षक 'अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण' का मैंने सरसरी निगाह से अध्ययन किया तथा मानव जीवन के चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण के संपादकीय विचारों का मैं पूर्णतया समर्थन करता हूं ।

यदि आपका व्यक्तित्व उच्च कोटि का है, तो आपके शरीर में आकर्षण अपने आप उत्पन्न होगा । आपके व्यक्तित्व का विकास तभी होगा जबकि आपकी वाणी में माधुर्य व संयम का होना निस्वार्थ भावना से कार्य करना शरीर की समस्त इन्द्रियों का समुचित सदुपयोग करना आत्मविश्वास, आत्म-निर्भरता, आत्म-बल, आत्म-नियंत्रण आदि का होना व्यवहार कुशल होना संयम का जीवन व्यतीत करना, कामनाओं, इच्छाओं व वासनाओं पर नियंत्रण करना किसी के प्रति ईर्ष्या व घृणा का भाव नहीं रखना आदि । काम क्रोध माया, मोह का लोभ की प्रवृत्ति आये दिन बढ़ती जा रही है । इन सबके पीछे मानव की अहंकार की भावना है । इन बुराइयों का प्रमुख कारण मानव का रहन-सहन, आचार-विचार, रीति-रिवाज, खान-पान आदि है । इन कलुषित कारणों से दूर होने पर मानव अपने व्यक्तित्व व चरित्र का निर्माण सुचारू रूप से कर सकता है ।

**रामस्वरूप झंवर**

शास्त्री नगर, भीलवाड़ा (राज०)

## नफ़रत के प्रचारकों को अमेरिकी संरक्षण क्यों ?

अमेरिका में रह रहे इसराईली यहूदी तथा ईसाई द्वारा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का चरित्र हनन करने वाली झूठी, भ्रामक, घृणा फैलाने वाली फ़िल्म दुनिया भर में हिंसा, नफ़रत और लूटमार को भड़का रही है । अफ़सोस की बात है कि ऐसे घृणित कार्य को प्रेस या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर अमेरिकी सरकार की ओर से खुली छूट दी जा रही है । अपने विश्वास, धर्म, देश से मुहब्बत, लगाव होना सर्वमान्य हक़ीक़त है । इन पर आघात कोई भी जनसमूह सहन नहीं करता ।

अमेरिकी सरकार 9/11 के दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई इसी नियम के तहत करते हुए इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, यमन इत्यादि में लाखों लोगों का मौत के घाट उतार चुकी है । हमारे देश में देश से जुड़े चिन्हों पर कार्टून बनाने पर देशद्रोह की धारा लगा दी गयी जिसकी सज़ा बहुत लंबी है । अब मुस्लिम समाज इस खुली बदमाशी के विरोध में कुछ भी प्रतिक्रिया करेगा तो वह आतंकवादी, अंधविश्वासी बुनियादपरस्त बताकर जेलों में भर दिया जाएगा । परंतु मुसलमानों को उक्साने वाले, समाज में घृणा के बीज बोने वाले, फ़साद फैलाने वाले को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सुरक्षित किया जाएगा ।

उपरोक्त घृणित फिल्म में कोई एकेडमिक विवेचना

नहीं करके गन्दे-गन्दे इल्ज़ाम लगाये गये हैं जिन्हें कोई सभ्य इन्सान दूसरे इन्सान पर भी नहीं लगा सकता। विश्व के 1½ अरब मुसलमानों को ईमान का हिस्सा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़ात है उन पर कीचड़ उछालने की इस शैतानी साज़िश को समझने का दुनिया के तमाम न्यायप्रिय, शांतिप्रिय, धर्मप्रिय लोगों से आग्रह है। भारत सरकार से हम आग्रह करते हैं कि वह अमेरिकी सरकार पर दबाव बनाकर उक्त फिल्म निर्माता के विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई करने का प्रयास करें।

**डॉ० एम० अजमल**
गांधी रोड, देहरादून

## साहित्यिक पत्रकारिता का महत्व

पत्रकारिता का सामाजिक व राष्ट्रीय सरोकार सर्वविदित है। इधर के कुछ वर्षों में जहां पत्रकारिता का स्वरूप बदला है वहीं साहित्यिक पत्रकारिता अपने सरोकारों के प्रति पूर्णतः सजह है। इसके बावजूद साहित्यिक पत्रकारिता आज अनेक जटिलताओं के दौर से गुज़र रही है। शासन व प्रशासन की उपेक्षा का भी शिकार होना पड़ रहा है इसे। विशेषकर इस क्षेत्र में पूर्णकालिक रूप से संबद्ध समर्पित साहित्यकारों/संपादकों के समक्ष अनेक प्रकार की समस्याएं हैं जिनका निराकरण शासन, प्रशासन व समाज को करना चाहिए।

इस उद्देश्य से यह ज्ञापन 10वें साहित्यिक पत्रकारिता दिवस के अवसर पर केन्द्र सरकार सहित समस्त राज्य सरकारों के ध्यानार्थ प्रस्तुत है–

1. केन्द्र व राज्य सरकारें साहित्यिक पत्रिकाओं को प्राथमिकता के आधार पर वर्ष में कम से कम 12 पृष्ठों के विज्ञापन जारी करें।

2. भारत के समाचार पत्र पंजीयक कार्यालय से पंजीकृत ऐसी पत्रिकाओं के पूर्णकालिक संपादकों/प्रकाशकों को, जिनका नियमित प्रकाशन कम से कम पिछले पांच वर्षों से किया जा रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर पत्र सूचना कार्यालय से पत्रकार की मान्यता दी जाए और ऐसे सभी पूर्णकालिक संपादकों को जिनकी आयु 60 वर्ष या अधिक है तथा जिनकी आय का कोई अन्य साधन नहीं है, निशुल्क चिकित्सा, बसों व रेलों में निशुल्क यात्रा सहित 5,000 रुपये की कम से कम मासिक पेंशन देने का प्रावधान किया जाए।

उक्त सुविधाएं प्रदान करना केन्द्र व राज्य सरकारों का दायित्व है, क्योंकि जब शासन समय-समय पर समाज के अन्य वर्गों के लिए अनेक प्रकार के प्रलोभन व आर्थिक सहायता देने की योजनाएं क्रियान्वित कर रहा है तो समाज के ही एक प्रमुख अंग और श्रेष्ठ समाज के निर्माण में सहायक ऐसे व्यक्तियों को तो उसे पूरे सम्मान के साथ उक्त सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए।

**डॉ० रत्नाकर पाण्डेय**
पूर्व सांसद (राज्यसभा)
संरक्षक-अ०भा० साहित्यिक पत्रिका संघ,
ग़ाज़ियाबाद (उ०प्र०)

## बेटियों के हत्यारे

'कान्ति' का जुलाई अंक मिला। बहुत-बहुत शुक्रिया। पत्रिका में सभी आलेख, कहानियां, ग़ज़ल आदि स्तरीय व संग्रहणीय बन पड़े हैं। मेरी भी रचना छपी है, पढ़कर अच्छा लगा। आपने मुझे इतना सम्मान दिया, धन्यवाद!

'अजन्मी बेटियों की पुकार 'बाबू लाल नागा' द्वारा लिखी पढ़कर बहुत क्षोभ हुआ कि बेटियों के साथ हमारा सभ्य समाज कैसे पेश आ रहा है? हम अपने देश को 'भारत माता' कहते हैं जबकि पूरी दुनिया में ऐसा कोई भी नागरिक अपने देश के लिए नहीं कहता, फिर हम अपनी ही माता, बहनों और बेटियों के साथ ऐसा सुलूक कैसे कर सकते हैं? बजाय घटने के ऐसी वारदातें बढ़ती ही जा रही हैं। लड़कियां ही नहीं रही तो वंश कैसे बढ़ेगा? जाने हम कब इन्सान बनेंगे।

**माला वर्मा**
हाजीनगर, प० बंगाल

## हिंसा और अशांति समाप्त होनी चाहिए

'शांति', भाईचारा, एकजुटता और क़ानून के प्रशासन के बिना आर्थिक और सामाजिक विकास नहीं हो सकता। अगर हिंसा और अशांति फैलेगी तो देश प्रगति के पथ पर कैसे आगे बढ़ेगा। आतंकवाद, साम्प्रदायिक दंगे, क्षेत्रीयता और भाषा के नाम पर हिंसा देश की एकता और अखंडता के लिए ख़तरा हैं।

समय की मांग है कि हम आपस में प्रेम, सद्भावना और भाईचारे को बढ़ावा दें। धर्मनिरपेक्ष देश में नफ़रत और हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। हमें अपने विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निबटाना चाहिए। हिंसा और नफ़रत से कोई विवाद नहीं सुलझता, बल्कि इससे नये विवाद जन्म लेते

हैं । आइये हम सब मिलकर आतंकवाद, नफ़रत, भेदभाव आदि बुराइयों को मिटाने का प्रयास करें ।

**हसनैन कैफ़**

भंडारा, महाराष्ट्र

## सहशिक्षा को बन्द करो

जिस कॉलेज में लड़का पढ़ता,
उसी में पढ़ती है लड़की ।
आकर्षण पैदा करने में
फैशन की है बू भड़की ।।
फ़िल्मी गाने गा-गा करके
प्रेम की पींग बढ़ाते हैं ।
जब नहीं सुनायी होती है,
तब लव लेटर भिजवाते हैं ।।
दुष्परिणामों से बचने को
सहशिक्षा को बन्द करो ।
आर्यप्रहरी जगा रहा है
भ्रष्टाचार को दूर करो ।

**देवराज आर्यमित्र**

WZ-428, हरीनगर, नयी दिल्ली

## रचनाएं पसन्द आयीं

'कान्ति' का मई 2012 अंक में प्रकाशित भानुदत्त त्रिपाठी जी की रचना का बोध मन को छू गया । डॉ॰ रामनिवास मानव के दोहे, रमेश प्रसाद का लेख आदि पसन्द आएं ।

**शुभदा पाण्डेय**

असम विश्वविद्यालय, शिलचर (असम)

## सामयिक विषयों पर सामग्री

अगस्त अंक में प्रकाशित हफ़ीज़ मेरठी की नअत बहुत अच्छी है । बहुत सामयिक विषयों पर सामग्री देते हैं आप, ''गॉड पार्टिकल'' एक ऐसा ही संकलित लेख है । कितनी सूचनाएं एक साथ !

**चन्द्रसेन विराट**

बैकुंठधाम कॉलोनी, इंदौर

## शुभकामनाएं

ईद खुशियों का पैग़ाम लाती है
समाज में विषमता मिटा कर
सबको गले लगाती है
ईद आती है परोपकार लेकर
ग़रीब की भी भूख मिटाती है
नियम-संयम धैर्य परीक्षा
का प्रशिक्षण दिलाती है
ईद तो है सद्गुणों का गुलदस्ता
तन-मन को महकाती है ।

**शशिप्रभा शर्मा**

1936/3, पन्नापुरी, हापुड़ (उ॰प्र॰)

## हर माह 70 किसानों की आत्महत्या

एक समाचार पत्र में प्रकाशित ख़बर के अनुसार सूचना के अधिकार क़ानून के तहत मिली जानकारी के अनुसार देश में हर महीने 70 से अधिक किसान आत्महत्या कर रहे हैं । यह जानकर मन को बहुत दुख हुआ । हमारे लिए अन्न उपजाने वाले इस प्रकार से आत्महत्या क्यों कर रहे हैं । इस पर सरकार को ध्यान देना होगा । यही नहीं 1.25 लाख किसान सूदख़ोरों के चंगुल में फंसे हुए हैं 2008 से 2011 के बीच 3340 किसानों ने आत्महत्या की है । क्या यह आंकड़े चौंकाने वाले नहीं हैं । सरकार व योजना आयोग को इस विषय पर गहराई से सोचना चाहिए ।

**यशपाल जैन 'आदर्श'**

494/5, राजापार्क, जयपुर (राज॰)

## अहिंसावादियों की हिंसा

विदित हो कि सन 1936 तक भारत का अंग रहे बौद्ध संप्रदाय की शत-प्रतिशत आबादी वाले देश म्यांमार में मुसलमानों का जीवन अत्यधिक चिंताजनक बन गया है । उन पर अत्याचारों का क्रम लगभग गत 60 वर्षों से जारी है । उनके मूल अधिकारों को छीनकर उन्हें राजनीति से दूर रखा गया है । चुनाव में भाग लेने नहीं दिया जाता, वे शिक्षा एवं आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ गये हैं, उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता भी नहीं है । मुसलमानों की 5 प्रतिशत आबादी वाले इस भू-भाग पर जिस प्रकार के अमानवीय अत्याचार किये जा रहे हैं वे अत्यंत घृणित एवं घोर निंदनीय है । लगभग 20 हज़ार से अधिक के इस भीषण नरसंहार में लोगों को ज़िन्दा जलाया जा रहा है । सिर धड़ से कोटे जा रहे हैं । महिलाओं और बच्चों की इस्मतें लूटी जा रही हैं । खुलेआम ऐसे घिनौने कृत्यों पर स्थानीय प्रतिष्ठानों, घरों को क्षतिग्रस्त कर उन्हें आग के हवाले किया जा रहा है । लाखों लोग जंगलों, खेतों में संघर्षमय जीवन जीने पर मजबूर है । मानवता, सहानुभूति के नाते धर्मनिरपेक्ष भारत देश को अपना पक्ष रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ में दबाव बनाते हुए हिंसात्मक कार्रवाइयों को शीघ्र अतिशीघ्र रुकवाना चाहिए ।

हिंसात्मक कार्रवाइयों में लिप्त लोगों पर अन्तर्राष्ट्रीय अदालत में मुक़दमा चलाया जाना चाहिए । इन्सानियत का दम भरने वाले पश्चिम देश तथा शांति पुरस्कार प्राप्त करने वाली आंग सांग सूकी का मौन धारण संदेहस्पद है, नियत में खोट के कारण इस पुरस्कार को वापस लिया जाना चाहिए । वहां संयुक्त राष्ट्र संघ को पहल करते हुए पीड़ितों की सहायता, शोकाकुल परिवारों को दिलासा भी दिलायी जानी चाहिए ।

**मलिक**

नागपुर

## पड़ोसी के अधिकार

'कान्ति' पत्रिका की मई व जून 2012 की मासिक प्रतियां मिलीं । इसके लिए आपको धन्यवाद ।

इस्लामी अर्थव्यवस्था वास्तव में अल्लाह की दयालुता की प्रतीक है । यह व्यवस्था ख़यानत, चोरी-डकैती, नापतौल में हेरा-फेरी, व्यभिचार, वेश्यावृति, सूद, शराब और जुए से प्राप्त आपको वर्जित घोषित करती है । व्यक्ति को न कंजूस होना चाहिए और न ही फ़िज़ूलख़र्च ।

हिन्दू धर्म में एकेश्वरवाद में पढ़ा । इसमें दी गयी जानकारी काफ़ी उम्दा है । ऐसा मालूम होता है कि यह जानकारी काफ़ी गहन अध्ययन के बाद जुटायी गयी है । वास्तव में सभी धर्मों में एकेश्वरवाद पाया जाता है ।

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'घमंड का पुतला' काफ़ी अच्छी लगी । इस्लाम में जो पड़ोसी के अधिकार दिये गये हैं, उसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती । दरअस्ल पड़ोसी हमारे पास रहते हैं, अतः मुसीबत के समय अन्य लोगों की अपेक्षा पड़ोसी ज़्यादा काम आते हैं । रिश्तेदारों को तो बाद में भनक लगती है । यह मेरा व्यक्तिगत अनुभव है । ऐसा कई बार हुआ है कि मैं बीमार पड़ा और मुझे पड़ोसियों द्वारा अस्पताल ले जाया गया । इसीलिए पड़ोसियों के अधिकार, अन्य लोगों की अपेक्षा चाहे वह रिश्तेदार ही क्यों न हो, अधिक होने चाहिएं । ऐन वक़्त पर पड़ोसी ही काम आती है । इसलिए पड़ोसी से सद्व्यवहार करना हमारा कर्तव्य है ।

**अबरार अहमद**

रंगपुर रोड, कोटा जंक्शन, राजस्थान

## भ्रष्टाचार पर रोक

आपका संपादकीय 'भ्रष्टाचार पर कैसे लगे प्रभावी रोक' 'कान्ति' मासिक जून अंक में पढ़ने को मिला । न्यायपालिका में भी दीमक लग चुकी है । मतलब ये कि आम नागरिक कहां जाए इन्सान के लिए । ज़रूरत है कठोर से कठोर सज़ा देने की, जिसमें भ्रष्टाचार को पनपने का मौक़ा ही न मिले ।

अंक में 'ऐसे बढ़ता है भ्रष्टाचार' में 'तरक़्क़ी' की कहानी के तर्ज़ पर इन्दौर में घटी घटनाभी भ्रष्टाचार पर कड़ा व्यंग्य है जिसमें दोनों पक्षों को खुश रखा गया ।

तू जिनकी आस लगाए हुए है वे तो खुद
पराये पंखो के दम पर उड़ान भरते हैं ।

पूर्व अंक अच्छा बन पड़ा है । रोचक व ज्ञानवर्धक सामग्री हेतु कान्ति को बधाई । शेष शुभ !

**सुरेन्द्र कुमार 'अंशुल'**

हरियाणा

## बधाई

1. 'कान्ति' के सितम्बर अंक से यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप 'एडीटर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया' के नये एडवाइजर निर्वाचित हुए हैं । इसके लिए आपको बधायी ।

2. 'कान्ति' का अगला अंक 'मानवता को इस्लाम की देन' पर प्रकाशित कर रहे हैं, एतदर्थ शुभकामनाएं ।

**चन्द्रप्रकाश आर्य**

करनाल

## मुबारकबाद

'दी एडीटर्स गिल्ड ऑफ़ इंडिया' के एडवाइज़र पद पर निर्वाचित होने पर दिली मुबारकबाद । आपकी निरंतर प्रगति की कामना के साथ ।

**रामसहाय वर्मा**

सेक्टर-15, नोएडा

## आभार

अगस्त 2012 का अंक, सादर मिला, आभार ! यही कृपा सदा नियमित बनाए रखें ।

**अम्बु शर्मा**

संपादक : नैणसी

## धन्यवाद

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका 'कान्ति' के मई और अगस्त 2012 अंक पढ़े । आपका प्रयास सराहनीय है ।

**लक्ष्मण गायकवाड**

मुंबई (महाराष्ट्र)

## धन्यवाद

सत्य मार्ग बताने वाली मासिक पत्रिका 'कान्ति' के प्रकाशन के लिए धन्यवाद !

**अहद 'प्रकाश'**

भोपाल

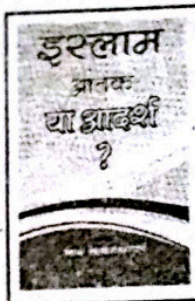


# एक अहम किताब

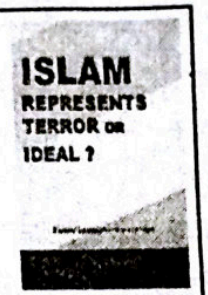


## लेखक : स्वामी लक्ष्मीशंकाराचार्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| ☆ इस्लाम : आतंक या आदर्श? | (हिन्दी) | पृष्ठ 96 | मूल्य 40₹ |
| ☆ ISLAM : Repersents Terror or Ideal? | (अंग्रेज़ी) | पृष्ठ 128 | मूल्य 100₹ |
| ☆ اسلام: دہشت گردی یا ایک مثالی دین ؟ | (उर्दू) | पृष्ठ 104 | मूल्य 40₹ |

स्वामी जी ने इस्लाम के विरुद्ध एक किताब "इस्लामी आतंक का इतिहास" लिखी जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'The History of Islamic Terrorism' के नाम से प्रकाशित हुआ था। इस्लाम के अध्ययन के बाद उन्होंने अपनी ग़लती के लिए क्षमा चाही है और इस्लाम के बारे में अपने उच्च विचार उपरोक्त किताब में लिखे, ताकि इस्लाम के बारे में लोगों की ग़लतफ़हमियाँ दूर हो सकें।

स्वामी जी की यह किताब हिन्दी, अंग्रेज़ी और उर्दू में हमारे यहाँ उपलब्ध है। (यह किताब अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी प्रकाशित हो रही है।)

## हमारी अन्य पुस्तकें

| | | | |
|---|---|---|---|
| इस्लाम एक स्वमसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था | (उर्दू, हिन्दी) | राजेन्द्र नारायाण लाल | 25₹ |
| इस्लाम मानवता पूर्ण ईश्वरीय धर्म | (हिन्दी) | लाला काशी राम चावला | 25₹ |
| इस्लाम एक सामान्य परिचय | (उर्दू, हिन्दी) | शेख़ अली तनतावी (रह०) | 80₹ |
| इतिहास के साथ यह अन्याय | (उर्दू, हिन्दी) | बी० एन० पाण्डे | 7₹ |
| पवित्र क़ुरआन में मानवता की शिक्षा | (हिन्दी) | विजय गोपाल मंगल | 10₹ |
| ग़लतफ़हमियों का निवारण | (उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी) | डॉ० ज़ाकिर नाइक | 25₹ |
| क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप | (उर्दू, हिन्दी) | नसीम अहमद ग़ाज़ी | 15₹ |

दावती काम करनेवालों और मुफ़्त तक़सीम करनेवालों के लिए विशेष छूट।

## मधुर सन्देश संगम

E-20, अबुल-फ़ज़्ल इंक्लेव, जामिया नगर, नई दिल्ली - 110025
फोन : 011-26953327, 09212356332,
e-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in

# इस्लाम और सभ्यता

■ मुहम्मद क़ुत्ब

''क्या तुम चाहते हो कि हम आज से हज़ारों वर्ष पहले ख़ेमों में रहने वाले ख़ाना बदोशों की तरह ज़िंदगी गुज़ारें ? जंगलों के रहने वाले जंगली और उजड्ड बद्दुओं के लिए इस्लाम उपयुक्त और उनकी ज़रूरतों के अनुकूल था । उसके सादापन में उनके लिए सादापन भी मौजूद था, पर क्या वर्तमान युग में जो आवाज़ से तेज़ उड़ने वाले जहाज़ों, हाइड्रोजन बमों और सिनेमा का युग है, किसी ऐसी सभ्यता की गुंजाइश हो सकती है, जिसकी बुनियाद ख़ुदा के इक़रार में ईमान पर हो और वर्तमान प्रगतिशील सभ्यता के स्तर पर पूरी न उतरती हो, क्योंकि यह गतिहीन है और समय का साथ देने की क्षमता नहीं रखती । इसलिए हम जब तक उससे छुटकारा हासिल नहीं करेंगे आज के उन्नतिशील और सभ्य राष्ट्रों की पंक्ति में शामिल नहीं हो सकेंगे ।

कुछ समय हुए जब मेरी भेंट एक अंग्रेज़ विद्वान से हुई तो इस्लाम विरोधियों की ये सारी आपत्तियां, सारे आरोप मेरे मन में घूम गये । यह सज्जन राष्ट्रसंघ के विशेषज्ञों के उस शिष्ट मंडल से संबंधित थे, जो पिछले दो वर्ष से मिस्र में ठहरा हुआ था । इस शिष्टमंडल का उद्देश्य मिस्री किसानों के जीवन स्तर को बढ़ाने में मिस्र सरकार की सहायता और मार्गदर्शन था, पर इस क्षेत्र और यहां के लोगों से गहरे 'लगाव और प्रेम' के बावजूद, क्योंकि शिष्टमंडल के सदस्यों में से कोई भी उनकी भाषा से परिचित न था, न उनमें से किसी ने इसकी ज़रूरत ही समझी थी । इसलिए मिस्र सरकार की ओर से मुझे यह सेवा सौंपी गयी कि मैं शिष्टमंडल और स्थानीय किसानों के बीच दुभाषिये के कर्तव्य निभाऊं । इस तरह मेरी भेंट उस अंग्रेज़ विद्वान से हुई ।

मैंने पहली ही भेंट में उस अंग्रेज़ को बता दिया कि मिस्र के लोग अंग्रेज़ों से घृणा करते हैं और उस समय तक घृणा करते रहेंगे जब तक वे पूरब के किसी एक देशों में भी दमन चक्र चलाने का कारण बनते रहेंगे । मैंने उसको यह भी बताया कि हम उनके मित्रों जैसे अमेरिका आदि से भी परेशान हैं, क्योंकि उन्होंने मिस्र, फ़िलिस्तीन और हमारी दूसरी समस्याओं के बारे में अन्याय पूर्ण रवैया अपना रखा है । मेरी बातें सुनकर वह चकित रह गया । क्षण भर बाद बोला, क्या तुम कम्युनिस्ट हो ?

इस पर मैंने उसे बताया मैं कम्युनिस्ट नहीं मुसलमान हूं और इस्लाम की शक्ल में मेरे पास एक ऐसी सभ्यता और एक ऐसी जीवन-व्यवस्था मौजूद है, जो कम्युनिज़्म और पूंजीवाद दोनों से कहीं श्रेष्ठ और उत्तम है, क्योंकि यह पूरे जीवन से सम्बद्ध है और इससे उसके विभिन्न अंगों में समरसता पैदा हो जाती है । तीन घंटे तक हम आपस में यही बातें करते रहे । अंत में वह कहने लगा, 'इस्लाम के बारे में आप जो कुछ कहते हैं, संभव है वह बिल्कुल सही हो, पर मेरा जहां तक संबंध है, मैं तो वर्तमान सभ्यता, के फलों से महरूमी पसंद नहीं कर सकता, मैं न हवाई जहाज़ों में सफ़र करना छोड़ सकता हूं और न रेडियो पर चित्ताकर्षक और मनभावन संगीत से मुख मोड़ सकता हूं । सुख वैभव के इन साधनों को मैं नहीं छोड़ सकता ।'

उसके उत्तर से मैं स्तब्ध रह गया और मैंने कहा, 'लेकिन आपकी इन रुचियों पर पाबंदी कौन लगाता है ?'

'तो क्या इस्लाम स्वीकार करने का अर्थ ख़ानाबदोशी और असभ्यता के युग की तरफ़ पलट जाना नहीं है ?'

### निराधार आरोप

इस्लाम को आरोपित करने वाले सामान्यत: अब तक इसी प्रकार के संदेहों में फंसे दीख पड़ते हैं, जिस प्रकार के संदेहों का उल्लेख ऊपर किया गया है । जिन लोगों ने धर्मों के इतिहास का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि इन आपत्तियों और संदेहों की कोई वास्तविकता नहीं है, क्योंकि इस्लाम पर एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता जब यह उन्नति और सभ्यता के मार्ग में रोड़ा बना हो ।

इस्लाम ने जिस क़ौम को पहली बार संबोधित किया वह अधिकांश बद्दुओं पर सम्मिलित थी । वे सभ्यता से इतनी दूर और हृदय के इतने क्रूर थे कि स्वयं क़ुरआन मजीद ने उनके बारे में कहा–'ये बद्दू अरब कुफ़्र और निफ़ाक़ में ज़्यादा सख़्त थे । (अत-तौबा : 67)

### इस्लाम का महान चमत्कार

इस्लाम का एक बहुत बड़ा चमत्कार उन जंगली और उजड्ड बदुओं को इन्सानों के एक गिरोह और क़ौम में तब्दील करना है । उसने न सिर्फ़ उनको सन्मार्ग दिखाया और पशुत्व से ऊपर उठा कर उन्हें मानवता के श्रेष्ठ मूल्यों से परिचित किया, बल्कि उन्हें दूसरों के पथ-प्रदर्शक और अल्लाह के धर्म का आवाहक भी बना दिया । इस्लाम इंसानों की सभ्यता और मानव-आत्मा की जो चमत्कारिक क्षमता रखता है, यह कारनामा उसकी बड़ी स्पष्ट और रोशन मिसाल है ।

### इस्लामी सभ्यता और आध्यात्मिक और व्यावहारिक जीवन

मानव-आत्मा की शुद्धि बड़ा पवित्र ध्येय है । यही तमाम इन्सानी कोशिशों का वास्तविक लक्ष्य है और मानव-सभ्यता का मुख्य ध्येय भी, लेकिन इस्लाम आत्मा की शुद्धि ही को पर्याप्त नहीं समझता, बल्कि इसके साथ-साथ सभ्यता के उन तमाम ज़ाहिर बातों को भी बाक़ी रखता है, जिन्हें वर्तमान युग में जीवन का अस्ल आनन्द समझा जाता है, चुनांचे यही कारण है कि विजित देशों की इन तमाम सभ्यताओं की इस्लाम ने सरपरस्ती की और उन्हें अपनी छत्र-छाया में विकसित किया, जो तौहीद के अक़ीदे के विरुद्ध नहीं थीं और न लोगों को नेकी और अच्छे कामों से रोकती थीं ।

### प्राचीन यूनान और इस्लाम

इस्लाम ने यूनान से मिलने वाले उस वैज्ञानिक सम्पत्ति की भी हिफ़ाज़त और सरपरस्ती की, जो औषधि-विज्ञान, ज्योतिष-शास्त्र, गणित-विज्ञान, भौतिकी, रसायन-शास्त्र और दर्शन पर आधारित था । इस्लाम ने इस ज्ञान-भंडार की रक्षा ही नहीं की, बल्कि इसमें कुछ वृद्धि ही की । इससे स्पष्ट है कि मुसलमानों को विज्ञान और उसकी खोजों से कितनी गहरी दिलचस्पी थी । चुनांचे यूरोप विज्ञान पुनरुत्थान आंदोलन और उसकी वर्तमान वैज्ञानिक सफलताओं की बुनियाद उंदुलुस की वैज्ञानिक खोजें ही हैं, सच तो यह है कि इस्लाम ने अपने इतिहास के किसी युग में भी मानवता की सेवा करने वाली किसी सच्ची सभ्यता की राह में रुकावट नहीं डाली ।

### वर्तमान पश्चिमी सभ्यता के बारे में इस्लाम का रवैया

वर्तमान पश्चिमी सभ्यता के बारे में भी इस्लाम का रवैया वही है, जो इससे पहले दूसरी सभ्यताओं के बारे में रहा है । इस्लाम उसके किसी गुण से इंकार नहीं करता, पर वह उसके लाए हुए बिगाड़ और ख़राबियों को क़ुबूल करने का रवादार नहीं । इस्लाम ने अपने अनुपालकों को भौतिक या वैज्ञानिक क्षेत्रों में कभी अलगाव की शिक्षा नहीं दी । दूसरी सभ्यताओं के ख़िलाफ़ उसके संघर्ष की तह में कोई व्यक्तिगत या नस्ली संकीर्णताएं काम नहीं करती होतीं, क्योंकि इस्लाम मानव-एकता का ध्वजावाहक है और चाहता है कि इंसान की विभिन्न नस्लों और वर्गों के दर्मियान गहरे भाईचारा के सम्बन्ध स्थापित हों ।

### वर्तमान साइंसी खोजें और इस्लाम

इस्लामी आंदोलन वर्तमान खोजों के ख़िलाफ़ नहीं है और न मुसलमान यह चाहते हैं कि विभिन्न हथियारों और


**SHATABDI FOUNDATION, GAYA**

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are — Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

**Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.**

*Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".*

*(Prof Z.H.Khan)* Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

**Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA**

औज़ारों पर 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' के शब्द अंकित होने चाहिए, वरना वे उनको अपने घरों, खेतों और कारख़ानों में इस्तेमाल नहीं करेंगे । इस्लाम जो कुछ चाहता है, वह बस इतना है कि इन हथियारों और औज़ारों को अल्लाह के लिए और उसकी इच्छानुसार इस्तेमाल किया जाए, क्योंकि ये तो बेजान हथियार हैं, इनका न कोई धर्म हो सकता है और न कोई वतन, पर उन ग़लत या सही इस्तेमाल से सारी दुनिया के इंसान प्रभावित होते हैं । मिसाल के तौर पर एक तोप को देखिये कि उसका न कोई धर्म है, न रंग और न कोई वतन, लेकिन इस्लाम के नज़दीक किसी के लिए यह जायज़ नहीं कि वे उसको ग़लत इस्तेमाल करके उसकी मदद से दूसरों पर जुल्म व ज़्यादती करने लगे । किसी मुसलमान की बहरहाल यह शान नहीं है, बल्कि इसका काम यह है कि तोप को अत्याचारों की ज़्यादती से लोगों को बचाने के लिए काम में लाए या संसार में अल्लाह के दीन (धर्म) का कलिमा ऊंचा करने में उससे मदद ले ।

ऐसे ही फ़िल्म भी नयी ईजाद है । इस्लाम इसके भी ख़िलाफ़ नहीं है, बल्कि एक अच्छे मुसलमान से उसकी मांग केवल इतनी है कि वह फ़िल्म को पवित्र भावनाओं सच्चरित्रों या इन्सानी समाज में भले-बुरे के संघर्ष का प्रतीक बनाकर इस्तेमाल करे । किसी मुसलमान के लिए यह बात बहरहाल जायज़ नहीं है कि वह फ़िल्म को नग्नता और गंदे विचारों और भावनाओं के प्रदर्शन तथा प्रचार का साधन बनाए और उससे समाज के उन बिगड़े हुए चरित्रों को उभारे जो हर प्रकार की नैतिक, मानसिक और आध्यात्मिक गंदगियों में लिप्त होते हैं । उसके नज़दीक इस तरह की तमाम फ़िल्में गन्दी और घटिया हैं, क्योंकि उनमें जीवन की बड़ी घटिया और बेकार चित्र प्रस्तुत की जाती है और यह इंसान के नीच घटिया भावनाओं को अपील करती हैं । ज़ाहिर है कि इस तरह की फ़िल्में इंसान के आध्यात्मिक विकास में सहायक नहीं बन सकतीं, बल्कि उल्टा उसके लिए अति हानिप्रद सिद्ध होती हैं ।

इस्लाम ने इंसान की साइंसी खोजों का कभी विरोध नहीं किया । मुसलमानों को उसने यही शिक्षा दी है कि वह तमाम अच्छे साइंसी खोजों को अपने उद्देश्य की सेवा के लिए इस्तेमाल करें । पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) का इरशाद है–'ज्ञान की प्राप्ति हर मुसलमान पर अनिवार्य है ।'

यह कहने की शायद यहां ज़रूरत नहीं है कि ज्ञान की परिभाषा में हर प्रकार का ज्ञान शामिल है । मानो हुज़ूर (सल्ल०) का अभिप्राय यह था कि मुसलमानों को ज्ञान और विज्ञान के हर विभाग में आगे बढ़ना चाहिए ।

तात्पर्य यह है कि इस्लाम किसी ऐसी सभ्यता का विरोध नहीं करता, जो मानवता की सेवा करें, पर अगर कोई सभ्यता शराब पीने, जुआ खेलने, नैतिक गिरावट, वेश्यावृति और उपनिवेशवादी साम्राज्य और जातियों को अनेक हीलों-बहानों से अपना गुलाम बनाने के पर्याय बनकर रह जाए, तो इस्लाम ऐसी सभ्यता को स्वीकार नहीं करता, बल्कि इसके विपरीत आवाज़ उठाता है, ताकि दुनिया के लोग उसकी लायी हुई तबाहियों और बीमारियों से बचे रहें ।




# अनाथ लड़कों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN BOYS

## यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



### एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 95 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2012-2013 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 12000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 16 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

**इनायत पोलिटेक्निक (ENAYETH POLYTECHNIC) की इमारत के निर्माण का काम जोरो शोर से जारी है।**

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**नोट :** यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

**Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले**

**अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM,**

**UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)**

**में अपनी रक़म भेज सकते हैं**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

**चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता**

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

**LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले**

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN G A/C NO.: 300402010010581, ☎0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

# इस्लाम की मौलिक धारणाएं

● हमूदा अब्दलती

कुछ लोग सोच सकते हैं कि एक व्यक्ति उस समय 'मुस्लिम' कहलाया जाने लगता है, जब वह एक सच्चे खुदा को और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उसका आख़िरी रसूल मान ले। लेकिन पूर्ण ईमान का यह अर्थ होता ही नहीं कि एक चीज़ नाम मात्र के लिए या रस्म अदा करने के लिए मान ली जाए। इस्लाम में ईमान आनन्द की उस अवस्था को कहते हैं जो अच्छे कार्यों, रचनात्मक विचारों तथा प्रभावी गुणों द्वारा प्राप्त हो। पवित्र कुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की हदीसें इन गुणों का स्पष्ट उल्लेख करती हैं और एक ऐसी कसौटी तैयार कर देती हैं, जो ईमान को बड़ा अर्थपूर्ण बना देती है। इस तरह सच्चे ईमान वाले वे हैं–

1. जो खुदा, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, आख़िरी किताब कुरआन, उसके रसूलों, आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०), बदले के दिन (आख़िरत) और भले और बुरे अल्लाह ही के फ़ैसले में यक़ीन रखते हैं।

2. जो सदैव खुदा ही पर भरोसा करते हैं और उसमें पक्का विश्वास रखते हैं।

3. जो अल्लाह की राह में लगाते हैं वह कुछ, जो उसने उन्हें दे रखा है, चाहे वह दौलत हो, जीवन हो, स्वास्थ्य हो, ज्ञान हो, अनुभव हो या कोई और चीज़।

4. जो हर दिन की नमाज़ पाबन्दी से अदा करते हैं, साथ ही साप्ताहिक (जुमा की) और वार्षिक (ईद-बक़रीद की) नमाज़ों को पाबन्दी से अदा करते हैं।

5. जो ज़कात अदा करते हैं (अगर वे सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं) सही हक़दारों को (व्यक्तिगत रूप से या संस्थाओं को)। ज़कात का 'निसाब' साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना है। जो इतनी मात्रा के सोने या चांदी के मूल्य का मालिक लगातार एक साल तक रहा हो, उसके लिए ज़कात निकालना अनिवार्य है। ज़कात चालीस रुपयों में एक रुपया (ढाई प्रतिशत) निकाली जाती है। व्यापार के माल पर भी ज़कात है।

6. जो भले और अच्छे कार्य करते हैं, बुरे और गन्दे कामों से बचते हैं और अल्लाह की निर्धारित मर्यादाओं की रक्षा करते हैं।

7. जो अल्लाह का और उसके रसूल मुहम्मद (सल्ल०) का आज्ञापालन करते हैं। जब कुरआन पढ़ा जाता है तो उनका ईमान बढ़ जाता है और खुदा का नाम लिया जाता है तो उन के दिल कांप-कांप जाते हैं।

8. जो खुदा से और उसके रसूल से अति प्रेम करते हैं और अल्लाह के बन्दों के प्रति सिर्फ़ खुदा की प्रसन्नता करने के लिए निष्ठापूर्ण प्रेम रखते हैं।

9. जो अपने-अपने दूर व नज़दीक के पड़ोसियों से प्रेम-भाव दर्शाते हैं, अपने मेहमानों पर मेहरबान होते हैं मुख्य रूप से अजनबियों का सत्कार करते हैं।

10. जो सच बोलते हैं, सच्ची बातों में लगे रहते हैं।

इससे स्पष्ट है कि ईमान का हर मतलब एक-एक व्यक्ति की नस-नस में अन्दर तक और उसके जीवन के हर पहलू में और रचनात्मक ढंग से बिठा देता है। इस्लाम के अनुसार सच्चा ईमान इन्सान के आध्यात्मिक और भौतिक भाग्य पर निर्णायक प्रभाव डालता है, यहां तक कि यह प्रभाव उसके निजी और सामाजिक मामलों, उसकी राजनीतिक गतिविधियों और आर्थिक जीवन पर पूरी छाप डालता है।

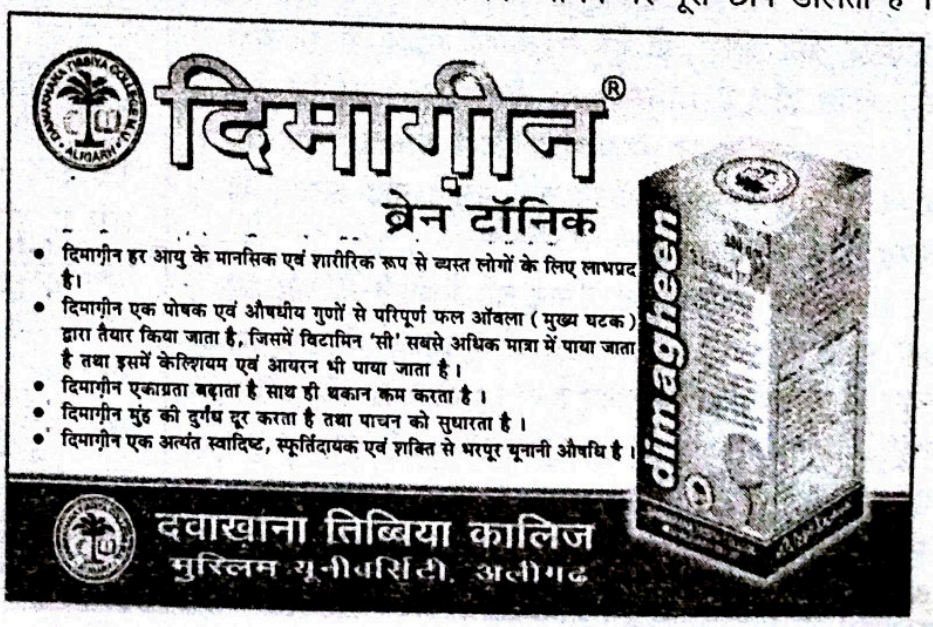

कुरआन में सच्चे ईमान वालों का कैसा चित्र खींचा गया है, यहां उसकी कुछ मिसालें दी जाती हैं । वैसे पूरे कुरआन में इस जैसी न जाने कितनी आयतें बिखरी पड़ी हैं–

'ईमान वाले तो वही हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाए तो उनके दिल कांप उठें और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएं तो वे उनके ईमान को और बढ़ाएं और वे अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं । नमाज़ क़ायम करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं । ऐसे ही लोग हैं, जो सच्चे ईमान वाले हैं, उनके लिए उनके पालनहार के पास दर्जे हैं, क्षमा और इज़्ज़तदार रोज़ी ।'

(अल-अंफ़ाल, 2-4)

'और ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें, ये सब एक-दूसरे के संरक्षक मित्र हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानते हैं । ये वह लोग हैं, जिन पर, अल्लाह दया करेगा । निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है । इन ईमान वाले मर्दों और औरतों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे–सदाबहार बाग़ों में रहने के पाक घर होंगे और अल्लाह की ख़ुशी और रज़ामंदी तो सबसे बड़ी चीज़ है । यही बड़ी सफलता है ।'

(अत-तौबा, 71-72)

'ईमान वाले तो बस वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर संदेह में नहीं पड़े और अपने मालों और अपनी जानों को अल्लाह की राह में लगा दिया ! यही लोग सच्चे हैं ।' (अल-हुजुरात, 15)

कुरआन की इन आयतों के अतिरिक्त हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बयान की हुई बहुत-सी हदीसों से भी यही बात ज़ाहिर होती है । मिसाल के तौर पर आप फ़रमाते हैं–

'वह सच्चा ईमान वाला हो ही नहीं सकता, अगर वह अपने मुसलमान भाई के लिए वही पसन्द नहीं करता, जो अपने लिए पसन्द करता है ।'

'तीन विशेषताएं अच्छे ईमान की निशानी हैं और जो इन्हें प्राप्त कर लेता है वह सच में ईमान की मिठास का स्वाद पा लेता है, वे विशेषताएं हैं–(1) अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) से सर्वाधिक प्रेम करना (2) अल्लाह की मख़्लूक़ (रचित) से सिर्फ़ ख़ुदा के लिए मुहब्बत करना और (3) कुफ़्र की ओर पलटने से इस तरह बचना, जैसे कोई आग में डाले जाने से बचे ।'

'वह जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन पर यक़ीन रखता है, वह अपने पड़ोसी को किसी प्रकार का कष्ट न दे, अपने मेहमानों, मुख्य रूप से अजनबी मेहमानों पर मेहरबान हो और सच बोले या ख़ामोश रहे ।'

इसी तरह की और भी आयतें और हदीसें उद्धृत की जा सकती हैं, लेकिन यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि ये उद्धरण कुरआन और हदीस के वे मूल शब्द नहीं हैं जो अरबी में आते हैं । इसका कारण स्पष्ट है । कोई भी अनुवादक, भले ही वह अनुवाद कला में दक्ष हो, अपने अनुवाद में कुरआन की आध्यात्मिक शक्ति और चित्ताकर्षण को रूपांतरित नहीं कर सकता, किसी भी भाषा में ऐसा नहीं हो सकता । कुरआन जैसी कोई किताब बनायी भी नहीं जा सकती । यह मानवीय शक्ति और कल्पना से परे की बात है कि उस चीज़ जैसी कोई चीज़ तैयार कर दी जाए । इस पहलू से कुरआन की जो विशेषता है बड़ी हद तक वही हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के वचनों की भी है, क्योंकि कुरआन के बाद आपके शब्द ही अधिक प्रभावी और व्यापक माने जाते हैं ।

## कविता

# नुमाइश

ढलक रहा है दिनोंदिन
ऊपर का परिधान नीचे की ओर ।
खिसक़ रहा है निरंतर
नीचे का वस्त्र ऊपर की ओर ।
कहां जाकर थमेगा यह सिलसिला
कठिन है अनुमान लगाना ।
आने वाले दिनों में नारी के
लिबास की पहचान बताना ।
एक होड़-सी लगी है
कम से कम धारण करने की ।
एक-दूसरे से बढ़-बढ़कर
देह प्रदर्शन करने की ।
कहां तक ले जाएगी यह लालसा
क्या-क्या रूप दिखाएगी ।
क्या नारी अपनी नैसर्गिक गरिमा त्याग
नुमाइश की वस्तु भर बनकर रह जाएगी ।

● ओमप्रकाश बजाज

# इस्लाम में उदारता की शिक्षा

■ मतीन तारिक़ बाग़पती

इस घटाटोप अंधेरे में इस्लाम एक रोशनी का मीनार है, जिसकी रोशनी हर एक पर फैली, जिसने पहले दिन से अमीर-ग़रीब, मालिक-ग़ुलाम और अपने-पराये सबको समान रूप से संबोधित किया और साफ़-साफ़ बताया कि ख़ुदा पूरी कायनात (ब्रह्माण्ड) का, ख़ुद इन्सान का और यहां की तमाम उन चीज़ों का बनाने वाला है, जिनसे इन्सान इस दुनिया में लाभ उठा रहा है । जैसा कि स्वयं उसी ने अपनी पुस्तक पवित्र क़ुरआन मजीद में फ़रमाया भी है–

"वही है जिसने आसमान और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है ।" (क़ुरआन, 6:73)

"लोगो, अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और दोनों से बहुत-से मर्द और औरत दुनिया में फैला दिये ।" (क़ुरआन, 4:01)

अर्थात किसी को किसी पर श्रेष्ठता प्राप्त नहीं । सभी लोग एक ही मर्द-औरत की संतान हैं, एक समुदाय हैं, एक बिरादरी हैं, इसलिए उनमें आपस में मुहब्बत होनी चाहिए । एक को दूसरे का सम्मान करना चाहिए और हर इन्सान को दूसरे इन्सान के साथ भलाई, शिष्टाचार, भाईचारे का संबंध रखना चाहिए, क्योंकि सबको एक ही ख़ुदा ने पैदा किया है । इसकी तरफ़ इशारा करते हुए क़ुरआन की एक दूसरी आयत में फ़रमाया–"लोगो, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो । वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे अधिक परहेज़गार (ईशभय रखने वाला) है ।" (क़ुरआन, 49:13)

इस आयत की व्याख्या में इस्लामी विद्वान मौलाना मौदूदी (रह०) लिखते हैं–"इस आयत में सारे इन्सानों को संबोधित करके उस सबसे बड़ी गुमराही का सुधार किया गया है जो संसार में हमेशा विश्वव्यापी फ़साद का कारण बनी रही है, अर्थात रंग, नस्ल, भाषा, वतन, क्षेत्रीयता व राष्ट्रीयता का भेदभाव । प्राचीन काल से आज तक हर काल में इन्सान आमतौर से इन्सानियत की अनदेखी करके अपने चारों तरफ़ कुछ छोटे-छोटे दायरे खींचता रहा है, जिनके अन्दर पैदा होने वालों को उसने अपना और बाहर पैदा होने वालों को पराया क़रार दिया है । ये दायरे किसी अक़्ल व नैतिकता के आधार पर नहीं, बल्कि संयोगवश पैदाइश के आधार पर खींचे गये हैं । कहीं उनका आधार एक ख़ानदान, क़बीले या नस्ल में पैदा होना है और कहीं एक भौगोलिक क्षेत्र में या एक विशेष रंगवाली या एक विशेष भाषा बोलने वाली क़ौम में पैदा हो जाना है । फिर इन बुनियादों पर अपने और पराये का जो अन्तर किया गया है, वह यहीं तक सीमित नहीं रहा कि जिन्हें इस लिहाज़ से अपना ठहराया गया हो कि उनके साथ परायों की तुलना में अधिक संबंध रखना और उनकी अधिक मदद करना हो, बल्कि इस अन्तर ने नफ़रत, दुश्मनी, तौहीन व बेइज़्ज़ती और ज़ुल्म व अन्याय की बदतरीन शक्लें अपना ली हैं । इसके लिए दर्शन घड़े गये हैं । मज़हब (धर्म) ईजाद किये गये हैं । क़ानून और नैतिक उसूल बनाए गये हैं । राज्यों और जातियों ने इसको अपनी स्थायी नीति बनाकर सदियों इसको व्यावहारिक रूप में लागू किया है । यहूदियों ने इसी आधार पर अपने आपको ख़ुदा की चुनी हुई क़ौम ठहराया और अपनी धार्मिक शिक्षाओं तक में ग़ैर-इसराइलियों के हक़ों और रुतबे को इसराइलियों से कमतर रखा । हिन्दुओं के यहां वर्ण-आश्रम को इसी भेदभाव ने जन्म दिया, जिसके आधार पर ब्राह्मणों की बड़ाई स्थापित की गयी । ऊंची जाति वालों की तुलना में सारे इन्सान नीच और अपवित्र ठहराये और शूद्रों को अत्यंत अपमान के गड्ढे में फेंक दिया । काले-गोरे के भेदभाव ने अफ़्रीक़ा और अमेरिका में काले वर्ण के लोगों पर जो ज़ुल्म व अत्याचार ढाये उनको इतिहास के पृष्ठों में तलाश करने की आवश्यकता नहीं, आज भी हर व्यक्ति अपनी आंखों से उन्हें देख सकता है ।

यूरोप के लोगों ने अमेरिकी महाद्वीप के अन्दर घुसकर 'रेड इंडियन' नस्ल के साथ जो बर्ताव किया और एशिया और अफ़्रीक़ा की कमज़ोर नस्लों पर अपनी सत्ता व्यवस्थापित करके जो बर्ताव उनके साथ किया, उसकी तह में भी यही

सोच काम कर रही थी कि अपने वतन और अपनी क़ौम से बाहर पैदा होने वालों की जान-माल और आबरू-इज़्ज़त उनके लिए वैध है और उन्हें हक़ पहुंचता है कि परायी क़ौमों को लूटें, गुलाम बनाएं और ज़रूरत पड़े तो उन्हें दुनिया से मिटा दें। पश्चिमी देशों के राष्ट्रवाद ने एक देश को दूसरे देश के लिए जिस तरह दरिन्दा बनाकर रख दिया है, उसकी बदतरीन मिसालें इस सदी की लड़ाइयों में देखी जा चुकी हैं और आज भी देखी जा रही हैं। विशेष रूप से नाज़ी जर्मनी का मानवता-दर्शन और नार्डक नस्ल की बरतरी की सोच पिछले विश्व युद्ध में जो करिशमे दिखा चुकी है, उन्हें सामने रखते हुए आदमी आसानी से अंदाज़ा लगा सकता है कि नस्लपरस्ती और राष्ट्रीय पक्षपात कितनी बुरी और तबाह करने वाली गुमराही है जिसके सुधार के लिए क़ुरआन मजीद की यह आयत अवतरित हुई।

(तफ़हीमुल क़ुरआन, खंड-5, पृ॰ 95 से 96)

दुनिया के लोगों का हमेशा से यही नियम रहा है कि अपने से अलग लोगों और दूसरी क़ौमों के साथ भेदभाव का व्यवहार करते रहे हैं, जैसा कि ऊपर की पंक्तियों से स्पष्ट है। आज के विकसित दौर में भी दुश्मनों को कुचल डालने को प्रशंसनीय काम समझा जाता है, लेकिन जगत का पालनहार अल्लाह मुसलमानों को आदेश देता है कि विश्व में चाहे जो कुछ हो रहा हो, तुम कदापि ऐसा न करना कि किसी की दुश्मनी में न्याय और इन्साफ़ के रास्ते से हट जाओ, बल्कि इसके विपरीत वह कहता है–"अल्लाह तुम्हें इस बात से नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ भलाई और न्याय का व्यवहार करो जिन्होंने 'दीन' (धर्म) के मामले में तुम से जंग नहीं की है और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला है। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है।" (क़ुरआन, 60:8)

"किसी गिरोह की दुश्मनी तुमको इतना उत्तेजित न कर दे कि इन्साफ़ से फिर जाओ। इन्साफ़ करो, यह ईश भक्ति व विनम्रता के अधिक अनुकूल है।" (क़ुरआन, 5:8)

## दर्पण



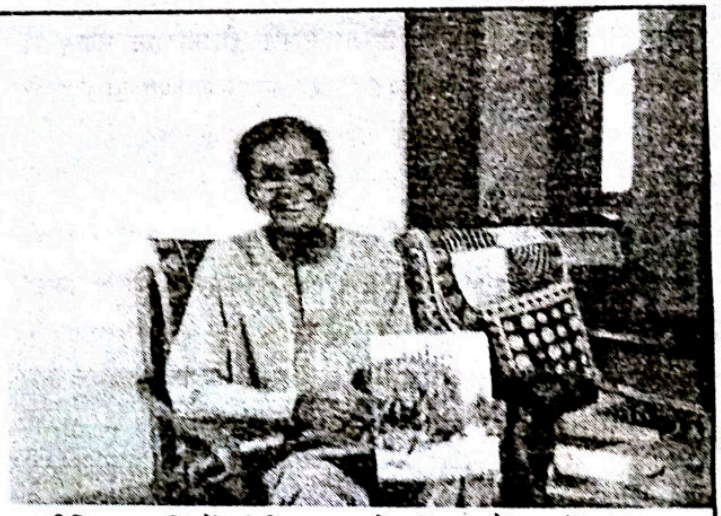

हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं कहानीकार श्री ओमप्रकाश वाल्मीकि इन दिनों गंभीर रूप से बीमार हैं, उन्हें आंत का कैंसर था। दस अक्तूबर 2012 को नयी दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में उनका ऑपरेशन किया गया। अब उनकी कीमोथेरेपी का क्रम जारी है। उनकी बीमारपुर्सी के लिए जमाअत इस्लामी हिन्द के सहायक सचिव जनाब इन्तिज़ार नईम और 'कान्ति' साप्ताहिक/मासिक के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद नोएडा की केन्द्रीय विहार कॉलोनी में पहुंचे जहां वे ठहरे हुए हैं।

वाल्मीकि जी को 'कान्ति' मासिक का मानवता को इस्लाम की देन शीर्षक विशेषांक उपहारस्वरूप दिया गया तो उन्होंने उसका सरसरी तौर पर अवलोकन किया और अपनी प्रसन्नता प्रकट की। उन्होंने कहा कि इस तरह के प्रयास को और तेज़ करने की आवश्यकता है। हिन्दी में ऐसे साहित्य की बहुत कमी है जो दिलों को पाटती और नफ़रत को दूर करती हैं। मैंने तो नफ़रत को सदैव के घर से बाहर ही 'पेड़' पर टांग रखा है। अत: मैं ऐसे कर्मों को बहुत पसन्द करता हूं। वाल्मीकि जी को 'दलित समस्या जड़ में कौन ?' लेखक इन्तिज़ार नईम शीर्षक पुस्तक भी भेंट की गयी। उन्होंने इसमें समाहित तथ्यों को बहुत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने अपनी नवप्रकाशित कृति 'प्रतिनिधि कविताएं' उपहारस्वरूप हम लोगों को प्रदान की। ईश्वर से प्रार्थना है कि वाल्मीकि जी शीर्घ रोग-मुक्त हो जाएं और अपना शेष जीवन कल्याणकारी साहित्य की रचना में लगाएं।

■ संपादक

# पुलिसिया यातना : जांच का प्रश्न

■ बासिल फर्नान्डो

(निदेशक : 'एशियन ह्यूमैन राइट्स कमीशन')

अगर हम यह सवाल पूछें और इसके जवाबों की तलाश शुरू करें तो कोई हम से भी पलट कर पूछ सकता है कि रुकिये, आप कैसे जानते हैं पुलिसिया यातना क्या होती है ? इस क़िस्म के प्रति प्रश्न हमें ज्ञान मीमांसा के उस बिंदु तक ले जाते हैं, जहां मूल सवाल ही यह होता है कि 'किसी भी चीज़ के बारे में आख़िर हम जानते कैसे हैं ?'

ऐसे सवाल सदियों से पूछे जाते रहे हैं । और विगत तीन-चार सदियों की जिद्दोजहद में जो जवाब निकलकर सामने आया है वह यह है कि हम किसी चीज़ के बारे में उससे जुड़े आंकड़ों और तथ्यों के संकलन और विश्लेषण की मदद से जानते हैं । यही वजह है कि दूरबीन और सूक्ष्मदर्शी इस युग के सबसे बड़े प्रतीक बनकर उभरे हैं । आज हम किसी भी सवाल का जवाब जानने की कोशिश आंकड़ों के अवलोकन और विश्लेषण के द्वारा करते हैं ।

**यातना के सवाल पर आंकड़ों का महत्व**

यातना से जुड़े आंकड़े हमें पीड़ितों की वास्तविक कहानियों में मिलते हैं । पीड़ितों की अस्ली कहानियों के सहारे यातना का अध्ययन सिर्फ़ सांख्यिकीय विश्लेषण से यातना को समझने के तरीक़े से बिलकुल अलग है । अस्ली कहानियों को ठीक-ठीक दर्ज कर हम जान सकते हैं कि यातना क्या है और क्यों दी जाती है । साथ ही, इससे जुड़े अन्य सभी सवालों के जवाब तक हम पहुंच सकते हैं ।

यातना पर अब तक उपलब्ध और ज्ञात आंकड़े हमें क्या बताते हैं ? वह हमें हमारी संस्थाओं में मौजूद अंतर्विरोधों के बारे में बताते हैं । इन आंकड़ों का अध्यनन और विश्लेषण हमें बताता है कि कैसे संस्थाओं का त्रुटिपूर्ण संचालन क़ानून पर आधारित शासन को हासिल करने की हमारी तमाम कोशिशों को विफल करती हैं । इस प्रकार यातना का अध्ययन, दरअस्ल हमारे समाज में मौजूद बुनियादी और महत्वपूर्ण संस्थाओं और उनमें मौजूद ख़ामियों का अध्ययन बन जाता है ।

पीड़ितों की कहानियों से मिलने वाले आंकड़े हमें दिखाते हैं कि हमारी बुनियादी संस्थाएं किस क़दर अतार्किक ढंग से कार्य करती हैं । और यह भी कि यातना महज़ निर्ममता का अध्ययन भर नहीं है । इसके ठीक उलट, यह उस अतार्किकता का, शक्ति के अवैध और अनुचित प्रयोग का अध्ययन है, जो हमारी संस्थाओं की कार्यप्रणाली में व्याप्त हो गयी हैं ।

इसी लिए, 'यातना का मतलब क्या है' जैसा सवाल न्यूमोनिया, मलेरिया या किसी भी और रोग का मतलब पूछने जैसा निरर्थक सवाल ही है, ख़ासतौर पर तब जब आज इन बीमारियों के कारण और इलाज दोनों ही ठीक से समझ लिए गये हैं । हमारे बुनियादी संस्थानों में फैली बीमारियों के अध्ययन के लिए भी इन्हीं सिद्धांतों का उपयोग किया जा सकता है । प्रभावी संस्थाओं की अनुपस्थिति में लोकतंत्र एक अर्थ-शून्य भावाभिव्यक्ति बनकर रह जाता है, ठीक किसी ऐसे ख़ाली गुब्बारे की तरह जो अंतरिक्ष में बेवजह तैर रहा हो । सिर्फ़ निष्पक्ष और प्रभावी सार्वजनिक संस्थाओं की उपस्थिति ही है, जो एक लोकतंत्र को सही अर्थ प्रदान करती है ।

इन संस्थाओं का सफल संचालन ही वो पैमाना है जो बताता है कि वे क़ानून के शासन के तहत काम करने में सक्षम हैं या नहीं । अगर एक सार्वजनिक संस्था 'क़ानून के शासन' के मापदंडों के आधार पर निष्क्रिय और अन्यायपूर्ण हो गयी हो, तो इसका सीधा अर्थ यह होता है कि अब वह लोकतंत्र का उपकरण होने की बजाय किसी और चीज़ में तब्दील हो गयी है ।

हमारे समाज में, जहां पुलिसिया यातना सर्वव्यापी है, हम सार्वजनिक संस्थाओं के इसी 'कुछ और' में बदल जाने का अनुभव कर रहे हैं । यह 'कुछ और' कुछ भी हो सकता है–'सर्वाधिकारवाद' तक पहुंच चुकी व्यवस्थाओं से लेकर उसके क़रीब खड़े तमाम 'वादों' में से कुछ भी । परन्तु एक बात जो सुनिश्चित है वह यह कि ये संस्थाएं न केवल ख़ुद अलोकतांत्रिक हो गयी हैं, बल्कि वह लोकतंत्र के रास्ते में बाधाएं भी खड़ी कर रही हैं ।

यातना से लैस समाज में, ख़ासतौर पर वे लोग जो

ہماری بعض اہم کتابوں کا پہلی بار

# ہندی ایڈیشن

| | | |
|---|---|---|
| **नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?**<br>मौलाना सय्यद अबुल- आला मौदूदी | [نماز میں آپ کیا پڑھتے ہیں؟] | 12.00 |
| **मुस्लिम औरतों की ज़िम्मेदारियाँ**<br>मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | [مسلمان خواتین کی ذمے داریاں] | 20.00 |
| **भारत में इस्लाम की दावत की अहमियत और उसके तक़ाजे**<br>मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | [ہندستان میں اسلام کی دعوت اہمیت اور تقاضے] | 14.00 |
| **काबा का सफ़र**<br>मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी | [سوے حرم چلا] | 24.00 |
| **प्यारे नबी (सल्ल०) की चहेती बेटियाँ**<br>फ़ज़्ले-क़दीर नदवी | [رسول اللہؐ کی صاحبزادیاں] | 16.00 |
| **इस्लाम सफलता का एकमात्र रास्ता**<br>मौलाना सय्यद हामिद अली | [اسلام کامیابی کا واحد راستہ] | 08.00 |
| **इशदूतत्व की धारणा विभिन्न धर्मों में** | [مجموعہ مضامین] | 20.00 |
| प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-3<br>**हज़रत उस्मान ग़नी** (रज़ि०)<br>इरफ़ान ख़लीली | [پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت عثمان غنیؓ-حصہ سوم] | 35.00 |
| प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-4<br>**हज़रत अली** (रज़ि०)<br>इरफ़ान ख़लीली | [پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت علیؓ-حصہ چہارم] | 30.00 |
| **ईश्वर की रहस्यमय हस्ती**<br>मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ | [خدا کی پراسرار ہستی کا تصور] | 14.00 |
| **हदीस सौरभ** (अनुवाद एवं व्याख्या सहित) भाग-2<br>मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ | [کلام نبوت-جلد دوم] | 350.00 |

MMI PUBLISHERS
D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) • Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

यातना को ख़त्म कर एक सच्चे लोकतांत्रिक समाज के निर्माण के लिए वचनबद्ध हैं मसलन नेताओं, सांसदों और उच्चाधिकारियों, में यह विश्वास घर कर गया है कि बिना यातना के अधिकार के पुलिस का काम करना संभव ही नहीं है । परन्तु सत्य इसके ठीक विपरीत है । पुलिस का ठीक से काम करना सबसे ज़्यादा मुश्किल (वस्तुत: असंभव) वहीं होता है, जहां यातना का व्यापक प्रयोग होता है ।

मैं यह कहना चाहता हूं ए०एच०आर०सी० में इस मुद्दे पर विचार-विमर्श क़रीब डेढ़ दशक पहले ही शुरू हो गया था । और तब से लगातार हमने यातना क्या है और इस सवाल का जवाब पीड़ितों पर अत्याचार की निर्ममतम कहानियों को ठीक-ठीक दर्ज करने की प्रविधि द्वारा दिया है । यातना की इन कहानियों का हमारा दस्तावेज़ीकरण (डाक्यूमेंटेशन) यातना का अर्थ समझ कर इसे ख़त्म करने की हमारी अथक कोशिशों का सबूत है । शुरुआती दिनों में हमारा मूलमंत्र था कि 'सूक्ष्म (Micro) से स्थूल Macro) की तरफ़ बढ़ो', और इसका मतलब था कि यातना की वैयक्तिक कहानियों के माध्यम से हम समाज की 'मूल संरचना की दिक़्क़तों' को समझ सकें ।

जब हम इन कहानियों से रू-ब-रू होते हैं, तब हमें समाज की मूल संरचनाओं और उनकी कार्यप्रणाली की हक़ीक़त स्पष्ट होती हैं । यही वजह है कि समाज के बुनियादी ढांचे में व्याप्त त्रुटियों को ठीक करने के हमारे अभियान का एक अहम अंग है–यातना के व्यापक प्रयोग का अध्ययन करना और इसका खुलासा करना । इस नज़रिये से देखें तो समाज में अस्ली लोकतंत्र स्थापित करने की लड़ाई में लगे हम सभी लोगों के लिए पुलिसिया यातना का सवाल एक ऐसा सवाल है जिसे नज़रअंदाज़ करना मुनासिब नहीं ।

पुलिसिया यातना का ख़ात्मा हमारे समाज के लोकतांत्रीकरण की दिशा में अत्यावश्यक कार्यों में से एक है । यह एक ऐसा व्यावहारिक तरीक़ा है जिसके उपयोग से हम लोकतंत्र के रास्ते में खड़ी ढांचागत दिक़्क़तों को ख़त्म कर सकते हैं ।

यही वह प्रस्ताव है जो एशियन ह्यूमन राइट्स कमीशन इस बैठक के प्रतिभागियों के सामने पेश कर रहा है । साथ ही, ए०एच०आर०सी० इस बैठक में आये सम्माननीय सांसदों से विशेष तौर पर यह आग्रह करता है कि वे लोकतंत्र स्थापित करने के लिए उनके देशों में लड़ी जा रही लड़ाइयों में इस प्रस्ताव को गंभीरता से लें और उसमें शामिल करें ।

**कविता**

# बाल अपराधी

रात-दिन पेट भरने का सवाल
मां की दवाई का क़र्ज़
पिता का मर्ज़
ले आता उसे चिलचिलाती धूप में
मजबूरी में
मज़दूरी में

नन्हे हाथों से टूटते सपने
बिखरती मन की आशाएं
काम पर ठेकेदार का रौब
घर में भुख-मरी का ख़ौफ़
पिता की फटकार से
मां के दुलार से हर रोज़

अपने मासूम कंधों पर
डाल लेता बोझ
भावहीन चेहरे में
जाने कहां छिप जाती मासूमियत
परिस्थितियों के वार से
जीवन की हार से
या ज़रूरतों की आंधी में
बन गया बाल अपराधी
सोचा पकड़ा जाऊंगा तो जेल में
दाल-रोटी तो मुफ़्त खाऊंगा

पर हाय रे तक़दीर ऐसी
यहां भी दग़ा दे गयी
चोरी कर पकड़ा गया
ज़ंजीरों में जकड़ा गया
पुलिस ने की पिटाई
देने लगा दुहाई

ग़रीबी का एहसास
बन गया उसके जीवन का अभिशाप ।

● डॉ० प्रीत अरोड़ा

# हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) : तपश्चर्या का जीवन

*पंडित सुन्दर लाल एक जाने-माने विद्वान और चिंतक रहे हैं। यह लेख उनकी तहरीर नहीं बल्कि मीलादुन्नबी के मौक़े पर किये गये उनके भाषण का सार है। इस भाषण का साल निर्धारित करना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन इसे पुस्तक रूप में मशहूर पत्रकार पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी ने प्रकाशित किया है। पुस्तक के शुरू में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के पत्र पर पड़ी तारीख़ से पता चलता है कि उन्होंने चार जनवरी 1934 ई० को पत्र लिखा था। इसलिए मालूम होता है कि पुस्तक भी इसी के आसपास प्रकाशित हुई होगी और भाषण 1934 ई० के पहले का होगा।*

*मौलाना आज़ाद के ख़त की चंद पंक्तियां इस तरह हैं–"जनाब आली ! मुझे इस बात से निहायत ख़ुशी हुई कि आप हिन्दी के छोटे-छोटे रिसालों (किताबों) का एक निहायत मुफ़ीद सिलसिला शाया कर रहे हैं, जिसका मक़सद यह है कि हिन्दू और मुसलमानों को एक-दूसरे के मज़हब और तवारीख़ व तहज़ीब को समझने का मौक़ा दिया जाए और ग़लतफ़हमियां दूर की जाएं, जो नावाक़फ़ियत और तंगनज़री की वजह से आमतौर पर फैल गयी हैं। यह वक़्त का एक निहायत ज़रूरी काम है, जिसकी तरफ़ बहुत कम तवज्जोह की गयी है।"*

*पंडित सुन्दर लाल का यह भाषण कई मायने में अहम है। इसके कुछ हिस्सों को यहां प्रकाशित किया जा रहा है। इसमें रसूलुल्लाह (सल्ल०) के प्रति मुहब्बत और दुआ के शब्द बढ़ाये गये हैं और कहीं-कहीं ज़ुबान भी ठीक कर दी गयी है।*

**● संपादक**

आपने एक ऐसे आदमी को, जो कम से कम प्रचलित अर्थों में मुसलमान नहीं है, इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के जन्म दिवस के मुबारक मौक़े पर नबी के जीवन-चरित्र के संबंध में विचारों को प्रकट करने को निमंत्रित किया है। मैं इस निमंत्रण को अपने लिए फ़ख़्र की चीज़ समझता हूं और इसके लिए आपका शुक्रिया अदा करता हूं। दुर्भाग्य से ऐसे अवसर दिन-प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं, जब हम लोग एक-दूसरे के बुज़ुर्गों के विषय में आदर और प्रेम के साथ अपने विचारों को प्रकट करें और एक-दूसरे के धार्मिक सिद्धांतों पर सहानुभूति और निष्पक्षता के साथ नज़र डालें।

यदि हमें वास्तव में अपने-अपने मज़हबों की वास्तविक और मौलिक आस्थाओं और भावनाओं के अनुसार चलना है तो इस प्रकार की जानकारी और इस क़िस्म के अवसर जितने अधिक हों, उतना ही अच्छा है।

**इस्लाम से पूर्व अरब की सामाजिक अवस्था**

चौदह सौ वर्ष पूर्व अरब की सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक स्थिति ख़राब थी। अरब छोटे-छोटे क़बीलों या कुलों में बंटा हुआ था। हर क़बीले को अपने ही क़बीले का गुरूर और अभिमान था। अपनी बड़ाई और श्रेष्ठता साबित करने की कोशिश में वह एक-दूसरे के ख़ून का प्यासा था। वह माल पैदा करने में नहीं, लूटकर खाने में अपना फ़ख़्र समझता था। कला-कौशल लगभग नदारद थी। हिंसा-प्रतिहिंसा और ख़ूनख़राबे का दौर पीढ़ी दर पीढ़ी चलता। लूटमार, हत्यार आम बात हो गयी थी। विरोधी क़बीले की स्त्रियों को पकड़ कर लाना, हर क़बीला अपना हक़ समझता था। दासों की गिरफ़्तारी और क्रय-विक्रय का बाज़ार गर्म था। किसी दास को मार डालने पर कोई सज़ा

# सनातन धर्म इस्लाम की शिक्षा

न थी । अदालत तो थी ही नहीं । अज्ञानता की यह स्थिति थी कि लोग लड़की का बाप होना अपमान और ज़िल्लत समझते थे । लड़की को कहीं-कहीं तो गाड़ दिया जाता था । कभी 6 वर्ष या 9 वर्ष आयु की लड़की को बाप मार डालता था । जुआ, शराबख़ोरी और बदचलनी की कोई हद न थी ।

### धार्मिक अवस्था

अरब में बहुदेववाद का प्रचलन था । मक्का में 360 बुत थे, जिनके समक्ष लोग नंगे होकर तवाफ़ करते थे । यह सब अज्ञानता के कारण था । यही उनका मज़हब था और जब दो क़बीलों की लड़ाई होती थी तो वह उनके देवताओं की भी लड़ाई समझी जाती थी और इन्सानों की तरह देवता भी क़ैद कर लिए जाते थे । यहूदी और ईसाई धर्म की स्थिति इतनी ही नहीं बल्कि इससे भी अधिक गिरी हुई थी ।

### राजनैतिक अवस्था

स्वाभावत: जिस क़ौम में एकता न हो, उसकी राजनैतिक स्थिति भी अच्छी नहीं हो सकती, भारत की वर्तमान स्थिति से भी अरब की अवस्था अच्छी न थी । वहां रेगिस्तान को छोड़कर अधिकांश भाग उत्तर में शाम (सीरिया) देश से मिले हुए प्रांत ईरान के बादशाह के मातहत थे, उत्तर-पूर्व रोम के मातहत, मक्के के दक्षिण में लाल-सागर के किनारे के सूबे मुल्क हब्शा अर्थात अबीसीनिया के ईसाई बादशाह के अधीन था । मात्र मक्का और मदीना अपने को स्वाधीन समझता था, मगर तीनों शक्तियां उस पर आधिपत्य जमाने का प्रयास करती रहती थीं ।

हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) के जन्म से 55 वर्ष पूर्व यमन के हब्शी शासक ने मक्के को गिराकर क़ब्ज़ा करना चाहा, पर असफल रहा । जब हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) ने ईरान के सम्राट को इस्लाम की दावत का पत्र लिखा, तो उसने मक्के को अपने अधीन और हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) को अपनी प्रजा बताकर उस पत्र को अवज्ञा के साथ फाड़कर फेंक दिया ।

### हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) का जन्म

एक प्रतिष्ठित और उच्च कुल के अन्दर 12 रबीउल अव्वल सन 570 ई० को आपका जन्म हुआ ।

जन्म से कुछ दिन पूर्व ही आपके पिता अब्दुल्लाह की मृत्यु हो गयी । हलीमा धाया ने 5 वर्ष तक आपको दूध पिलाया । 6 साल की उम्र में मां भी चल बसीं । पितामह अब्दुल मुत्तलिब ने बालक को संभाला । 9 साल की उम्र में वे भी चल बसे । 10 वर्ष की आयु में मुहम्मद (सल्ल०) पहाड़ियों पर बकरियां चराया करते थे । 12 साल की आयु में चचा अबू तालिब के साथ व्यापार के लिए शाम देश को गये । वहां पर बुहैरह नामक ईसाई राहिब से भेंट हुई, जिस पर मुहम्मद (सल्ल०) के बुद्धि-चातुर्य का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा । 10 वर्ष की आयु में उकाज़ के मेले के मौक़े पर किसी एक क़बीले द्वारा दूसरे क़बीले पर उच्चता प्रकट करने के लिए दोनों में ख़ूनख़राबा हुआ जो दस वर्ष तक जारी रहा । जिसने भी आपके समक्ष तत्कालीन जीवन का ख़ाका उपस्थित कर दिया ।

धीरे-धीरे मुहम्मद साहब (सल्ल०) की ईमानदारी के कारण लोग आपको 'अल-अमीन' (सच्चा, ईमानदार, धरोहर रक्षक) के नाम से पुकारने लगे ।

### हज़रत ख़दीजा से शादी

ख़दीजा (रज़ि०) नाम की एक मालदार विधवा जो मक्के की 'मलिकुत्तज्जार' (व्यापारी-साम्राज्ञी) थीं, ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ईमानदार और सच्चरित्रता को देखकर अपने यहां रख लिया और अपना एजेंट बनाकर शाम देश भेजा । इस यात्रा ने आपके समक्ष विश्व का चित्र खींच दिया । शाम देश में ईसाई महंतों से बात हुई । ख़दीजा आपके आचरण के साथ ही व्यापार में जो लाभ हुआ था, उससे भी प्रभावित हुईं । फिर आपकी शादी ख़दीजा से हो गयी । उस समय मुहम्मद (सल्ल०) की आयु 25 वर्ष और ख़दीजा की 40 वर्ष थी ।

उस समय झगड़ों का निर्णय क़बीलों के सरदारों द्वारा

होता था । यात्री की रक्षा का कोई प्रश्न नहीं था । लोगों को लूट लिया जाता था । यात्रियों की रक्षा के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने 'हिलफ़ुलफ़ज़ूल' नामक समिति बनायी । उसके सदस्य को शपथ लेनी पड़ती थी कि वह समस्त दुखिया परदेशियों की सेवा करेगा । समिति का नाम चार नवजवानों फ़ज़ल, फ़ज़ाल, मुफ़ज़्ज़ल और फ़ुज़ैल की याद में रखा गया था, जो 50 वर्ष पूर्व लोगों की सेवा किया करते थे ।

आपकी सूझ-बूझ और अक़्लमन्दी के कारण संगे असवद को ठीक स्थान पर रखा गया । आप (सल्ल०) ने इस कार्य में महती भूमिका निभाई अन्यथा ख़ून-ख़राबा निश्चित था ।

### ईश्वर प्रेरणा

शुरू से ही मुहम्मद (सल्ल०) अपने देश की स्थिति पर विचार करते रहे । महीनों और बरसों आप मक्के के पास पहाड़ियों पर हिरा नाम की कंदरा में जाकर मनन किया करते थे । उन्होंने लंबे-लंबे उपवास रखे और ईश्वर से प्रार्थनाएं की । रात-रात भर रोये । जब आप 40 वर्ष के हुए तो एक रमज़ान की रात को आपको खुदा की रोशनी मिली । उस रोशनी में आपको अपनी क़ौम और समस्त मानवजाति के कल्याण का मार्ग दिखायी दिया । तभी से आप (सल्ल०) मानवीय कल्याण के काम में जुट गये ।

### शिक्षाओं का सार

आप (सल्ल०) की शिक्षाओं का सार असत्य को मिटाकर सत्य क़ायम करना और सांसारिक और पारलौकिक उन्नति करना है । आपकी शिक्षाओं में तौहीद (एकेश्वरवाद) की स्थापना, समस्त मानवजाति में परस्पर प्रेम और भ्रातृ-भाव की बुनियाद डालना और सबको इस दुनिया में नेक कामों की ओर लाना प्रमुख है ।

### क़ुरआन और उसकी शिक्षाएं

40 से 63 वर्ष तक आयु में आप (सल्ल०) पर वह्य के ज़रिये ईश्वरीय शिक्षाएं अवतरित होती रहीं । इनके संग्रह का नाम क़ुरआन मजीद है । जिस शिक्षा को जो सार ऊपर दिया गया है, उसको क़ुरआन में स्थान-स्थान पर 'अद-दीन' और 'अल-इस्लाम' के नाम से पुकारा गया है ।

क़ुरआन के अनुसार सभी ईशदूतों (पैग़म्बरों) ने इसी एक सच्चाई की शिक्षा दी है और यही मानवजाति का वास्तविक सनातन धर्म-इस्लाम है । क़ुरआन में है-"कोई ऐसी क़ौम नहीं, जिसमें (लोगों को) चेतावनी देने वाला कोई न कोई (पैग़म्बर) न हो चुका हो ।"

(क़ुरआन, 35:24)

"हर क़ौम में रसूल हुए हैं ।" (क़ुरआन, 10:47)

निस्संदेह तुम से पहले भी हमने रसूल भेजे हैं, जिनमें से कुछ का ज़िक्र हमने तुम से किया है और कुछ का नहीं किया । (क़ुरआन, 40:78)

क़ुरआन पैग़म्बरों को 'मुस्लिम' और उनकी शिक्षा को 'इस्लाम' कहता है । क़ुरआन विविध धर्मों में भेद पैदा हो जाने के कारण भी बताता है । एक 'शरअ' और 'मिनहाज' अर्थात देश और काल के अनुरूप विधि विधान, कर्मकांड पर स्वाभाविक भेद से अधिक ज़ोर दिया जाना और दूसरे धर्मानुयायियों की भ्रांतियां और उनकी स्वार्थपरता, जिसके कारण लोग ईशदूतों की शिक्षा से हटकर अलग-अलग गिरोह बनाकर बैठ गये और अपने कर्मकांड को अस्ली धर्म बताने लगे । पिछले ईशदूतों को मानना और इज़्ज़त करना क़ुरआन हर मुसलमान का कर्तव्य क़रार देता है । क़ुरआन में है-"हम उनमें किसी तरह का फ़र्क़ नहीं करते ।"

(क़ुरआन, 3:84)

और उनमें से किसी एक की भी नाक़दरी करने वाले को 'काफ़िर' बनाता है । क़ुरआन में आया है-"यही लोग सचमुच 'काफ़िर' है । (क़ुरआन, 4:150-151)

"पैग़म्बर (सल्ल०) कोई निराले रसूल नहीं है ।"

(क़ुरआन, 46:9)

सभी रसूलों के धर्म सच्चे हैं, परंतु उनके अनुयायियों ने स्वार्थवश भेद उत्पन्न करके नयी-नयी फ़िरक़ेबन्दियां बना ली है ।

वास्तव में इस्लाम की शिक्षा पुराने धर्म ग्रंथों में भी दी गयी है, यही शिक्षा इबराहीम (अलैहि०) और मूसा (अलैहि०) की पुस्तक में भी है ।

इस्लाम में अच्छे और बुरे कर्म वही ठहराये गये हैं, जिसे दूसरे धर्मों ने ठहराये हैं । इसलिए अच्छे कामों के लिए 'मारूफ़' अर्थात 'माने हुए' पहचाने हुए और बुरे कामों के लिए 'मुनकर' शब्द आया है, जिसका अर्थ है 'न माने हुए ।'

मानवजाति की सेवा, मानव पर दया, ईमानदारी, इन्साफ़, सच्चाई, नेकचलनी, दूसरे के अपराध को क्षमा करना, गुलामों को आज़ाद करना, स्त्रियों के अधिकार, अनाथों, बेकसों और विधवाओं का पालन-पोषण, आत्मसंयम आदि विषयों पर सैकड़ों आयतें और हदीसें उद्धृत की जा सकती हैं ।

### विरोध का प्रारंभ

कुरैश ही काबा और उसके 360 बुतों के पुजारी और संरक्षक थे । जब मुहम्मद (सल्ल०) ने एकेश्वरवाद को पुन: स्थापित किया तो उनकी जीविका खटायी में पड़ने लगी, तभी से विरोध शुरू हुआ ।

जैसे ही मुहम्मद (सल्ल०) की नसीहतों और उपदेशों का प्रभाव पड़ना शुरू हुआ, मक्कावासियों (कुरैश) ने तकलीफ़ और यंत्रणाएं देनी शुरू कर दीं । आप पर मैला और मुर्दा जानवरों की अंतड़ियां तक फेंकी गयीं । 3 वर्ष परिश्रम के बाद लगभग 20 लोगों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बात मान ली । इनमें कुछ तो हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) और हज़रत अली (रज़ि०) तथा हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के अलावा वे थे जो आपके निकट होने के कारण आपकी सच्चाई से अच्छी तरह परिचित थे और शेष अत्यंत निचले दर्जे के लोग थे । उन पर बड़े जुल्म तोड़े गये । थोड़े से उदाहरणों से उस समय की अवस्था का अनुमान किया जा सकता है ।

1. बिलाल (रज़ि०) जो हब्शा के एक गुलाम थे, को इस्लाम क़बूल करने के दंड में रेगिस्तान में लिटाकर एक भारी पत्थर उनके ऊपर रख दिया गया और इस्लाम छोड़ने को कहा गया । अबू बक्र (रज़ि०) ने मूल्य देकर उन्हें ख़रीद लिया और आज़ाद कर दिया ।

2. यासिर और उनकी पत्नी सुमैया को इस्लाम क़बूल करने के कारण बार्छियां भोंक-भोंककर मार डाला गया । उनके निर्दोष पुत्र अम्मार को इसी प्रकार की यंत्रणाएं दी गयीं ।

3. अदी के पुत्र ख़ुबैब को अत्यंत निर्दयता के साथ यंत्रणाएं दी गयीं । उनके हाथ-पैर एक-एक करके काट दिये गये, फिर भी उनके ईमान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

इसी प्रकार न जाने कितने ख़ुबैब शहीद हो गये ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने सन 610 ई० में ईश्वर के आदेशों और उसकी शिक्षाओं को फैलाना शुरू किया । फलस्वरूप आपका इतना ज़्यादा विरोध और दमन किया जाने लगा कि विवश होकर सन 615 ई० में आपने अपने अनुयायियों को हब्शा देश में वहां के ईसाई बादशाह के यहां आश्रय लेने को कहा । पहले 15 लोग वहां गये, धीरे-धीरे उनकी संख्या 101 तक पहुंच गयी । मक्कावासियों (कुरैश) ने वहां भी उनका पीछा किया । हब्शा के बादशाह से उन्हें वापस करने की मांग की, पर इसमें उन्हें सफलता न मिल सकी । जब यह दमन सफल न हो सका तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को लालच दिये गये, जिसका आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

### उमर (रज़ि०) का मुसलमान होना

नवजवान उमर कुरैश की ओर से हाथों में तलवार लेकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मारने के लिए निकले । रास्ते में उन्हें पता चला कि उनकी बहन और बहनोई दोनों ने इस्लाम क़बूल कर लिया है । वे पहले बहन के मकान की ओर बढ़े, तभी बाहर से कुरआन की आयतों की आवाज़ सुनायी दी, जो उसकी बहन पढ़ रही थी । अन्दर घुसकर उन्होंने एक वार किया और बहनोई को भी पीटा, पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । उसी समय कुछ आयतों पर उनकी दृष्टि पड़ी । उनका सीना इस्लाम के लिए खुल गया । उमर ने बहन से क्षमा मांगी और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से मिलकर इस्लाम क़बूल कर लिया ।

### बहिष्कार

उमर (रज़ि०) के इस्लाम क़बूल करने के पूर्व ही मुहम्मद (सल्ल०) के चचा अबू तालिब पर कुरैश ने ज़ोर देना शुरू किया कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को समझाएं कि आप अपना मिशन छोड़ दें । अबू तालिब ने समझाया भी, तो आप (सल्ल०) ने कहा, "क़सम उस ख़ुदा की, जिसके हाथों में मेरी जान है । यदि वे (कुरैश), सूरज को मेरे दाहिने हाथ पर और चांद को मेरे बाएं हाथ पर रखकर मुझे रोकना चाहें, तब भी जब तक ख़ुदा का हुक्म है, मैं अपने उद्देश्य से न हटूंगा ।" यह कहकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) रो पड़े । अबू तालिब ने कहा मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा । इसके बाद आपके अनुयायियों का बहिष्कार

किया जाने लगा, इस आशय का आज्ञा-पत्र भी लटका दिया गया ।

बहिष्कार के अंत होने के बाद अबू तालिब की मृत्यु हो गयी । अत्याचार का सिलसिला जारी रहा । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) मक्के के 62 मील उत्तर की ओर ताइफ़ नामक शहर में नसीहत करने के लिए गये तो वहां लोगों ने पत्थर मारकर आपको घायल कर दिया ।

### क़त्ल की योजना

धीरे-धीरे मदीने के लोगों ने, जो तीर्थ के उद्देश्य से मक्के आये थे, हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के उपदेशों को सुनकर मुसलमान बन गये । दो वर्ष के अन्दर उनकी संख्या बढ़ती गयी । यहां तक कि उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मदीना बुलाया । क़ुरैश के सरदार अबू सुफ़ियान को इस्लाम के प्रचार को देखकर अधिक आशंका हुई ।

सरदारों की बैठक हुई, निश्चित हुआ कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को देश निकाला दे दिया जाए, फिर सोचा गया कि मक्के के बाहर के लोग इस्लाम धर्म न स्वीकार कर लें, जिससे आप (सल्ल०) शक्तिशाली हो जाएं । अंत में क़त्ल करने की योजना बनी । हर कुटुम्ब के एक-एक जवान खंजर लेकर निकले, लेकिन असफल रहे । कबीर का एक पद है–

'राखन हारा साइयां, मार न सकिहै कोय ।'

### हिजरत

क़ुरैश के सरदारों की उक्त तजवीज़ से पहले मदीना निवासियों का निमंत्रण स्वीकार किया जा चुका था । सन 622 ई० में मार्ग के कष्टों और आक्रमणों को झेलते हुए 286 मील चलकर मुहम्मद (सल्ल०) मक्के से मदीना पहुंचे । आप (सल्ल०) लगभग दो सौ मुसलमानों को अलग-अलग गिरोहों में पहले ही मदीना भेज चुके थे ।

मदीने में इस्लाम फैलने लगा । मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के पैग़म्बर के नाम से और राजनैतिक शासक के नाम से जाने, जाने लगे । मक्कानिवासियों और मुसलमानों में युद्ध हुआ और 10 वर्ष के अन्दर मदीने पहुंचने से लेकर मृत्यु के समय तक लगभग पूरे अरब के लोगों ने इस्लाम क़बूल कर लिया । मक्के और ताइफ़ के लोगों ने भी इस्लाम क़बूल किया । अब अरब एक संयुक्त राष्ट्र बन गया । अंधविश्वास और भेदभावरहित एक नेक और स्वस्थ समाज हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने 23 वर्षों में क़ायम किया । यह एक चमत्कार है । पिछले ईशदूतों (पैग़म्बरों) में ऐसा उदाहरण नहीं मिलता ।

### लड़ाइयां

शासक और राजनीतिज्ञ की हैसियत से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दो और पहलुओं पर दृष्टि डालना समीचीन है । पहला यह कि जितने भी युद्धों में आप (सल्ल०) शामिल हुए या युद्ध करने की आज्ञा दी वे सब आत्म-रक्षा (Defensive) के लिए थे । मुसलमानों पर अत्याचार और मदीना पर आक्रमण किये जाने पर एक हद तक युद्ध करने की इजाज़त दी गयी । दूसरी ओर से आक्रमण हुए बिना और किसी क़बीले को तलवार के ज़ोर से मुसलमान करने के लिए उस पर आक्रमण नहीं किया गया ।

### ग़ैर-मुस्लिमों के साथ व्यवहार

शासक की हैसियत से हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ग़ैर-मुस्लिमों, यहां तक कि बुतपरस्तों को भी, सल्तनत के अन्दर रहकर अपने धार्मिक क्रिया-कर्म करने की आज़ादी दी । क़ुरआन में है–"धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं ।" यह क़ुरआन की मदनी आयत है और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तमाम ज़िन्दगी इस आयत की जीती-जागती व्याख्या है । इसके प्रमाण में ईसाइयों, यहूदियों और दूसरे धर्मावलंबियों के साथ समय-समय पर आप (सल्ल०) के जो अहदनामे (संधि पत्र) हुए, वे आज भी मौजूद हैं ।

### आप (सल्ल०) का विवाह

आपके जीवन पर सबसे अधिक आक्षेप आपके विवाहों पर किया जाता है । आप (सल्ल०) की पहली शादी 25 वर्ष की उम्र में 40 वर्षीया ख़दीजा (रज़ि०) से हुई । 65 वर्ष की आयु में ख़दीज़ा (रज़ि०) की मृत्यु हो गयी, उस समय मुहम्मद साहब (सल्ल०) 50 वर्ष के थे । ख़दीजा (रज़ि०) के जीवन में मुहम्मद साहब (सल्ल०) ने दूसरा विवाह नहीं किया और यह उस ज़माने में, जबकि बहुविवाह का लगभग समस्त संसार में और विशेषकर अरब में प्रचलन था । शेष विवाह ख़दीजा (रज़ि०) के मृत्यु के एक वर्ष बाद अंतिम 12 वर्ष के अन्दर हुए । आप (सल्ल०) की पत्नियों में आठ विधवा थीं और अधिकतर अधिक आयु की थीं । यदि

समस्त शादियों का इतिहास निष्पक्ष होकर पढ़ा जाए तो ज्ञात होगा कि इनमें से प्रत्येक का एक भारी सामाजिक अथवा राजनैतिक पहलू था । उस युग में दो क़बीलों में सुलह और ऐक्य पैदा करने का प्राय: यही सबसे अच्छा उपाया होता था, इसमें वासना की कोई बात नहीं थी ।

### तपस्या का जीवन

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र ज़िन्दगी तपस्या की थी । आप (सल्ल०) प्राय: अल्प भोजन करते थे । अपने कपड़ों पर खुद पैबंद लगा लेते, चप्पल की गांठ लगा लेते, ऊंटों का खरैरा करते और बकरियों को स्वयं दुहते थे । आप (सल्ल०) स्वयं अपने घर में झाड़ू देते । राजकोष, ज़कात और सदक़े से कौड़ी भी हराम थी । बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ में लिखा है कि, "कभी-कभी भूख के मारे हज़रत (सल्ल०) के पेट पर पत्थर बंधा रहता था ।" आप (सल्ल०) प्राय: खजूर की चटायी या नंगी ज़मीन पर सोते थे । एक बार किसी ने गद्दा बिछा देने को कहा, परन्तु आप ने यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि, "मैं आराम करने के लिए पैदा नहीं हुआ ।" मृत्यु के समय आपका कवच 20 साअ (डेढ़ मन से कुछ कम) जौ के बदले में गिरवी रखा था । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के शरीर का कपड़ा अधिकतर बेसिला रहता था । आप (सल्ल०) प्राय: केवल एक चादर पहने रहते थे, जिसके सिरे गर्दन के पीछे कंधों पर बंधे रहते थे । अनेक बार आप नंगे पांव और नंगे सिर रहते थे ।

### उपसंहार

मुसलमान होना ज़रा कठिन है । मुझे आशंका है कि कहीं प्रचलित अर्थों में मुसलमान कहलाने वाले लोग दूसरे मज़हबी गिरोहों की भ्रांतियों के शिकार न हो जाएं । कुरआन की शिक्षाओं की मुसलमानों की मौजूदा ज़िन्दगी के साथ तुलना करते हुए मेरी यह आशंका कुछ ज़ोर पकड़ने लगती है ।

कुरआन विभिन्न व्याख्याओं और भाष्यों की एक व्याख्या है, जो मुझे सबसे अधिक पसन्द आयी है । मेरा दावा है कि मेरे दिल में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के प्रति किसी मुसलमान से कम श्रद्धा नहीं है । मुझे पक्का यक़ीन है कि कुरआन प्रेम धर्म की शिक्षा देता है ।

कविता

## मां, तुझे सलाम !

"मां"
कहते ही
याद आता
एक हंसता-मुस्कुराता चेहरा
तपते हृदय पर,
बादल बन, बरस जाता
हर समस्या का समाधान
होता मां के पास
न जाने कैसे
वो सब ये करती
सुबह जल्दी उठती
सबकी पसन्दीदा
वस्तुएं बनाती
सखी बन
मुझसे बतियाती
दुआएं देती
प्रार्थना करती
ममता लुटाती
सर्वस्व वार देती
मां
आज हमारे बीच
न होकर भी
कहीं आस-पास ही है
जैसे
सूरज से किरण
पेड़ से छाया
जल से तरंग
अलग नहीं होती
वैसे मां हर पल
मेरे पास ही है
"मां ! तुझे सलाम" ।

● डॉ० प्रीत अरोड़ा

Md. Rashid
9835125717

# N. S. ENCLAVE

Masud Ahmad
9431107797

आप मकान,
दुकान, कोठी,
रिहाइशी मकान एवं
सस्ते और सुन्दर
प्लाट एवं फ्लैट
के लिए
संपर्क करें।



साथ में
बी॰ एड॰ कॉलेज
एवं
इंजीनियरिंग कॉलेज
की भी सुविधा
उपलब्ध है।

साथ में मस्जिद एवं क़ब्रिस्तान भी है।

## नग़मा ड्रेसेज

हमारे यहां फैंसी साड़ियां, रेडिमेड ड्रेस, टी शर्ट,
बाबा सूट, फ्रॉक, मिडी, नाइटी, स्कूल ड्रेस,
जींस पैंट एवं फैंसी रेडिमेड होजरी वस्त्रों के लिए पधारें।

**OFFICE CONTACT : NAGMA DRESSES**
Booti Chowk, Dubey Market, Ranchi (Jharkhand)

**CONTACT No. 2** Masud Ahmad, Hamid Book Depot,
Opp. Urdu Library,
Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Mobile : 09431107797

# फ़ातिमा को भी सज़ा दी जाती

■ ख़ुर्रम मुराद

मक्का में एक औरत रहती थी । वह मख़ज़ूम क़बीले के एक प्रतिष्ठित और कुलीन परिवार की थी । एकबार उसने चोरी की और पकड़ी गयी । परिणामस्वरूप उसे उसका हाथ काटने की सज़ा मिली । उस औरत का नाम फ़ातिमा था । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की बेटी का भी यही नाम था । चोरी की यह घटना मक्का में घटित हुई । अभी निकट-काल ही में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मक्का पर विजय प्राप्त की थी । उस समय तक बहुत-से लोग इस्लाम क़बूल कर चुके थे । लेकिन वे न तो अभी अच्छे मुसलमान बन पाये थे और न ही इस्लामी न्याय के उन नये आदर्शों के अनुरूप अपने को ढाल सके थे, जिनमें अपराध करने पर सभी मुसलमानों के साथ, चाहे वे जन्मजात कुलीन हों या न हों, एक ही तरह का व्यवहार किया जाता है ।

इस्लाम के पूर्व इन जैसे कुलीन लोगों के लिए जो क़ानून था उससे भिन्न क़ानून उन लोगों के लिए था, जो कुलीन नहीं थे । उनमें की एक ऊंचे घराने की अपराधी औरत को अंतत: सज़ा मिलकर रहेगी–इस बात से वे ख़ुश न थे । वे कहने लगे, "यह कैसे हो सकता है ? क्या उसे बचाने के लिए कोई राह नहीं निकल सकती ?" परेशानी बढ़ती ही गयी । प्रश्न यह था कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को इस बात पर कैसे सहमत किया जाए कि फ़ातिमा को दंड से मुक्त रखा जाए । वे भली-भांति जानते थे कि अल्लाह की निर्धारित की हुई सज़ा में नर्मी बरतने के लिए आपसे कहना व्यर्थ होगा । काफ़ी उधेड़बुन के बाद उन्होंने इस कार्य में उसामह बिन ज़ैद की सहायता लेने का फ़ैसला किया । आपको याद होगा कि ज़ैद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सेवक और आपके मुंहबोले बेटे थे और वे सबसे पहले होने वाले चार मुसलमानों में से एक थे । स्वभावत: नबी (सल्ल०) को उसामह से वैसा ही प्रेम था जैसा कि ज़ैद से । इसीलिए मख़ज़ूम क़बीले के लोगों ने सोचा कि यदि उसामह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से बात करें तो शायद फ़ातिमा को क्षमा-दान मिल जाए । उसामह अभी किशोर ही थे । एक किशोर बच्चा सामान्यत: अधिक साहसी होता है और उसमें इसकी बड़ी उत्सुकता होती है कि वह ऐसा कार्य कर दिखाये, जो उसके बड़ों की नज़र में महत्व रखता हो । जब भी मख़ज़ूम क़बीले के कुलीन घराने का कोई व्यक्ति उनके पास मदद के लिए आता तो वह इसे अपने लिए बहुत गर्व की बात समझते ।

वे लोग उसामह के पास गये और कहा–"उसामह निश्चय ही तुम मेरी परेशानी समझ सकते हो । फ़ातिमा को देखो, वह कैसी मासूम बेटी है । क्या उसे आम चोरों की तरह सज़ा दी जाएगी ? वह कैसे सोच सकती थी कि एक छोटी-सी भूल की उसे इतनी बड़ी क़ीमत अदा करनी पड़ेगी । ये क़ानून हमारे लिए नये हैं, जिनमें छोटे-बड़े का कोई अन्तर नहीं–सबके साथ समान व्यवहार का प्रावधान है । हम लोग इनका इतना शीघ्र पालन नहीं कर सकेंगे । हम लोग अपने जीवन भर की आदतों को कुछ हफ़्तों में कैसे बदल सकते हैं ? वास्तव में यह हम जैसे एक प्रतिष्ठित परिवार के लिए अत्यंत अपमानजनक बात है ।"

यह सब सुनने के बाद उसामह ने उनसे अपने को सहमत पाया कि दूसरों की तरह उसे दंड देना अनुचित होगा । उसके लोग उच्च कुल के हैं । उसामह ने उन्हें वचन दिया कि वे अपनी तरफ़ से नबी (सल्ल०) को इस बात पर राज़ी करने की पूरी कोशिश करेंगे कि आप (सल्ल०) फ़ातिमा के मामले में नर्मी बरतें । उन्होंने कहा, "मुझ पर भरोसा करें मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से बात करूंगा और तुम्हें और तुम्हारी बेटी को बदनामी से बचाने की पूरी कोशिश करूंगा ।"

उसामह अवसर की प्रतीक्षा करते रहे, यहां तक कि उन्होंने पैग़म्बर (सल्ल०) को अकेले में पा लिया और अपनी बात कहनी शुरू की, "हे अल्लाह के रसूल ! क्या आपने उस बेचारी के विषय में सुना है जिसका नाम वही है, जो आपकी बेटी फ़ातिमा का है ? उस पर चोरी करने का इल्ज़ाम है और अब उसे इसकी सज़ा मिलने वाली है । यह

उस नवयौवना के लिए वास्तव में एक भयावह चीज़ है, जो मख़ज़ूम क़बीले के प्रतिष्ठित परिवार की एक औरत है । उसके मामले में तो आम नीति से हटकर कुछ करना होगा । उसके परिवार में कभी किसी को किसी अपराध के लिए सज़ा नहीं मिली ।''

उसामह ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, ''मक्का वालों के लिए न्याय के ये मानदंड बिल्कुल नये हैं । अभी ये नहीं जान सके हैं कि क़ानून तो उतना ही सम्मानित व्यक्ति पर लागू होगा, जितना कि वह साधारण व्यक्ति पर लागू होता है । क्या यह अधिक समझदारी और सलामती की बात नहीं होगी कि लोगों में इस प्रकार की सज़ाएं धीरे-धीरे लागू की जाएं और लोगों को इसका समय दिया जाए कि वे अपने को इसके अनुकूल बना सकें, और इस प्रकार नवमुस्लिमों में अशांति और असंतोष के पैदा होने की संभावना से बचा जा सके ।''

(शेष पृष्ठ 36 पर)

# मानवता के संरक्षक मुहम्मद (स०)

❖ विष्णु प्रभाकर

मानवता आख़िर है क्या ? क्या उसका संबंध मात्र मानव से है, वे क्या उसकी परिधि से बाहर है ? जननी और मां दोनों शब्द समानार्थक माने जाते हैं । जननी अपने जने को प्यार करती है । स्वाभाविक है; लेकिन मां के साथ जनने की कोई शर्त नहीं है । सब उसके हैं । वह सबकी है । सबको प्यार करती है ।

मानवता की परिधि मां की तरह असीम है । मानवीय कल्याण और समवेदन जीव मात्र के संदर्भ में ही सार्थक हो सकते हैं, हुए हैं । इस्लाम धर्म के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के संबंध में यह उतना ही सच है, जितना किसी और के । कथा आती है कि एक बार वे एक बगीचे में गये । वहां बंधा हुआ था एक ऊंट । जैसे ही उसने पैग़म्बर को देखा, वह अत्यंत करुण स्वर में डकराने लगा । उसकी आंखें बरसने लगी ।

उसका वह करुण स्वर मुहम्मद साहब को कहीं गहरे छू गया । वह तुरन्त उसके पास पहुंचे । उसे पुचकारा । उसके सिर पर, गर्दन पर हाथ फेरा । उसे बार-बार सहलाया, थपथपाया । जब कहीं जाकर वह शांत हुआ ।

उसके बाद मुहम्मद साहब ने उसके मालिक को बुला भेजा । कहा, ''यह ऊंट पशु है । बोल नहीं सकता । इसलिए क्या तुम इस पर अत्याचार करते ही रहोगे ? अल्लाह से भी नहीं डरोगे ? अल्लाह ने ही तो तुम को इसका मालिक बनाया है ।'' ऊंट के मालिक ने पूछा, ''पर मैंने इस पर क्या अत्याचार किया है ?''

मुहम्मद साहब बोले ''इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इससे ज़रूरत से ज़्यादा काम लेते हो । इसे भूखा रखते हो । क्या तुम्हारे ऐसा करने से इसे दुख नहीं होता ? क्या इसके जिस्म में जान नहीं है, वैसे ही जैसे तुम्हारे जिस्म में है, मेरे जिस्म में है ? तुमको पूरा खाना न मिले तो ?''

सुनकर मालिक ने सिर झुका लिया ।

इसी प्रकार एक आदमी उनके पास आया । उसके पास एक दरी थी । उसमें कुछ बंधा हुआ था । मुहम्मद साहब ने पूछा, ''क्या बंधा है तुम्हारी इस दरी में ?''

उस आदमी ने जबाब दिया, ''ऐ रसूलुल्लाह, मैं जंगल के बीच में से जा रहा था । एकाएक चिड़ियों के बच्चों की आवाज़ मेरे कानों में पड़ी । उधर जाकर देखा तो वहां कई बच्चों को पाया । उन्हें उठा कर मैंने दरी में बांध लिया । तभी आ पहुंची उनकी मां । बच्चों को बंधा हुआ देखकर वह तड़फड़ा उठी । मैंने दरी खोल दी । मां बच्चों से आ मिली । मैंने उसे भी दरी में लपेट लिया । वे ही सब इस दरी में बन्द...''

इससे पहले कि वह अपनी पूरी बात कर पाता, मुहम्मद साहब ने उसे आदेश दिया, ''जाओ, तुरन्त इस चिड़िया मां और बच्चों को वहीं छोड़ आओ, जहां से पकड़ कर लाए हो ।''

वह आदमी तुरन्त उलटे पैरों लौट गया ।

## इस्लामी साहित्य संगम की गोष्ठी

# डॉ॰ ज्ञान सिंह मान की पुस्तक एवं 'सदाकांक्षा' के संस्मरण अंक की समीक्षा, पद्य खंड भी ज़ोरदार रहा

● संपादन प्रभाग

इस्लामी साहित्य संगम की साहित्यिक गोष्ठी हिंदी, संस्कृत और अंग्रेज़ी उद्भट विद्वान, वैदिक स्कॉलर एवं साहित्यकार डॉ॰ ज्ञानचन्द्र की अध्यक्षता में विगत सात अक्तूबर को संपन्न हुई । पूर्व गोष्ठियों की भांति इस गोष्ठी के भी दो खंड–गद्य और पद्य–रखे गये । नयी दिल्ली के जामिया नगर स्थित 'कान्ति' कार्यालय के सभागार में आयोजित इस गोष्ठी में हिन्दी और उर्दू के कई लब्ध प्रतिष्ठ रचनाकारों ने भाग लिया । गोष्ठी का आरंभ इदारा अदब इस्लामी के महासचिव श्री इन्तिज़ार नईम के कुरआन-पाठ से हुआ । गद्य खंड के दो विषय थे–हिन्दी के शिरोमणि साहित्यकार डॉ॰ ज्ञान सिंह मान की सद्य प्रकाशित कृति 'एक लेखनी, साठ रंग'-'बूंद-बूंद बरसे बदरा' की समीक्षा, जिसकी समीक्षा प्रस्तुत की साहित्य संगम के संयोजक एवं गोष्ठी के संचालक डॉ॰ मुहम्मद अहमद ने । और दूसरा विषय था–'सदाकांक्षा' के संस्मरण अंक की समीक्षा, जिसकी समीक्षा पेश की 'सदाकांक्षा' के सम्पादकीय सहयोगी श्री इलियास हुसैन ने ।

डॉ॰ अहमद ने कहा कि यह मान जी की बड़ी अनुकम्पा है कि मेरे पास अपनी प्रत्येक नव-प्रकाशित कृति ज़रूर भेजते हैं । आभारी हूं । इस पुस्तक में आपके जीवन की कुछ महत्वपूर्ण 'रेखाएं' हैं । संक्षिप्त जीवन-वृत्त है, जो बहुत ही महत्वपूर्ण और पठनीय है । पुस्तक के अंत में 'बूंद-बूंद बरसे बदरा' शीर्षक सूत्र-काव्य है, जो अत्यंत स्तरीय है । वे बड़े भाव-प्रवण कवि हैं । देखिये चंद उदाहरण–स्वाति को ही क्यों न भर ले, फिर से अंजलि में, इन सागरों में तो, अब मोती नहीं मिलते । ...सत्ता का सत्य, फूल-सा खिलता रहा, सेवा का आदर्श, धूल में मिलता रहा । ...हज़ारों साल जीने की/ शुभकामनाएं देते हैं वो/एक दिन के लिए भी मगर/मिलने की बात नहीं करते । ...अपने चेहरे को तो मैंने/बार-बार धोया/भीतर के मुखौटे को मगर/ एक बार भी नहीं खोया ।




डॉ॰ ज्ञान चन्द्र (मध्य में), उनके दायें हैं डॉ॰ गोपेश कुमार शर्मा, वैद्य गोपाल कृष्ण जैन, शकीलुर्रहमान, मुशर्रफ़ अली, ज़मीर आज़मी और डॉ॰ ज्ञान चन्द्र के बायें हैं डॉ॰ मुहम्मद अहमद, इन्तिज़ार नईम, मुहम्मद इलियास हुसैन और गुलज़ार सहराई ।

उन्होंने कहा कि आदरणीय ज्ञान जी राजकीय कॉलेज, लुधियाना (पंजाब) के पूर्व प्राचार्य हैं । आप बहुत-सी साहित्यिक संस्थाओं/संगठनों के पूर्व और वर्तमान पदाधिकारी हैं या उनसे संबद्ध हैं । 20 से अधिक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त डॉ॰ मान जी कई पुस्तकों के लेखक हैं ।

श्री हुसैन ने 'सदाकांक्षा' का सफ़रनामा पेश किया । संस्मरण अंक की विशेषताओं का उल्लेख किया । बताया कि सभी रचनाएं मानव-मूल्यों पर आधारित हैं । 'सदाकांक्षा' के सम्पादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद ने भावी अंकों की मंसूबाबंदी पर प्रकाश डाला । पद्य खंड भी बड़ा ज़ोरदार रहा ।

वैद्य गोपाल कृष्ण जैन ने इस्लामी साहित्य संगम के कार्यों की सराहना की और 'यथाशा' की एक रचना (नअत) की कई पंक्तियां पढ़ डालीं । अपना शेअर भी पेश किया । ज़मीर आज़मी ने कुछ इस तरह समां बांधा...रात को दिन नहीं कहा मैंने/बस इसी बात पर लड़ाई है...वो जब पूछेगा कह दूंगा/मेरा ईमां मेरी कमाई है...मैं तो प्यासा था, अब भी प्यासा हूं/साकिया तूने क्या पिलाई है ? डॉ॰ गोपेश कुमार शर्मा ने काव्य की भूमिका पर प्रकाश डाला । श्री मुहम्मद यूसुफ़ 'मुन्ना' ने 'राजनीति' शीर्षक लघुकथा पेश की, जिसको अच्छी सराहना मिली ।

हसनैन 'साईर' ने यह सुनाकर लोगों को मंत्र-मुग्ध कर दिया...उसने मंज़िल को पा लिया होता/कारवां गर धूप में चला होता...मार्का सर वह कर लिया होता/सर हथेली पर रख लिया होता । डॉ॰ ज्ञानचन्द्र ने संस्कृत में नअत पेश की, जिसे बहुत दाद मिली । हिन्दी में भी दो नअतें पेश कीं...गर आप हज़रत दुनिया में न आते/कहां से भला रोशनी लोग पाते । डॉ॰ साहब ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच पुल बांधने के साहित्य संगम के प्रयास को सराहा एवं इसकी आवश्यकता पर बल दिया ।

वरिष्ठ उर्दू शायर इन्तिज़ार नईम ने दो बड़ी प्रभावकारी रचनाएं प्रस्तुत कीं, एक रचना का शीर्षक था-'कभी मुंबई ऐसी भी थी' दूसरी ग़ज़ल थी, जिसका एक उम्दा शेअर यूं है-ये सुनती कम सुनाती है ज़्यादा/ज़रा दीवार से होशियार रहिये । डॉ॰ अहमद ने 'सद्भाव के फूल खिलाओ' शीर्षक अपनी नवरचित कविता पढ़ी । उनके धन्यवाद-ज्ञापन के साथ गोष्ठी सम्पन्न हुई ।

इस अवसर पर उपस्थित साहित्यसेवियों और साहित्य प्रेमियों में सर्वश्री नसीम ग़ाज़ी, शकीलुर्रहमान, मुशर्रफ़ अली, गुलज़ार सहराई, इरशाद अली, अशरफ़ अली बस्तवी, मौलाना अरशद सिराजुद्दीन, मुईनुद्दीन, क़ैसर ख़ान आदि शामिल थे ।

---

(पृष्ठ 34 का शेष)

उसामह जितनी शीघ्रता से बात कर सकते थे, कर रहे थे, तभी नबी (सल्ल॰) ने उनकी तरफ़ से मुंह फेर लिया और उसामह समझ गये कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) उनकी बातों से अप्रसन्न हो गये हैं और उनकी लंबी बात से आप (सल्ल॰) बहुत ऊब गये हैं-उसामह को अपनी बातों के ग़लत होने का एहसास हुआ । अतएव जब नबी (सल्ल॰) ने अपना मुंह उनकी ओर से फेर लिया, तो उसामह को इतना पश्चाताप हुआ कि लज्जा से उनका सिर झुक गया । आख़िर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा, "उसामह, मुझे तुम से बहुत प्रेम है, लेकिन सोचो कि तुम मुझसे क्या कह रहे हो ? तुम मुझ से अल्लाह के दिए हुए आदेश के पालन में नर्मी बरतने और उससे अलग रहने के लिए इसलिए कह रहे हो, क्योंकि सज़ा उसे मिल रही है, जिसका संबंध किसी ऊंचे घराने से है ?"

इस पर उसामह नबी (सल्ल॰) से विनम्र निवेदन करने लगे कि आप उनके लिए अल्लाह से प्रार्थना करें ।

शाम को नमाज़ के बाद उस रात नबी (सल्ल॰) लोगों को संबोधित करने के लिए खड़े हुए और कहा, "अल्लाह महान है । तुम से पहले की कई क़ौमों का पतन हुआ और वे कमज़ोर हुईं और अंततः विनष्ट होकर रहीं, सिर्फ़ इसलिए कि उनमें जब उच्च वर्ग का कोई व्यक्ति अपराध करता तो उसे वे छोड़ देते, और जब कमज़ोर वर्ग का कोई व्यक्ति वही अपराध करता तो उसे दंड देते । मैं क़सम खाता हूं उसकी, जिसके हाथ में मेरी जान है कि यदि मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती, तो मैं उसका भी हाथ काटने का आदेश देता ।" इस प्रकार उस न्याय की दृष्टि में बिना किसी भेदभाव के सारे लोग समान थे, जिसे अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने अपनाया था और क़ायम किया और जिसका अनुपालन बाद के उन बहुत-से लोगों ने किया, जिनको अपने भाई मुसलमानों पर शासन करने का अवसर मिला और जो अपने पैग़म्बर (सल्ल॰) के पद चिन्हों पर चलने वाले थे । (अंग्रेज़ी से अनुवाद : **जबीं अहमद**)

# एक-एक पंखुड़ी समेट कर हर अंक को फूल बनाया गया है

पत्रिका का नाम : **कान्ति**
संपादक : **डॉ॰ मुहम्मद अहमद**
समीक्षक : **अमित कुमार लाडी**

'कान्ति' को पढ़ा, दिल (दिमाग़) बाग़-बाग़ हो गया। संपादक के श्रम ओर विवेक की झलक पत्रिका के प्राप्त हर अंक में देखी जा सकती है। अच्छी सामग्री चयन करने के लिए संपादक महोदय बधायी के पात्र हैं।

सबसे पहले जब मैंने पत्रिका के कुछ अंकों पर सरसरी निगाह डाली तो पाया कि यह पत्रिका बहुत ही अच्छी है। हर विषय के संबंध में इस पत्रिका में काफ़ी जानकारी है। मुझे पूरा यक़ीन था कि पूरी पात्रिका पढ़ने के बाद ख़ूब आनंद मिलने वाला है। ठीक ऐसा ही हुआ। जैसे-जैसे मैं अंकों को पढ़ता गया, वैसे-वैसे ख़ूब सारा आनंद मिलता गया और साथ ही जानकारी में भी काफ़ी बढ़ोतरी हुई।

पत्रिका के हर अंक में विभिन्न विषयों से संबंधित आलेख मिलते हैं जैसे-पूंजीवादी दानव की पहचान, आज़ादी का मंतव्य क्या है ?, आज के नेता और राजनीति, सम्मानीय हैं वरिष्ठजन, एकेश्वरवाद की मौलिकता, हमारा वास्तविक प्रेम-पात्र कौन ?, इस्लाम में ही वास्तविक शांति, आदि शीर्षक के तहत बहुत से विषयों को कवर करने वाली पत्रिका है 'कान्ति'।

द॰ 2012 अंक की अपनी संपादकीय में संपादक महोदय ने ख़ूब लिखा है-भ्रष्ट आचार-विचार पर क़ाबू पाने और भ्रष्टता को शिष्टता में परिवर्तित करने के लिए आवश्यक हैं कि इन्सान मौलिक धारणाओं को ही अपनाये, ताकि उसका सांसारिक जीवन भी विकारों और भ्रष्ट आचार-विचार से मुक्त हो सके।

एक-एक पंखुड़ी समेटकर हर अंक को फूल बनाया गया है, यह संपादक महोदय की मेहनत का ही कमाल कहा जा सकता है। उन्हें मुबारकबाद। हर अंक अत्यंत रोचक, अति महत्वपूर्ण एवं संग्रहणीय होता है।


Prop : Abid Hussain
09413037652
09252235194

Shop : Mujahid Hussain
09214747172

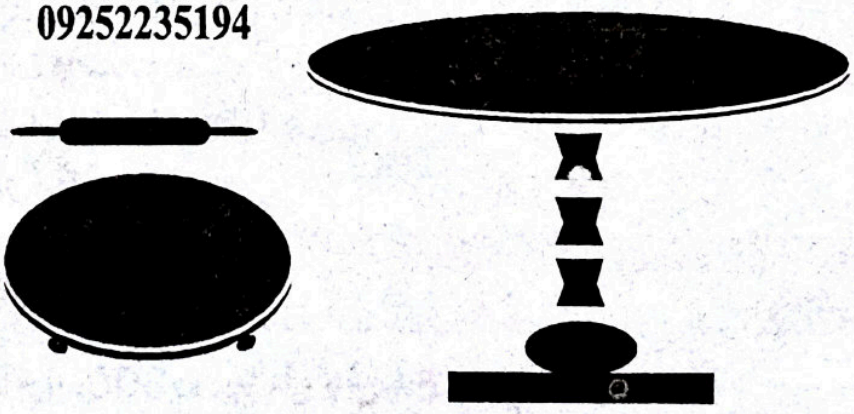

कान्ति मार्बल हैंडीक्राफ्ट

सभी प्रकार के वन पीस और ज्वाइंट पीस चकलों के निर्माता व थोक विक्रेता, मार्बल के फव्वारें तथा टेबल, टेलीफ़ोन स्टेंड, नोजल लैंप, गमले, घड़ी व फैंसी आइटम

Shop : Hotel Moti Mahal, Manglana Road, Makrana-341505
Fact : Bypass Mor, Opp : Sai Kirpa Petrol Pump, Makrana Road, Borawad (Raj.)

# آپ اخبار کس لیے پڑھتے ہیں

**کیا** ☆ محض تفریح طبع کے لیے یا صرف وقت گزاری کے لیے؟

**یا پھر** ☆ مخالفوں کو صرف برا بھلا کہہ کر تھوڑی دیر کو خوش ہونے کے لیے؟

**اگر ایسا ہے** تو اس کا مطلب یہ ہے کہ آپ ملک کے حالات اور ملت کے مسائل کے سلسلے میں سنجیدہ نہیں ہیں

## اخبار پڑھنے کا مقصد ہونا چاہئے

☆ حالات وواقعات سے ان کے صحیح تناظر میں باخبر رہنا۔

☆ مخالفتوں کا جواب معقول اور مدلل طریقے سے دینا۔

☆ مسائل پر جذباتی انداز کے بجائے سنجیدگی سے غور کرنا۔

☆ انفارمیشن اور پروپیگنڈے کے فرق کو سمجھنا۔

☆ اسلام اور مسلمانوں کی مخالفت کرنے والوں کی نفسیات کا ادراک کرنا۔

**اگر آپ کو ھماری اس بات سے اتفاق ھے تو یقین مانئے**

## دعوت ہی آپ کا اخبار ہے

www.dawatonline.com

**جو**

☆ ملک کے استحکام، سلامتی، ترقی اور خوش حالی کے لیے ٹھوس تجاویز پیش کرتا ہے۔

☆ ملکی اور بین الاقوامی حالات پر بے لاگ رائے کا اظہار کرتا ہے۔

☆ اسلام اور امت مسلمہ کے خلاف کیے جانے والے پروپیگنڈے کا توڑ کرتا ہے۔

☆ برادرانِ وطن کے سامنے اسلام اور مسلمانوں کی صحیح تصویر رکھتا ہے۔

## دعوت خود پڑھئے اوروں کو پڑھوایئے۔

www.dawatonline.com

**زرتعاون**: سالانہ -/600 روپئے، ششماہی -/300 روپئے، فی کاپی -/5 روپئے

بیرون ملک سالانہ -/10,000 روپئے، ششماہی -/5,000 روپئے

اپنے قریبی ہاکر سے طلب کیجیے یا ہمیں لکھئے، نمونہ کی کاپی مفت بھیجی جاتی ہے۔

سہ روزہ دعوت میں اشتہار دے کر اپنی تجارت کو فروغ دیجئے

**Manager Dawat (Urdu Sehroza)**

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-11 0025

Phone : 09818799113, (011) 26949539, Fax : (011) 26958816

E-mail : dawattrust@yahoo.co.in, dawatnews@indiatimes.com

# गैंडे का सींग

● इक़बाल अंसारी

''यार रैफेल'' पेकर ने अविश्वास में धीरे से सर हिलाया, मेरी बुद्धि अब भी यह मानने को तैयार नहीं कि अकूल बेल, कोबरा की रीढ़ की हड्डी और गैंडे के सींग से कोई ऐसी दवा तैयार हो जाएगी जिससे हर बीमारी का इलाज हो जाए । पैनेशिया की कल्पना ही मुझे हास्यस्पद लगती है ।

लेकिन मुझे नहीं लगती रैफेल के चेहरे पर विश्वास था और स्वर में भी । अगर मुझे शत-प्रतिशत विश्वास नहीं होता तो मैं यह किताब प्राप्त करने के लिए 107 वर्ष के उस चीनी हूफान ची को कभी जान से नहीं मारता–नेशनल ग्रीन ज़ूलोजिकल होम के सांपों के रखवाले को पचास हज़ार रुपये रिश्वत देकर कोबरा नहीं प्राप्त करता ।

सवाल है कि चीनी में लिखी इस किताब पर विश्वास ही क्यों किया जाए ? पेकर ने कहा विश्वास न करने का भी कोई कारण नहीं, रैफेल गंभीरता से बोला, यह तो तुम्हें भी मालूम है, बीजिंग में दस वर्ष रह चुके हो, कि चीनी अपनी हर बात रहस्य रखते हैं । उनकी न्यूक्लियर, उनके कम्प्यूटर, उनकी दवाइयां सब कुछ बाक़ी दुनिया से अलग हैं । ये अपने रहस्य किसी को नहीं देते । विशेष रूप से दवाओं के बारे में उनकी जानकारियां आश्चर्यजनक हैं, जो स्वयं उन तक ही सीमित हैं । दुनिया में है कोई ऐसा जो चीते की हड्डियों, बंदर की खोपड़ियों, गीदड़ के दांतों और शेर के नाख़ूनों से दवाए बनाता हो ? केवल अक्युपंकचर के बारे में तो अपना ज्ञान उन्होंने दुनिया को दिया है ।

हां यह बात तो है, पैकर ने कुछ सोचते हुए कहा । अब सुनो गेंडे के सींग की बात, रैफेल ने कहा । गेंडे के सींग में प्रकृति ने बड़ी आश्चर्यजनक विशेषताएं दी हैं । यह सच्चाई है कि प्राचीन काल में राजे-महाराजे पीने वाली हर चीज़ गेंडे के सींग में पीते थे । अगर उसमें ज़हर होता था तो तुरन्त पता चल जाता था । एक लम्बे समय तक गैंडे के सींग का चूर्ण हर बीमारी की दवा के रूप में प्रयोग किया जाता था । प्राचीन मिस्र के लोग गैंडे के सींग की विशेषताओं से अवगत थे । प्राचीन चीन के लोग भी थे । यही कारण है कि इंडो चाइना में जहां एक समय हज़ारों गेंडे पाये जाते थे, आज एक गेंडा भी नहीं है । न ही शेर-चीते ही चीन में अब बचे हैं । भारत में भी गैंडा केवल असम और उत्तराखंड में पाये जाते हैं या अफ़्रीक़ा के कुछ देशों में । भारत और अफ़्रीक़ा दोनों जगह गैंडे के शिकार पर प्रतिबंध है ताकि गेंडे का वंश ही न ख़त्म हो जाए । फिर भी चोरी छुपे अफ़्रीक़ा में गैंडे का शिकार होता रहता है । दो हज़ार किलोग्राम वज़न का तेज़ दौड़ने वाला यह जानवर अफ़्रीक़ा से समाप्त होता जा रहा है ।

क्या अफ़्रीक़ा में भी गैंडे का शिकार सींग के लिए होता है, पेकर ने पूछा ।

नहीं रैफेल ने सर हिलाते हुए कहा अफ़्रीक़ा में गैंडे का शिकार उसके मांस और डेढ़ इंच मोटी उसकी खाल के लिए होता है, जिसे हाइड कहते हैं और जो बहुत महंगे दामों बिकती है । जहां तक अकून बेल का मामला है तो ये बेल यहां के समतल जंगलों में आसानी से उप़लब्ध है और धारवार रिजर्व फॉरेस्ट में भी । समस्या केवल गेंडे के सींग की है, लेकिन वह भी मिल जाएगा ।

इस देश के एक रिजर्व फॉरेस्ट के कार्यकर्ताओं के लिए 2-4 लाख रुपया बड़ी रक़म है । यह मेरा और हमारे पूरे समुदाय का सौभाग्य था कि मुझे इस चीनी किताब का पता चल गया । यह किताब तो मैंने प्राप्त कर ली, कोबरा भी प्राप्त कर लिया । लेकिन अब मेरी पूंजी समाप्त हो गयी है मुझे अपने समुदाय के किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो मेरे प्रोजेक्ट में पूंजी लगा सके । तुम चूंकि मेरे दोस्त हो और चीनी भाषा भी जानते हो इसलिए नज़र तुम पर गयी ।

ध्यान दोगे तो समझ जाओगे कि मेरे इस प्रोजेक्ट पर मेरे ही देश का नहीं दुनिया के किसी भी देश का कोई भी व्यक्ति पूंजी लगाने को तुरन्त तैयार हो जाएगा । दस-बीस हज़ार डॉलर ख़र्च करके कौन खरबपति बनना नहीं चाहेगा । एक बार गैंडे का सींग मिल जाए और पैनेशिया तैयार हो जाए...हम सारी दुनिया को लूट लेंगे...तुम्हें अगर अब भी

विश्वास नहीं हो रहा है तो तुम इन्कार कर सकते हो...।

मेरी केवल एक बात का जवाब दे दो, पेकर ने कहा हूफानची ने खुद ही पैनेशिया क्यों नहीं तैयार कर लिया ?

यह किताब सदियों पुरानी है, रैफेल ने लम्बी सांस खींचकर कहा । मुझे ऐसी कई किताबों के बारे में मालूम हुआ जब मैं शंघाई में अक्यूपंकचर पढ़ रहा था...इस किताब का लेखक कौन है, कोई नहीं जानता, यह कब और कहां लिखी गयी कोई नहीं जानता । कब मगध सम्राट लाइब्रेरी पहुंची इसकी भी जानकारी नहीं है । हूफानची को केवल यह पता चला था कि चीनी रसायन विज्ञान के विषय में कुछ बहुत महत्वपूर्ण किताबों गौतम नगर की मगध सम्राट लाइब्रेरी में हैं । मोटी पूंजी लेकर हूफानची गौतम नगर आया और एक होटल में ठहर गया । दूसरे दिन से वह मगध सम्राट लाइब्रेरी छानने लगा वहां यह चर्मी किताब उसके हाथ लग गयी । इधर मैं भी ऐसे ही किसी किताब की तलाश में गौतम नगर आया और मगध सम्राट लाइब्रेरी का कैटलॉग देखने लगा । वहीं हूफानची पर नज़र पड़ी । उसके और मगध सम्राट लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन के बीच चीनी भाषा में होने वाली बातचीत का एक-एक शब्द मैंने सुना और दिखाने को अंग्रेज़ी की एक मोटी-सी किताब के अध्ययन में डूबा रहा । मुझे देखकर कोई सोच भी नहीं सकता था कि मुझे चीनी भाषा आती होगी । उन दोनों के बीच 2 लाख में किताब का सौदा हो गया । हूफानची लाइब्रेरी से चला गया और ऐ घंटे में रुपये लेकर वापस आया । रुपया उसने चुपचाप लाइब्रेरियन को दिया । उसने चुपचाप चर्मी किताब उसके बैग में डाल दी । हूफानची अपने होटल चला गया । किताब में क्या था यह मुझे मालूम नहीं था । लेकिन जिस किताब के लिए 107 वर्ष का एक चीनी शंघाई से गौतम नगर तक की यात्रा करता है और दो लाख रुपये में लाइब्रेरी से उसे नाजायज़ तरीक़े से प्राप्त करता है, इस किताब के महत्व से इन्कार तो नहीं किया जा सकता । अत: उसी रात मैंने हूफानची को उसके होटल के कमरे में गला दबाकर मार डाला और, किताब लेकर चला आया । जब किताब का अध्ययन किया तो पैनेशिया का फार्मूला हाथ लगा । हूफानची को इतना मौक़ा ही नहीं मिला कि वह चीन लौटता और किताब के फार्मूले पर काम शुरू करता ।

तो इस प्रकार तुम्हारा चीनी भाषा जानना काम आ गया और फिर तुरन्त ही किताब के महत्व का अंदाज़ा लगाना, हूफानची की हत्या करना और कोबरा प्राप्त करना । तुम सचमुच बहुत स्मार्ट हो, पेकर उसे सराहनीय दृष्टि से देखने लगा । ओ०के० मैं तुम्हारे साथ हूं, हम दोनों बराबर के हिस्सेदार होंगे ।

''स्पष्ट है'' कहकर रैफेल ने बड़ी गर्मजोशी से पेकर से हाथ मिलाया और फिर दोनों प्लानिंग करने लगे ।


## Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

*The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-*

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

**Kindly send your cheque/draft in favour of the society**

*(Q. Hoda)*
Chairman

*(Prof. M. B. Zaman)*
Secretary

**JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001**

चार दिन में पेकर ने ऐमेक्स के माध्यम से एक मोटी रक़म अपने शहर के बैंक से मंगवाली । उसी रात वे दोनों ट्रेन से धारवा के लिए निकल गये । अगले दिन के धारवा रिज़र्व फारेस्ट में थे ।

पांच लाख रुपये में जंगल के डायरेक्टर साहब इनकी बातें मान गये । फिर ये दोनों डायरेक्टर और पांच फील्ड वर्कर्स के साथ एक सुरक्षित स्थान पर घात लगाकर बैठ गये । पेकर के हाथ में उसका पिस्टल था । आधे घंटे के बाद एक गैंडा निशाने पर आ गया । उसकी कनपटी का निशाना लेकर पेकर ने तीन फ़ायर किये । पीड़ा में डूबी हुई तेज़ आवाज़ गैंडे के हलक़ से निकली और वह वहीं पर गिर गया । दो-तीन बार तड़पा और देखते-देखते उसकी पीड़ा भी समाप्त हो गयी और वह ख़ुद भी । रैफेल और पेकर ने उसकी सींग काटकर एक मोटे से प्लास्टिक के थैले में रख लिया । उस बड़े से जानवर के छोटे से चेहरे पर सींग की जगह वह बड़ा-सा कुरूप ज़ख़्म, ज़ख़्म के बजाय मानव बर्बरता का प्रतीक लग रहा था ।

फील्ड वर्कर्स गेंडे की क़ब्र खोद रहे थे । आधे घंटे में क़ब्र तैयार हो गयी । फिर आठों ने मिलकर एक घंटे की मेहनत के बाद गेंडे की लाश को क़ब्र में गिरा दिया ।

सात बजे रैफेल और पेकर ने रेलवे स्टेशन के सामने स्थित इकलौते होटल में खाना खाया और टिकट लेकर प्लेटफार्म पर आ गये, जहां सन्नाटा था ।

रैफेल के हाथ में जो प्लास्टिक का बैग था उसमें ढेरों अकून बेल भी थी जो उसने धारवा फारेस्ट से ही हासिल की थी । ठीक आठ बजे रोहेलखंड एक्सप्रेस आ गयी । पूरी ट्रेन में मुश्किल से 20 यात्री होंगे । फर्स्ट क्लास का कम्पार्टमेंट तो पूरा ख़ाली था । वे दोनों वहीं दरवाज़ा बन्द करके बैठ गये । 50 किलोमीटर तक लगातार जंगल से गुज़रने वाली ब्रांच लाइन की रात की इस ट्रेन में हमेशा ही बहुत कम यात्री होते थे ।

रैफेल और पेकर आमने-सामने की सीट पर बैठकर ऊंघ रहे थे, लेकिन दोनों के ज़ेहन जाग रहे थे ।

रैफेल सोच रहा था कि पैनेशिया अब मुझ से बहुत दूर नहीं, लेकिन पेकर ! आधे का हिस्सादार ! ...अभी कुछ देर में सो जाएगा और फिर इस जंगल के सियार, लकड़बग्घे, लोमरियां आदि शानदार दावत उड़ाएंगी । सुबह होने से पहले ही कुछ हड्डियां वहीं पड़ी रह जाएंगी और हड्डियों से कब किसी की शिनाख़्त हुई है ।

दूसरी ओर पेकर भी आंखें बन्द किये सोच रहा था कि पैनेशिया अब मुझ से दूर नहीं । मगर रैफेल ! जल्दी ही सो जाएगा और फिर..

एक हल्की-सी आवाज़ सुनकर उसने आंखें खोली ही थीं कि गैंडे का सींग रैफेल ने पूरी शक्ति से उसके सीने में उतार दिया ।

पेकर एक तेज़ और आश्चर्यजनक कराह के साथ अपनी सीट से ढलक कर कम्पार्टमेंट के फ़र्श पर आ गिरा । उसके सीने से बड़ी तेज़ी से ख़ून निकल कर उसकी सफ़ेद क़मीज़ को लाल कर रहा था । उसने रैफेल की ओर देखा । उसका चेहरा सपाट था । दूसरा वार करने के लिए उसने सींग सीधा किया । लेकिन इससे पहले कि वह वार कर पाता पेकर ने अपनी कमर से पिस्तौल निकाल कर उसकी सारी गोलियां रैफेल के सीने में पम्प कर दीं । हमला इतना असंभावित कि रैफेल अपने बचाव की बात सोच भी नहीं सका । सींग उसके हाथ से छूट कर सीट पर जा गिरा और वह ख़ुद फ़र्श पर...पेकर के पास ।

कम्पार्टमेंट के फ़र्श पर पड़ी दो इन्सानी लाशों के सामने एक सीट पर ख़ून में सना हुआ गेंडे का सींग बड़ा जीवित लग रहा था । ट्रेन पूरी गति के साथ घने और अंधेरे जंगल से गुज़र रही थी ।

## इस तरह बना रेनकोट

मानव सभ्यता के शुरुआत से ही बारिश से बचाव के लिए अनेक प्रयास किये जाते रहे हैं । मगर दुनिया का सर्वप्रथम वाटरप्रूफ़ रेनकोट सन 1823 में ही बन सका । इसका आविष्कार चार्ल्स मैकिटोश ने किया था तथा यही वजह है कि दुनिया के अनेक हिस्सों में रेनकोट को मैक के नाम से भी जाना जाता है ।

उन्होंने सूती कपड़ों की 2 परतों के मध्य रबर की परत डालकर वाटरप्रूफ़ कपड़ा तैयार किया । रेनकोट के इसी नमूने पर काम करते हुए ड्यूपाट कंपनी ने आधुनिक रेनकोट तैयार किया, जिसमें सूती कपड़ों के स्थान पर प्लास्टिक अथवा नायलान का इस्तेमाल किया जाने लगा ।

स्कॉटलैंड में इतनी अधिक मात्रा में बारिश होती है कि पहाड़ियों पर निवास करने वाले किसान अपनी भेड़ों को मौसमी दुष्प्रभाव से बचाने के लिए रेन कोट पहनाकर रखते हैं ।

● विद्या प्रकाश

# मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ समोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

## जामिया वेफ मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

**अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह वेफ यहां उसका बदला पाएं।**

—: भेजने का पता :—

**जामिया मिस्बाहुल उलूम**

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09670641947, 09451097177

**जामिया का बैंक खाता नं.**

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

A/c No. F.C.R. CD-149 सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया बेवॉ चौराहा

# शैक्षिक स्तर में सुधार की आवश्यकता

■ विद्या प्रकाश
(जौनपुर, उ०प्र०)

हमारे देश में विगत कुछ वर्षों से नये-नये महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, इलेक्ट्रॉनिक इंस्टीट्यूट, इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नॉलोजी एंड मैनेजमेंट तथा इंस्टीट्यूट ऑफ़ पैरामेडिकल साइंसेस की बाढ़-सी आ गयी है । कोई भी छोटे से छोटा क़स्बा, बाज़ार अथवा ज़िला ऐसा नहीं नज़र आता जहां बी०सी०ए०, एम०सी०ए०, पी०जी०डी०सी०ए०, बी०बी०ए०, एम०बी०ए० तथा पी०जी०डी०बी०एम० के अलावा मेडिकल लैब टेक्नॉलोजी, रेडियोलॉजी एंड इमेजिंग टेक्नॉलोजी, ऑपरेशन थियेटर टेक्नाली, मेडिकल लैब टेक्नॉलोजी, दंत चिकित्सा, फिजियोथेरेपी तथा आप्टोमेट्री जैसे प्रोफेशनल और टेक्निकल विषयों से संबंधित एक वर्षीय अथवा दो वर्षीय डिप्लोमा प्रदान करने वाली संस्थाएं न क़ायम हों ।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार इस समय देश में लगभग 650 विश्वविद्यालय तथा 33 हज़ार महाविद्यालय हैं जिनमें से लगभग आधे वर्ष 2005 के बाद स्थापित हुए हैं, इनमें बड़ी संख्या निजी शिक्षण संस्थानों की है ।

दरअस्ल यह माना जा रहा है कि भारत में जी०डी०पी० की विकास दर को बनाये रखने के लिए उच्च शिक्षा में नामांकन दर बढ़ाना आवश्यक है जो विकसित तथा अन्य विकासशील देशों की तुलना में अत्यल्प है । इसी कारण न केवल बड़े-बड़े कारोबारियों को शिक्षा के व्यापार में मनमाने तरीक़े से उतरने की छूट दी जा रही है बल्कि विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए भी दरवाज़े पूर्णत: खोलने की तैयारी चल रही है । इस स्थिति में यह आश्चर्यजनक नहीं कि भारत में उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या अमेरिका तथा इंग्लैंड जैसे विकसित साधन संपन्न देशों की अपेक्षाकृत काफ़ी अधिक है ।

हमारे देश में महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय सब मिलाकर 33650 उच्च शिक्षण संस्थान हैं जबकि अमेरिका सरीखे विकसित देश में उच्च शिक्षण संस्थानों की संख्या सिर्फ़ 2466 है ।

यदि जनसंख्या की दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो अमेरिका में औसतन 1119220 व्यक्तियों पर उच्च शिक्षा का एक संस्थान है । इसी प्रकार इंग्लैंड में भी यह आंकड़ा 379746 व्यक्तियों पर एक उच्च शैक्षणिक संस्थान का है, जबकि भारत में सिर्फ़ 33375 व्यक्तियों की संख्या पर उच्च शिक्षा का एक संस्थान है ।

वस्तुत: अमेरिका तथा इंग्लैंड जैसे मुल्कों में कम संस्थाओं में ज़्यादा से ज़्यादा बेहतर से बेहतर सुविधाएं विद्यार्थियों को मुहैया कराने पर अधिक तवज्जो दी जाती है । वहीं भारत में आवश्यक शिक्षणोपयोगी मूलभूत सुविधाओं के बिना भी हज़ारों विद्यार्थी शिक्षार्जन कर रहे हैं और यह शिक्षार्थियों की विवशता है ।

यहां पढ़ें तो कहां जाएं और क्या करें ? विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में भ्रष्टाचार, शुद्ध जातिवादी आरक्षण, छात्र संघ तथा शिक्षक संघ के नाम पर की जाने वाली राजनीतिक गुटबन्दी शिक्षण संस्थाओं में राजनीतिक दलों की छात्र संघ के नाम पर घुसपैठ आदि तमाम कारणों से शैक्षणिक स्तर में चिंताजनक गिरावट आयी है जिसका ख़ामियाजा छात्रों को लेटसेशन, अपूर्ण विलंबित और त्रुटिपूर्ण परीक्षा फल, धरना प्रदर्शन आदि की शक्ल में झेलना पड़ रहा है । न क़ायदे की सेन्ट्रल तथा डिपार्टमेंटल लाइब्रेरी है, न प्रयोगशाला आवश्यकतानुसार सूक्ष्मदर्शी यंत्र, भौतिकतुला, सर्जिकल नाइफ़ आदि वैज्ञानिक तथा चिकित्सा संबंधी उपकरणों से लैस हैं तथा न ही पर्याप्त क्रीड़ोपकरण हैं फिर भी बेइतरीन उच्च शिक्षा की दावेदारी की जा रही है । चार-चार छह-छह हज़ार मासिक वेतन पर एडहाक पर विषयाध्यापकों को नियुक्त कर उनसे छात्रों के भविष्य को सुधारने की उम्मीद पता नहीं किस मुंह से और कैसे की जाती है ।

वर्तमान सरकारी शिक्षा नीति में यह कैसा विरोधाभास तथा कैसी विडंबना है कि पिछले कुछ सालों से देश के अधिकतर महाविद्यालयों तथा शिक्षण संस्थाओं में व्यावसायिक विषयों की सीटें रिक्त चल रही हैं । सैकड़ों बिजनेस स्कूल छात्रों के अभाव में या तो बन्द हो गये अथवा वे बन्द होने

के कगार पर हैं ।

इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाने वाले ऐसे कालेजों का शिक्षण शुल्क सामान्य भारतीय परिवारों की पहुंच तथा सामर्थ्य से बाहर है । सरकार के पास ऐसी कोई योजना नहीं है कि सामान्य निध न परिवारों के प्रतिभाशाली बच्चों को तलाश कर तथा उन्हें स्कॉलरशिप प्रदान कर कॉलेजों की इन ख़ाली सीटों को भरा जाए ।

धनाढ्य तथा दौलतमंद परिवारों के बच्चे प्रतिभा के बिना भी रुपयों के बल पर बैकडोर से डोनेशन के सहारे येन-केन प्रकारेण ऐसे कॉलेजों में एडमीशन करा लेने में कामयाब तो हो जाते हैं । इससे कॉलेजों का व्यवसाय भले बढ़ जाता हो लेकिन इनसे शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करने वाले ऐसे छात्र नौकरी के अर्द्ध नहीं हो पाते । अमीर ख़ानदान से ताल्लुक़ रखने वाले ऐसे अनर्द्ध छात्र पैसे के बल पर भले प्राप्तांक पत्र तथा सनद पा सकने में सफल हो जाते हों मगर बुद्धि तथा योग्यता ऐसी वस्तु नहीं है जो जुगाड़ लगाकर ख़रीदी जा सके । बाज़ार में शैक्षणिक उपाधियां बिकती हैं मगर दिमाग़, लियाक़त और क़ाबिलियत नहीं । देश के 29 शहरों के 25 टॉप बिजनेस स्कूलों को छोड़कर शेष 2264 एम०बी०ए० डिग्री धारकों पर किये गये एक ताज़ा सर्वेक्षण के अनुसार इनमें केवल 21 प्रतिशत भारतीय नौकरी देने के क़ाबिल हैं ।

वर्ष 2007 में किये गये ऐसे ही एक अन्य सर्वे में 25 फ़ीसद एम०बी०ए० डिग्रीधारक छात्र ही नौकरी के क़ाबिल पाये गये थे, जबकि विगत 5 वर्षों में स्वदेश में एम०बी०ए० सीटों की संख्या में लगभग चौगुनी बढ़ोतरी हो गयी है । वर्ष 2006-07 में यह संख्या 94704 थी जो वर्ष 2011-12 में बढ़कर 352571 हो गयी । कॉलेजों में एक तरफ़ सीट संख्या बढ़ रही है और दूसरी तरफ़ विद्यार्थियों में योग्यता नहीं पायी जाती क्योंकि शैक्षणिक गुणवत्ता साल ब साल सुध रने के बजाय बदतर और ख़राबतर हो रही है जो चिंताजनक है ।

स्वदेश में उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या वृद्धि नहीं, शैक्षणिक गुणवत्ता में वृद्धि तथा स्तरोन्नयन की महती आवश्यकता है । विकसित देशों के दबावन विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए देश के दरवाज़े खोलने के बजाय यदि देश के ही कुछ शैक्षणिक संस्थानों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तरानुकूल तथा मानकानुकूल बनाया जाए तथा उनकी फ़ीस भारतीय समाज के सामान्य मध्यमवर्गीय तथा निर्धन परिवारों के बच्चे की पहुंच में लायी जाए तो इससे न केवल उच्च शिक्षा की तस्वीर बदली जा सकती है, बल्कि देश के शैक्षणिक भविष्य को भी निखारा-संवारा जा सकता है तथा बेहतर बनाया जा सकता है ।

## कविता

# अंतरिक्ष युद्ध

अमेरिका पहुंचा अंतरिक्ष में किस लिए
अपना अधिपत्य जमाना है इसलिए

युद्ध ज़मीन पर हुए किस लिए
अपना-अपना क्षेत्र बढ़े इसलिए

सिकंदर ने युद्ध किये किस लिए
ज़मीन की भूख थी इसलिए

विकसित देश महान कहलाते किस लिए
दौड़ते पीछे विकासशील देश इसलिए

हिल स्टेशन बनेगा अंतरिक्ष में किस लिए
पूंजीपतियों को करनी मस्ती इसलिए

अमेरिका का राजस्व बढ़ेगा किस लिए
एडवांस बुकिंग ण्अंतरिक्ष को मिली इसलिए

तृतीय विश्व युद्ध होगा किस लिए
पहुंचेंगे सभी अंतरिक्ष में इसलिए

आयी बारी अंतरिक्ष की किस लिए
बंट गयी सारी धरती इसलिए

अंतरिक्ष में पहुंचना चाहते किस लिए
धरती पर जनसंख्या बढ़ी इसलिए

होगा युद्ध अंतरिक्ष में किस लिए
अंतरिक्ष में जगह चाहिए इसलिए

अमेरिका पहुंचा अंतरिक्ष में किस लिए
तृतीय विश्व युद्ध करना है इसलिए ।

**रामेश्वरी 'नादान'**
('फिर एक बार' से)

# कैसे लिपिबद्ध हुए शब्द ?

● अल्पना हंस

एक मानव समूह जो पेट भर खाना पाता है, जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आगे बढ़ता है, जबकि रोटी खोजता मानव आगे बढ़ ही नहीं पाता शिकारी मानव भला लेखन की ओर ध्यान किस तरह दे सकता था । इस आधार पर हम कह सकते हैं कि मानव ने लिपि का आविष्कार, कृषि और स्थायी निवास की खोज के बाद किया होगा और पहली लिपि 10,000 साल से अधिक पुरानी नहीं हो सकती ।

अनुमान है कि तक़रीबन पांच हज़ार साल पहले, पहली बार इस संसार में लेखन शुरू हुआ । 6 माह पहले इसी आविष्कार की स्मृति में और इस विषय पर चिंतन-मनन करने के लिए 'बग़दाद' शहर में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ ।

बग़दाद एक ऐतिहासिक नगर है, ज़िसके दो ओर यूफ्रेटस और टाइग्रिस नामक नदियां बहती है, जो कि मशहूर बेबीलोन को उपजाऊ बनाती है । पाश्चात्य देशों में सबसे पहले कृषि कार्य की उन्नति इसी देश में हुई । इसके बाद विशाल मानव समूहों ने यहां डेरा डाला और कहा ये भी जाता है कि दुनिया का पहला शहर 'उए' यहीं बसा तथा लेखन का कार्य भी पहली बार यहीं शुरू हुआ । कहना ये कि शब्दों को लिपिबद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य पहले पहल बेबीलोन में ही सम्पन्न हुआ ।

अस्ल में इसी मुद्दे पर विस्तृत चर्चा करने के लिए बग़दाद में अन्तर्राष्ट्रीय बैठक बुलायी गयी थी । सम्मेलन में जुड़े विद्वानों के सामने प्रश्न था कि लेखन का आविष्कार पहले पहल संसार के किस क्षेत्र में हुआ ।

ज़ाहिर है, किसी भी नाम या स्थान पर विद्वान एक मत नहीं थे । इस सम्मान का हक़दार तीन स्थानों को माना गया था । इनमें पहला है–'उरुक', जो बेबीलोनिया का एक हिस्सा है और यूफ्रेटस के तट पर बसा है । इस जगह क़रीब 5 हज़ार साल पहले चित्रलेख का आविष्कार हुआ । बताते हैं । दूसरा है प्राचीन मिस्र का शहर एबीडॉस, जिसकी दुर्बोध लिपि ई॰पू॰ 3100 में पहली बार उपयोग में आयी थी और तीसरे नम्बर पर है इरावती नदी पर बसा मोहन जोदाड़ो, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता का प्रतिनिधि माना जाता है और जो ई॰पू॰ कम से कम 2500 साल पहले अस्तित्व में आया था । कुछ शोध कर्ताओं की राय है कि इन तीनों के अलावा चीन, मैसोमेरिका और पैसेफिक द्वीप समूहों के साथ अफ़्रीक़न महाद्वीप में भी इस प्रश्न का उत्तर खोजा जा सकता है ।

लेकिन बग़दाद में जो सम्मेलन हुआ उसमें बहस का मुद्दा था बरसों से चली आ रही ये धारणा कि बेबीलोन के 'उरुक' क्षेत्र में ही पहले पहल भाषा लिपि का विकास हुआ । इसके अलावा सवाल ये भी था कि क्या यही लिपि आगे आने वाली सारी लिपियों का आधार बनी या कि मिस्र देश की साक्षरता ने इसे विकसित करने में मदद दी या फिर ये सभी अनुमान आधारहीन हैं ।

इस सम्मेलन की रिपोर्ट पेश करते हुए 'साइंस' नामक पत्रिका में एंड्रू लौलर लिखते हैं कि हाल ही में प्राप्त सबूतों के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता का उदय ई॰पू॰ 3300 में हो गया था, जबकि पूर्वी एशिया में उसके दूसरे साथी इस ओर प्रयास ही कर रहे थे । लौलर के अनुसार, कुछ विद्वानों का मत है कि 3 भिन्न सभ्यताओं में अलग-अलग लेकिन साथ-साथ भाषा लिपि का विकास हो रहा था । इससे ज़ाहिर होता है कि वे एक-दूसरे से अप्रभावित अलग-थलग विकास कर रही थी । हो सकता है कि जिन स्थितियों में भाषा लिपि इन जगहों पर जन्मी, वह तीनों स्थानों पर एक-सी नहीं हों ।

एक बात तय है कि जिन प्रतीकों, चित्रलेखों तथा तस्वीरों आदि का इन विश्व भर में प्रचलित लिपियों का जनक कहा जा सकता है । कैम्ब्रिज की पुरातत्ववेत्ता जोन ओट्स के अनुसार मानव के क्रमिक विकास में क़रीब 1,000 साल पहले ही लिखित शब्दों का आविष्कार हुआ होगा । आज जो भी लिखित शब्द हमें मिलते हैं वे शिलालेखों, भोजपत्रों या ताम्रपत्रों पर सुरक्षित हैं । कुछ वस्तुएं जैसे बर्तन, खिलौने इत्यादि पर भी हमें सांकेतिक लिपि दिखायी देती है । ये वस्तुएं कहीं-कहीं पर पांच हज़ार साल पुरानी आंकी गयी है । मेसोपोटामिया में जो अक्षर मान्य

हुए वे सब पिरामिड के आकार के थे, लेकिन इनकी स्थिति कभी आड़ी होती थी तो कभी सीधी ।

एक विद्वान थॉमस हाइड, जो ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से संबद्ध था, उसने ही सबसे पहले 'कीलाकार' अक्षरों को पढ़ने की कोशिश की । डेनिस सैलानी कार्सप्न न्यूबर ने इस तरह के 'कीलाकार' अक्षरों में तीन तरह की लिपि खोज निकाली थी । अंतत: 18वीं शती में एक जरमन टीचर जार्ज ग्रोटफेड ने पहले पहल इस लिपि को समझने में सफलता पायी ।

लेकिन मिस्र की लिपि का पठन एक बड़े शिलालेख की प्राप्ति के बाद ही संभव हुआ । 1799 में एक मकान की दीवार में इस शिलालेख को धंसा हुआ पाया गया । गांव का नाम था जहां नील नदी भू-मध्यसागर में गिरती है । राशिद का अंग्रेज़ों ने अपभ्रंशकर दिया ।

'रोजेटा' और यह शिलालेख 'रीजेटा स्टोन' कहलाया । 1814 में ब्रिटिश भौतिकशास्त्री थॉमस यंग ने पहली बार इस मिस्री लिपि को समझने में सफलता हासिल की । उनकी समझ में ये आया कि इस लिपि में कुछ ग़ैरमिस्री शब्दों के हिज्जे वर्णाक्षरों के हिसाब से किये गये हैं, उनकी ध्वनि के आधार पर नहीं । वर्णाक्षरों को इस तरह धीरे-धीरे पहचानने के बाद इस वैज्ञानिक ने पूरी लिपि को पढ़ने में सफलता पा ली ।

हड़प्पा सभ्यता में प्रयुक्त लिपि को पढ़ने के लिए अभी तक हमें कोई ग्रोटफेड नहीं मिल पाया है । फिर भी सर जॉन मारशल और डॉ॰ एस॰आर॰ राव ने बरसों इस लिपि को समझने में बिता दिये हैं । यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिंधु घाटी में जो चिन्ह और संकेत मिले हैं वे मिस्री लिपि से बिल्कुल अलग हैं । यही नहीं, बेबीलोन, साइप्रस, परशिया और सूमेरियन सभ्यता में मिली लिपि से भी इनका कोई साम्य नहीं है । लेकिन दक्षिण पैसेफिक के ईस्टर द्वीप पर मिली लिखावट और संकेत सिंधु घाटी की लिपी से काफ़ी मिलते-जुलते हैं । लेकिन इन दोनों स्थानों में 9 हज़ार मील की दूरी है, अब किस सभ्यता ने किसे प्रभावित किया, यह कहना बहुत कठिन है ।

यह भी हो सकता है ये एक-दूसरे से स्वतंत्र अलग-अलग विकसित हुई हों । यह एक इत्तिफ़ाक़ हो सकता है । लेकिन मानव संस्कृति के अध्येताओं के लिए एक और समस्या पैदा कर जाता है ।

बग़दाद सम्मेलन ने इन सभी बिंदुओं पर चर्चा की और यह हल निकाला कि लेखन प्रक्रिया का विकास कम से कम तीन स्थानों पर स्वर्स्फूत हुआ । ये तीन सभ्यताएं है--मेसोपोटामियन, मिस्री तथा सिंधु घाटी । हो सकता है इनमें आपस में विचार संप्रेक्षण हुआ हो । यह भी तय है कि ये लिपियां एक दिन या थोड़े समय में विकसित नहीं हुई, बल्कि धीरे-धीरे प्रतीक चिन्हों और चित्रों से होती हुई परिपक्व हुईं । कई बिंदुओं पर विद्वानों का आपस में मतभेद भी रहा ।

कुछ भाषा विज्ञानियों के अनुसार चीन ईस्टर द्वीप समूह और दक्षिण-पूर्वी एशिया को भी इस बहस में जगह मिलनी चाहिए थी । इसी तरह अफ़्रीक़ा और ईथोपिया को भी नज़रअंदाज़ किया गया । कहते हैं कि मानव का जन्म और विकास मध्य अफ़्रीक़ा में हुआ । यहीं से क़रीब 150,000 साल पहले निकल कर वह पूरे विश्व में छा गया । यहां की प्राचीन आदिम जातियों ने भी लिपि का ज़रूर इस्तेमाल किया होगा । ज़रूरत है कि हम उस पर भी शोध करें । इनके अलावा मेक्सिको की माया संस्कृति की लिपि पर भी विस्तृत शोध की ज़रूरत है ।

डॉ॰ जेयर्ड डायमंड ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक 'गन्स, जमर्स एंड स्टील' में इस विषय पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि विश्व भर में मानव सभ्यता का विकास 11,000 साल पहले हुआ । लेकिन कुछ मानव समूह जहां पूर्व विकास पा गये वहीं कुछ अन्य पिछड़ेपन के शिकार हैं, आज भी । इसके पीछे हाथ है परिस्थितियों का ।

एक मानव समूह जो पेट भर खाना पाता है, जीवन के दूसरे क्षेत्रों में अपने आप आगे बढ़ता है, जबकि पेट के सवाल से त्रस्त मानव आगे बढ़ ही नहीं पाता । शिकारी मानव भला लेखन की ओर ध्यान किस तरह दे सकता था इस आधार पर हम कह सकते हैं कि मानव ने लिपि का आविष्कार, कृषि और स्थायी निवास की खोज के बाद किया होगा । इस तरह पहली मानव लिपि 10,000 साल से अधिक पुरानी नहीं हो सकती ।

**For Information On**
City Shops, RoaosQ--Products, Restaurants, Magazine, Schools And much more.
**Syed Shahbaz Alam Barvi**
Business Development Director (09049185093)
**Visit us:**
**www.shoppinglanes.com**

# बुढ़ापा : एक कड़वा सच

■ डॉ॰ प्रीत अरोड़ा

मानवता की अस्ली पहचान उसका दूसरों के साथ प्रेम, सद्भावना व आत्मीयता से व्यवहार करना है । परन्तु जब बात बुजुर्गों की होती है तो हम अपने इस व्यवहार को क्यों भूल जाते हैं ? जो माता-पिता अपना पूरा जीवन हमें सफल बनाने और लालन-पालन करने में समर्पित करते हैं और जब दायित्व निभाने का हमारा समय आता है तो हम अपने दायित्व से मुंह क्यों मोड़ लेते हैं ?

आज आपको अपने जीवन का आंखों देखा सच बता रही हूं । हमारे साथ ही पड़ोस में वर्मा जी का परिवार रहता था । वर्मा जी के परिवार में उनकी पत्नी मधु, दो बेटे-बहुएं, पोते-पोतिये व दादी रहती थी । वर्मा जी स्वयं रेलवे में उच्च पद पर आसीन थे और उनके बेटे भी सरकारी कर्मचारी थे । आर्थिक रूप से सुसंपन्न इस परिवार में किसी चीज़ की कमी न थी । अगर कमी थी तो शायद सिर्फ़ अच्छी सोच व संस्कारों की । परिवार में जहां प्रत्येक सदस्य एशोआराम की ज़िन्दगी व्यतीत कर रहा था वहां दादी की क़िस्मत में घर के पिछले बरामदे में बना कच्चा-पक्का कमरा ही था । दादी के पति रमेश जी की मृत्यु के बाद उनकी पेंशन से ही दादी अपना गुज़र करती थी परन्तु दादी के नाम ज़मीन-जायदाद काफ़ी थी । दादी ने मुझे बताया था कि उन्हें इस कोठरी में भी सिर्फ़ इसलिए रखा गया है, क्योंकि सभी की नज़र उनकी जायदाद पर है और अगर उनके पास अच्छी-ख़ासी जायदाद न होती तो आज वे सड़कों पर या किसी ओल्ड ऐज होम में अपना जीवन बिता रही होती ।

दादी सारा दिन चारपाई पर बैठी अपनी अंतिम सांसों के लिए भगवान से दुहाई मांगती रहती थी । चूंकि यह ज़िंदगी भी किसी नरक भोगने से कम न थी । अक्सर वर्मा जी की घर से दादी की रोने की आवाज़ें आया करती थी, क्योंकि बात- बात पर दादी से मारपीट करना उनके लिए आम बात थी । यहां तक कि दादी को खाने के नाम पर सूखी व मोटी रोटी और पानी जैसी दाल ही नसीब होती थी । परन्तु ममता की प्रतिमूर्ति दादी उसे भी राजभोग समझकर खाती थी । हद तो तब हो गयी जब पैसों के पीछे अंधे हुए वर्मा जी ने दादी को खाने में ज़हर मिलाकर खिला दिया और जब वर्मा जी के परिवार को सज़ा मिलने की बारी आयी तो उन्होंने पैसों और रुतबे के बलबूते पर अपने इस घिनौने अपराध को भी छुपा लिया ।

यह कड़वा सच हमारे समाज के अनगिनत घरों की कहानी बनता जा रहा है । आख़िरकार पैसा ही अंधकार बनकर रिश्तों की गरिमा को ग्रहण लगा रहा है । दादी के जीवन की यह कड़वी घटना आज भी मेरे दिल को दहला देती है कि कैसे उनके अपने ही पैसों के पीछे हैवान बन गये । वर्मा जी के घर पर सारी सुख-सुविधाएं होने के बावजूद और अधिक पैसों की लालसा ने ही बूढ़ी मां के प्राणों की आहुति भी दे दी । हमारे सामाज में ओल्ड ऐज होम की गिनती भी लगातार बढ़ती जा रही है और सच मानिये कभी आप ओल्ड ऐज होम के दरवाज़े पर जाकर खड़े होंगे तो देखेंगे की वहां बूढ़ें माता-पिता की सुनी आंखों में से उबरते हज़ारों सवाल आपको दिखायी देंगे जिनका जवाब हमारे पास न होगा कि आख़िर किस अपराध की सज़ा उन्हें दी जा रही है ? क्या उनका अपराध यह था कि उन्होंने मां-बाप बनकर अपना दायित्व निभाया ? परन्तु दुख इस बात का है कि बच्चे अपने माता-पिता को ओल्ड ऐज होम का दरवाज़ा दिखाकर अपने कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं ।

मैं तो यह कहूंगी कि अगर आप अपने माता-पिता को मौत के घाट धकेलकर भगवान की पूजा करके या संस्कारों की बड़ी-बड़ी बातें करके स्वयं को इन्सान मानते हैं तो यह इन्सानियत के नाम पर कलंक है । हमारा पहला कर्तव्य बनता है कि हम अपने माता-पिता का सत्कार करें । हमारे माता-पिता के अधिकार अगर हम उन्हें नहीं देंगे तो कौन देगा ? इसलिए हमारा, हमारे क़ानून व हमारे समाज का यह दायित्व है कि वे बजुर्गों के साथ हो रहे इसे अमानवीय व अभद्र व्यवहार को रोकें । हम अपने बुजुर्गों का आदर-सम्मान करते हुए उन्हें परिवार व समाज में वह स्थान दें जिसके हक़दार वे हैं । अगर बुजुर्गों के साथ हो रहा ऐसे दुर्व्यवहार का सिलसिला नहीं रुका तो वह दिन दूर नहीं जब इस चक्रव्यूह में फंसने की अगली गिनती हमारी होगी तो आइये प्रण लें–"बुजुर्गों से करें प्यार ।

यही है समृद्ध, सुखी जीवन का आधार ।"

# अनाथ लड़कियों की पुकार

# VOICE OF ORPHAN GIRLS

## मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

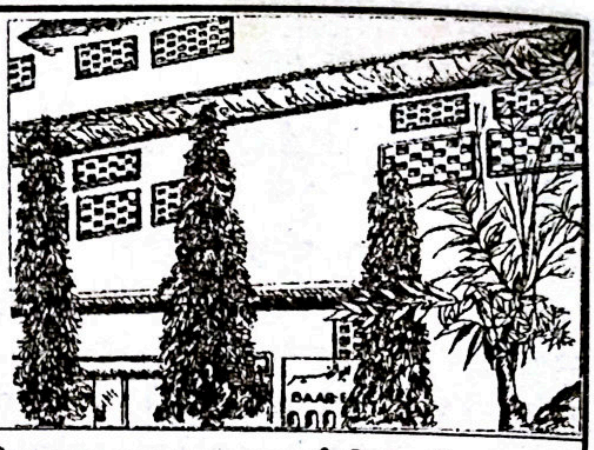

**संक्षिप्त परिचय**

**लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा**

**संस्था ने अपनी उम्र के 25 वर्ष दिसम्बर 2011 में पूरे कर लिए मगर अब तक माली दुश्वारियों के सबब अपना सिल्वर (Silver Jubilee) भी नहीं मना सका ।**

● 25 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I,A,BA एवं Library Science ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2011 ई॰ तक 66 अनाथ बच्चियों और 41 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 22 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 12,000/- रुपये है—आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

**यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।**

**विदेशी चन्दा देने वाले :** भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

**Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले**

**विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042**

**BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।**

**चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"**

**Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता**

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt,: GAYA (BIHAR) INDIA, ☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

**LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले**

BANK CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

**नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।**

संस्थापक महासचिव : **इक़बाल अहमद ख़ां**

# 'गो-प्रेम' : कुछ विचारणीय बातें

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

मैं पिछले कुछ महीने से फ़ेसबुक पर हूं । पूरा एक संसार है वहां, जहां विविध प्रकार के विचार आते हैं विचारार्थ...कुछ 'विशेष चटख रंग' भी लिए होते हैं...लेकिन मैं प्रतिक्रियावादी नहीं हूं । बस जहां आवश्यक है, कुछ टिप्पणी कीं और यथातथ्य बताने का प्रयास किया । सामान्यत: मुझे लोग 'लाइक' करते हैं । ईश्वर की कृपा है कि मुझ से जुड़ने वाले सज्जनों की संख्या दिनानुदिन बढ़ती जा रही है ।

विभिन्न विषयों पर मैं टिप्पणियां करता हूं । इन सभी का उल्लेख करना यहां संभव नहीं है । प्रयास रहेगा कि 'कान्ति' के प्रिय पाठकों को कुछ विशेष से अवगत कराता रहूं । इस बार ऐसी ही एक टिप्पणी प्रस्तुत कर रहा हूं, जो 'गो-प्रेम' पर एक ऐसी भद्र महिला के पोस्ट की प्रतिक्रिया में है, जिनके हज़ारों फ्रेंड और लाखों सब्सक्राइबर हैं । सौभाग्य से वे मेरी फेसबुक फ्रेंड हैं ।

महोदया ने लिखा था कि गो-प्रेम उनका स्वाभाविक अधिकार ही नहीं, धर्म है । उन्होंने इस प्रेम को एक विशेष रंग में प्रस्तुत किया था । मुझे इस पोस्ट पर कुछ कहना ही था, सो कहा । मेरी यह टिप्पणी निम्नलिखित है–

आदरणीया.....जी, कुछ बातें और कुछ अनुभव मैं साझा करने का लोभ-संवरण करने में किंचित असमर्थता के कारण ये पंक्तियां लिख रहा हूं । मैं तो मनुष्य को बहुत चाहता हूं, क्योंकि यही मेरा 'धर्म' है और इस अधिकार से मुझे कोई नहीं रोक सकता, लेकिन गाय मेरे लिए सदैव प्रेरणा का एक स्रोत रही है । उसका ममत्व मुझे सर्वाधिक प्रिय है । अथर्ववेद में है–

स हृदयं सा मनस्य म विद्वैषम कृणों मि व:
अन्यो अन्यंभिहर्यत वत्सं जातमिवाहन्या
(कांड-3, सूक्त-30, मंत्र-4)

अर्थात , एक दूसरे को ऐसी मुहब्बत से चाहो जैसे गाय अपने नये जन्मे बछड़े को चाहती है ।

मेरा यह मानना है कि बहुत सारे नैसर्गिक अधिकारों पर जैसे हम अधिकार या इससे बढ़कर कुछ जताते हैं, तो ऐसा ही अधिकार जताने का दूसरों का भी हक़ है, जिससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता । जहां तक बात भावनाओं के क़द्र की है, वह भी सद्भाव के लिए आवश्यक है । अत: हठधर्मिता की कोई गुंजाइश नहीं बचती । मुझे याद है कि पिछले कई वर्षों से ईदुल अज़हा के अवसर पर देवबंद से फ़तवा (धर्मादेश) आता रहा है कि गाय की क़ुरबानी नहीं की जानी चाहिए । यह स्वागतयोग्य है । ऐसा हो भी रहा है । मुसलमान गाय की क़ुरबानी नहीं कर रहे हैं । अब क़ानून भी हैं ।

मैं कई वर्षों तक झारखंड (मेरे समय में बिहार) में पोस्टेड था । एक बड़े हिंदी समाचार-पत्र में सम्पादकीय प्रभारी था । उस समय कई बार आदिवासी जनों से भेंट की और स्टोरी तैयार की और तैयार करायी । वहां गाय को लेकर कोई धर्म-भावनागत बात सामने नहीं आयी । बहुत सारे आदिवासी बंधु गोमांस का सेवन करते थे और ताज़ा जानकारी के अनुसार आज भी करते हैं । उन पर क़ानूनों का कोई असर नहीं पड़ता...उस समय मेरे एक ब्राह्मण मित्र थे, जो 'हिंदुस्तान' (हिंदी दैनिक, पटना के लिए काम करते थे) गोमांस का रुचिपूर्वक सेवन करते थे । कहते थे कि हमारे धर्मग्रंथों में यह विहित है । बहरहाल मैं इस पचड़े में नहीं पड़ूंगा । इस पर लंबी राजनीति हो चुकी है और इसका सर्वाधिक नुक़सान मेरे अपने बंधुओं का हुआ है, जिनसे मुझे गाय-सदृश मुहब्बत है ।

मेरी दृष्टि में गाय जैसा सुन्दर, भोला और लाभदायक पशु-प्राणी अन्य कोई नहीं । लेकिन मैं उनका अधिकार कैसे छीन सकता हूं, जो अन्य पशु-पक्षियों को आदरणीय, प्रिय एवं अपना विशेष प्रतीक मानते हैं । गुरु गोलवलकर जी भी ऐसा ही मानते थे । उनका स्पष्ट कहना है कि 'वे लोग जो

गोमांस खाते हैं, वह उनका पाप नहीं, हमारा पाप है ।' (पाञ्चजन्य, वीर वनवासी अंक 21 मार्च 1982) आगे लिखते हैं–'...यदि वे उस प्राणी को खाते हैं तो उन्हें दंड नहीं देना चाहिए ।' यह तो हुआ एक पक्ष । बहुत से हिन्दू भाई गोमांस खाना बुरा समझते हैं, जबकि धर्मग्रंथों में दोनों तरह की बातें मिलती हैं, इसी कारण से डी॰एन॰ झा जी की पुस्तक 'द होली काऊ' पर से बैन हट गया था । इसी प्रकार आदिवासी जातियों में कई जीव-जंतु ऐसे हैं, जिनका भक्षण वे बहुत बुरा समझते हैं । यही उनका अपना-अपना 'धर्म' है । यह समादरणीय होना चाहिए । मैं तो इन सभी का समुचित आदर-सम्मान करता हूं, क्योंकि यह मेरा 'धर्म' है ।

एक बार वरिष्ठ आदिवासी नेता (एन॰ होरो जी) ने धनबाद में मुझे बताया कि उनके गोत्र की उत्पत्ति कछुए से हुई है, अत: आदिवासी मुंडा लोग इसके मांस का सेवन नहीं करते और इसे अपने लिए आदरणीय ठहराते हैं । मैंने कहा कि आप अच्छा करते हैं । विष्णु जी के कच्छप अवतार को आप जानते होंगे । होरो जी ने कहा, नहीं । मैंने बताया कि वे हमारे हिन्दू भाइयों के भगवान हैं । आपके इस क़दम से निश्चित रूप से सहिष्णुता आएगी, जिसकी देश और समाज को बहुत ज़रूरत है । होरो जी द्रवित हो उठे । कहने लगे, 'यहीं बंगाल के हिन्दू लोग तो कच्छप-मांस बड़े चाव से निर्मम रूप में खाते हैं । बड़ा दुख होता है ।

मैंने कहा कि उन्हें भी आपका सम्मान करते हुए कच्छप-मांस भक्षण त्यागना चाहिए । भारतीय समाज के लिए यह बहुत आवश्यक है । सिर्फ़ भावात्मक बातों से काम नहीं चलेगा । इसी तरह उरांव लोग एक प्रकार की मछली का सेवन नहीं करते । कहते हैं पाप लगेगा, वह पूज्य है । टोपनो लोग हऊ नहीं खाते, जो एक विशेष प्रकार की चींटी है, अन्य आदिवासी बंधु इसे बड़े चाव से खाते हैं । मैंने स्टोरी-विशेष के लिए इनके गांवों में कई रातें गुजारी हैं और लगभग हर समय के खाने में मांस का आइटम देखा है । मैं मानता हूं कि यह उनका 'धर्म' है, जिससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता । यह उनका नैसर्गिक अधिकार है । वेद का भी यही आदेश है ।

## डॉ॰ जनमेजय सम्मानित



ग्वालियर साहित्य एवं कला परिषद, ग्वालियर, मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ रमेश कटारिया पारस के 60वें जन्म दिवस एवं उनके अभिनन्दन ग्रंथ 'दस्तावेज़' संपादक डॉ॰ सुखदेव सिंह सैगर लोकार्पण समारोह में, भारतीय भाषाएं एवं संस्कृति को सुदृढ़ बनाने के लिए देश भर के लगभग 150 लेखकों, कवियों, लघुकथाकारों एवं साहित्यकारों को स्मृति चिन्ह व शॉल देकर उन्हें सम्मानित किया गया । दिल्ली से पधारे डॉ॰ जसवन्त सिंह जनमेजय (पत्र लेखक) को उनकी पाडुलिपि को उल्लेखनीय योगदान हेतु डॉ॰ रामअवतार शर्मा (पूर्व कुलसचिव आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, मुख्य अतिथि) द्वारा 'कलम कलाधर' सम्मान प्रदान किया गया । इस राष्ट्रीय साहित्य कुंभ में अन्य लेखकों की पुस्तकों का भी लोकार्पण हुआ एवं इसके साथ-साथ पुस्तक प्रदर्शनी भी लगायी गयी एवं सायं श्रीमती आरती खेडकर (प्रसिद्ध कवयित्री) की अध्यक्षता में काव्यगोष्ठी का भी साहित्य सृजनकारों ने आनन्द लिया ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

# AL HUDA PUBLIC HIGH SCHOOL

## PELAWAL HAZARIBAGH (JHND)




الحمدللہ آپ کا یہ ادارہ 1984 سے قائم ہے اور دینی، عصری علوم سے بچوں کے اندر اعلیٰ صلاحیت پیدا کرتا ہے۔ یہ ادارہ آپ کے تعاون کا مستحق ہے۔

**AL HUDA PUBLIC HIGH SCHOOL**

**S. B. A/c. No. 410502010692403**
**Union Bank of India**
**Pelawal, Hazaribagh (JHND)**

**ترسیل زر کا پتہ:**

سکریٹری الہدیٰ پبلک ہائی اسکول، موضع: بنہا (نوادہ)، ہزاری باغ، جھارکھنڈ (825301)

چیئرمین: ابرار احمد　　سکریٹری: منہاج الاسلام فلاحی　　پرنسپل: محمد رستم

Posted on 20-21 October 2012
November 2012
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.10.2012

हिन्दी महिलाओं की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

SILVERLINE®
TOTAL REALTY SOLUTIONS SINCE 1947

INTERNATIONAL PROPERTY AWARDS
CNBC
2008
The World
★★★★★
BEST INTERNATIONAL PROPERTY FINDER

Software Facilities
Office
Homes
Apartments
Sites
Property Management
Facilities
Hospitality

What are you looking for?

ICREA FIABCI REALTOR NAR INDIA BRAI INDIA RICS

201, Barton Centre, 84 M.G.Road,
Bangalore - 560 001. Tel: 40828888 / 25592881

www.silverlinerealty.com

61 years in Real Estate